हिन्दुत्ववादी राजनीति का अभ्युदय एवं मतदाताओं का दृष्टिकोण: उत्तर राम जन्म भूमि आन्दोलन के संदर्भ में गोरखपुर जिले का अध्ययन

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ से
राजनीति विज्ञान विषय में पीएच०डी०
की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996

शोध पर्यवेक्षक

डॉ० सिद्धार्थ मुखर्जी
(सहायक आचार्य)
राजनीति विज्ञान विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोधकर्ता

प्रमोद कुमार पाण्डेय
नामांकन संख्या: 1188/15
राजनीति विज्ञान विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, लखनऊ

राजनीति विज्ञान विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
लखनऊ-226025
2021

उद्घोषणा

मैं प्रमोद कुमार पाण्डेय यह घोषणा करता हूँ कि 'मैने **''हिन्दुत्ववादी राजनीति का अभ्युदय एवं मतदाताओं का दृष्टिकोण : उत्तर राम जन्म भूमि आन्दोलन के संदर्भ में गोरखपुर जिले का अध्ययन''** विषय पर शोध कार्य **डॉ० सिद्धार्थ मुखर्जी,** सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) लखनऊ के निर्देशन में पूर्ण किया है। प्रस्तुत यह शोध प्रबन्ध पीएचडी० की उपाधि हेतु मेरा मौलिक शोध कार्य है। प्रस्तुत यह शोध–प्रबन्ध इससे पहले इस विश्वविद्यालय अथवा किसी अन्य विश्वविद्यालय में पीएच0डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है। मैं यह भी घोषणा करता कि यह शोध प्रबन्ध पूर्णतया साहित्यिक चोरी (Plagiarism) मुक्त है।

दिनांक ....

प्रमोद कुमार पाण्डेय
(शोध–छात्र)
नामांकन संख्या 1188 / 15
राजनीति विज्ञान विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडर
विश्वविद्यालय, लखनऊ

CERTIFICATE

This is to certify that the thesis titled **''हिन्दुत्ववादी राजनीति का अभ्युदय एवं मतदाताओं का दृष्टिकोणः उत्तर राम जन्म भूमि आन्दोलन के संदर्भ में गोरखपुर जिले का अध्ययन''** Submitted by **Mr. Pramod Kumar Pandey** is an original research work and has not been previously submitted in part or full for the award of any other degree or diploma to this or any other university

The thesis submitted to Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Lucknow satisfies all the requirements as stipulated in the *Doctor of Philosophy (Ph.D.) regulations-1999 as amended in 2013* and it is fit for submission and evaluation for the award of the degree of Doctor of Philosophy of the University.

Date:……………

Place: ……………

Supervisor

Head of the Department

आभार

प्रस्तुत शोध प्रबंध के लिए मैं अपने शोध पर्यवेक्षक **डॉ० सिद्धार्थ मुखर्जी,** सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ का सदैव ऋणी रहूंगा जिनके कुशल मार्गनिर्देशन में मैं अपने शोध कार्य को पूर्ण कर पाया। सर का विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार शोधकार्य के लिए बहुत उपयोगी रहा। हृदय से आभार व्यक्त करते हुए सर के प्रति में सदैव ऋणी रहूंगा।

राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष **प्रो० शशिकांत पांडेय** सर मुझे शोध प्रबंध पूर्ण करने के लिए सदा सहयोग एवं दिशानिर्देश प्रदान करते रहे, जिसके लिए मैं उनका विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूं। मेरे विभाग के आदरणीय **प्रो० रिपुसूदन सिंह, प्रो० सार्तिक बाघ, डॉ० प्रीतिचौधरी, मंजरी मैम** का आभारी रहूंगा जिन्होंने अपने सुझावों द्वारा उचित मार्गदर्शन दिया।

शोध अध्ययन के क्रम में, **डॉ0 शरद मणि त्रिपाठी** और बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के पुस्तकालय के समस्त कर्मचारीगण का विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ जिन के सहयोग के बिना शोध कार्य पूर्ण करने में कठिनाई होती। मैं इन सभी का सदैव आभारी रहूँगा।

श्रद्धेय माता–पिता को हृदय से प्रणाम एवं आभार जिन्होने मुझे अपनी पढ़ाई को जारी रखने के लिए सदैव प्रोत्साहित किया। राजनीति विज्ञान विभाग के समस्त कर्मचारीगण का आभारी रहूंगा। मेरे साथ के शोधार्थी गण विशेष रूप से दिनेश कुमार जी, मेहदी अली. संतोष कुमार, अवनीश गौतम जी का आभार जिन्होंने शोध कार्य में मेरा सहयोग किया।

प्रमोद कुमार पाण्डेय

अनुक्रमणिका

शपथ पत्र	*i*
प्रमाण पत्र	*ii*
आभार	*iii*
अनुक्रमणिका	*v-vi*
तालिका एवं ग्राफ सूची	*vii-vii*
शब्द संक्षेप सूची.	*ix*

अध्याय – प्रथम **1–10**

- परिचय
- राष्ट्र और राष्ट्रीयता पर पश्चिम की विचारधारा
- शोध उद्देश्य

अध्याय – द्वितीय **11–38**

- भारत में हिंदुत्व की राजनीति
- राष्ट्र और राष्ट्रीयता पर भारतीय विचारधारा
- हिंदुत्व की परिभाषा
- राष्ट्र और राष्ट्रीयता पर पश्चिम की विचारधारा

- भारत में हिंदुत्व की राजनीति एक सैद्धांतिक विश्लेषण
- राज्यों में समाज सुधार आंदोलन हिंदुत्व के जनक
- हिंदुत्व राजनीति की आर्थिक पृष्ठभूमि हिंदुत्व राजनीति की वैचारिक पृष्ठभूमि
- सांप्रदायिकता उपनिवेशवाद की देन
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना एक मील का पत्थर
- हिंदु की राजनीति 1947 से लेकर अब तक
- निष्कर्ष

अध्याय– तृतीय **39—57**

- उत्तर प्रदेश में हिंदुत्व की राजनीति
- उत्तर प्रदेश में हिंदुत्व की राजनीति सैद्धान्तिक विश्लेषण
- उत्तर प्रदेश में हिंदुत्व की राजनीति (1670 से 1920 तक का काल
- उत्तर प्रदेश मे धर्म सुधार आंदोलन 1860 से 1920 का काल
- 1920 से 1945 तक के काल में उत्तर प्रदेश में हिंदुत्ल की राजनीति
- उत्तर प्रदेश में हिंदुत्व की राजनीति 1946 से लेकर आज तक
- उत्तर प्रदेश में हिंदुत्व की राजनीति कुछ महान पुरुषों का योगदान

अध्याय–चतुर्थ **58—77**

- गोरखपुर में हिंदुत्व की राजनीति का उदय एक एतिहासिक विश्लेषण व उपस्थित संस्थानों का योगदान
- हिंदू ध्याचे बेहुरा, मुसलमान मसीत जोगी ध्यावे परम पद जहां देहरान मसीत
- स्वतन्त्रता के बाद गोरखपुर में हिंदुत्व का प्रसार गोरखपुर में उपस्थित व्यापारिक समूह
- सामाजिक समरसता का केंद्र गोरखनाथ मन्दिर

- अवैद्यनाथ जी महाराज व गोरखपुर में हिंदु
- योगी आदित्य नाथ जी महाराज एवं गोरखपुर में हिंदुत्व
- योगी आदित्यनाथ और भारतीय जनता पार्टी
- योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री और गोरखपुर
- गोरखपुर में स्थित हिंदुत्व की संस्थानों का समन्वय व कार्य प्रणाली
- उपसंहार

अध्याय पंचम् **78—124**

- हिंदुत्व की राजनीति एवं उसका क्षेत्रीय मतदाताओं पर प्रभाव
- विभिन्न मतदाताओं का साक्षात्कार
- निषाद समुदाय एवं गोरखपुर की राजनीति
- निषाद और हिंदुत्व
- गोरखपुर में हिंदुत्व की राजनीति और उसका क्षेत्रीय मतदाताओं पर प्रभाव

निष्कर्ष **125—129**

सन्दर्भ ग्रंथ सूची **130—132**

तालिका एवं ग्राफ सूची

- गोरखपुर में स्थित महाराणा प्रताप शिक्षण संस्थान का प्रभाव शहरी 100 परिवारों पर गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षण संस्थान का प्रभाव 100 ग्रामीण परिवार पर
- गोरखपुर शहरी क्षेत्र में 100 परिवारों पर सांस्कृतिक संगठन का प्रभाव
- गोरखपुर शहर के पुरुष व महिला पर प्रभाव
- गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवार पर सांस्कृतिक संगठन का प्रभाव
- गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र में महिला व पुरुष पर सांस्कृतिक संगठन का प्रभाव
- गोरखपुर में 100 शहरी परिवार पर राजनीतिक दल पर वरीयता में हिंदुत्व का प्रभाव का अध्ययन
- गोरखपुर में पुरुषों व महिलावों में दल की वरीयता में हिंदुत्व का प्रभाव (शहरी क्षेत्र में) गोरखपुर में ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर राजनीतिक दल वरीयता में हिंदुत्व का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्र में पुरुषों व महिलावों में दल की वरीयता में हिंदुत्व का प्रभाव
- गोरखपुर के शहरी क्षेत्र में 100 परिवारों पर हिन्दू या मुस्लिम का प्रभाव
- गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर हिन्दू या मुस्लिम का प्रभाव
- गोरखपुर शहर के 100 परिवारों पर प्रभाव
- ग्रामीण 100 परिवार पर प्रभाव
- हिंदुत्व के प्रचार का महिलावों व पुरुषों पर प्रभाव (शहरी क्षेत्र में) हिंदुत्व का प्रचार का महिलायों और पुरुषों पर प्रभाव (ग्रामीण क्षेत्र में)
- गोरखपुर के शहरी क्षेत्र पर 100 परिवारों पर प्रभाव गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर प्रभाव
- गोरखपुर शहर के 100 परिवारों पर विभिन्न पीठाधीश्वरों का प्रभाव
- गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर विभिन्न पीठाधीश्वरों का प्रभाव

- गोरखपुर के शहर क्षेत्र के 100 परिवारों का मत, राम मंदिर आंदोलन से जुड़ाव कारण मठ
- के प्रति झुकाव
- गोरखपुर ग्रामीण के 100 परिवारों राममंदिर आंदोलन जुड़ाव कारण मठ के प्रति झुकाव
- गोरखपुर शहरी के 100 परिवारों हिन्दू युवा वाहिनी प्रभाव गोरखपुर ग्रामीण में 100 परिवारों हिन्दू वाहिनी प्रभाव गोरखपुर शहरी के 100 निषाद परिवारों मठ के प्रति दृ ष्टिकोण गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र 100 निषाद परिवारों मठ के प्रति दृष्टिकोण गोरखपुर शहर क्षेत्र 100 परिवार प्रेक्षण
- गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र 100 परिवार प्रेक्षण
- गोरखपुर शहर 100 परिवारों नया दृष्टिकोण योगी मुख्य बनने बाद गोरखपुर ग्रामीण के 100 परिवारों योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री बनने बाद नया दृष्टिकोण
- गोरखपुर शहरी में 100 परिवार प्रभाव, विभिन्न नेतागण का गोरखपुर ग्रामीण के 100 परिवारों पर प्रभाव, विभिन्न नेतागण गोरखपुर शहरी क्षेत्र 100 परिवारों पर हिंदुत्व माध्यम विकास पर संतुष्टि गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र 100 परिवारों पर हिंदुत्व माध्यम विकास पर संतुष्टि

शब्द संक्षेप सूची

भाजपा	:	भारतीय जनता पार्टी
आर. एस. एस.	:	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
एच. एस. एस.	:	हिन्दू स्वयंसेवक संघ
बी. एच. पी.	:	विश्व हिन्दू परिषद
एच. यू. वी.	:	हिन्दू युवा वाहिनी
बी. एम. यू.	:	भारतीय मजदूर यूनियन
वी. के. ए.	:	बनवासी कल्याण आश्रम
यू.पी	:	उत्तर प्रदेश

अध्याय-प्रथम

परचिय

एतिहासिक काल से ही धर्म और राजनीति एक दूसरे से संबंधित रहे हैं प्रत्येक प्राचीन राजनीतिक सत्ता जिसका अस्तित्व मौजूद है, उसमे धर्म का भी अस्तित्व मौजूद है। हिंदुत्व की राजनीति मेंहिन्दू धर्म केंद्र में रहता है। हिंदुत्व शब्द या पद का प्रयोगविनायक दामोदर सावरकर ने 1923 में अपनी विचारधारा की रूप रेखा बनाने में किया। भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने 11 दिसम्बर 1995 को मनोहर जोशी के वाद में हिंदुत्व को जीवनका एक तरीका माना। भारतीय जनता पार्टी ने अपने अधिकारिक आदर्श में 1989 में इसे शामिल किया। विनायक दामोदर सावरकर को इसका प्रतिपादक माना जा सकता है। विनायक दामोदर सावरकर जो कि इटली के क्रांतिकारी मेजिनी के कार्यों और जीवन से प्रभावित थे, उन्होने 1904 में अभिनव भारत संस्था की स्थापना की। अपने समय में यह भी हिंदुत्व की राजनीति के लिए भारत की भूमिको उर्वर करने का कार्य किया।

"हिंदुत्व' शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है। संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से"हिंदुत्व' शब्द का विश्लेषण करते हैं।संस्कृत भाषा में कोई भी शब्द (जिसे संस्कृत भाषा में "पदम" कहा जाता है)एक" प्रकृति" और एक से अधिक' प्रत्यय" के योग से बनता है। "हिंनदुन्' मूल में एक "सुप" प्रत्यय के योग से "हिन्दू" बनता है और इसी 'हिन्दुन' मूल में एक "तद्धित" प्रत्यय के योग से" हिंदुत्व' बन जाता है।

हिंदूवाद के अंतर्गत हिन्दू धर्म जो भारत का प्राचीनतम धर्म है, कोकेंद्र में रखकर किया जाने वाला विचार विमर्श है। इसमें बहुत से संप्रदाय आते हैं और इन संप्रदायों में से किसी एक का पालन करने वाले हिन्दू हैं। जबकि हिंदुत्व एक राजनीतिक विचारधारा है जिसका प्रतिपादन 1924 विनायक दामोदर सवारकर ने अपनी पुस्तक हिंदुत्व में किया था। सावरकरके हिंदुत्व की परिभाषा के अनुसार–"हिन्दू वह है जो सिंधु नदी से समुद्र तक के भारत वर्ष को अपनी पितृ भूमि और पुण्य भूमि के रूप में मानता है। अतः इसका धर्म से कोई सीधा संबंध नहीं है। हिंदुत्व भारत में'हिन्दू राष्ट्रवाद' का प्रमुख 'कार्य' है। हिंदुत्व पदका निर्माण 19 वीं शताब्दी का है। पहली बार 1870 के दशक में वंकिम चंद्र चटर्जी के उपन्यास 'आनंदमठ' में इस शब्द का प्रयोग किया गया। 1890 में महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक और बंगाल में चंद्र नाथ बसु ने इस शब्द के प्रयोग का प्रचलन में लाने का श्रेय जाता है। सावरकर ने हिंदुत्व का प्रयोग अपनी विचारधारा की रूपरेखा

बनाने में किया। इसके बाद हिंदुत्व सामान्य शब्द या पद न रहकर एक विशिष्ट विचारधारा से संबंधित हो गया। सावरकर ने हिन्दू जीवन- पद्धति को अन्य जीवन पद्धतियों से अलग और विशिष्ट रूप में प्रस्तुत किया जिससे उन्हे हिंदुत्व विचारधारा के प्रवर्तक और सिद्धांतकार के रूप में मानाजाने लगा। उदारवादीयों के लिए वरीयता क्रम में हिंदूवाद पहले है और हिंदुत्व बाद में और हिन्दू राष्ट्रवादियों के लिए हिंदुत्व का स्थान प्रथम है इसके बाद हिंदूवाद। हिन्दूउदारवादी भारत के मुस्लिम शासन काल के प्रति सौम्य दृष्टिकोण रखते हैं जबकि अंगेजों के शासन काल के प्रति अपेक्षाकृत गंभीर दृष्टिकोण रखते हैं जबकि हिंदुत्व के इतिहासकार मुस्लिम शासन काल के प्रति अधिक गंभीर दृष्टिकोण रखते हैं अपेक्षाकृत अंग्रेजों के शासन काल के।

राष्ट्रीय स्तर पर हिंदुत्व की राजनीति का उदय 1925 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना सेएक संगठन के स्वरूप में उभरकर सामने आया। इसकी सामाजिक गतिविधिवों से राजनैतिक प्रभाव भी उत्पन्न हुआ। विनायक दामोदर सावरकर और हेडगेवार और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघऔर इसके प्रथम राजनीतिक स्वरूप भारतीय जनसंघ, 1980 से भारतीय जनता पार्टी इसे राजनीतिक स्तर पर आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है। हिंदुत्व की राजनीति भारतीय संविधान के अनुच्छेद 44 अर्थात"समान नागरिक संहिता " का समर्थन करता है।

राष्ट्र एक जनसमूह को कहते हैं, जिनकी एक निश्चित पहचान होती है, जो उन्हे राष्ट्र से जोड़ती है। यह जनसमूह साधारणतया समान भाषा ,धर्म, इतिहास,नैतिक आचार या मूल उदगम से होता है।राजृदीप्तों अर्थात 'राजृ' धातु से कर्म में ' ष्ट्र न' प्रत्यय लगाने से संस्कृत में राष्ट्र शब्द बनता है अर्थात विविध संसाधनों से सम्पन्न साँस्कृतिक पहचान वाला देश ही राष्ट्र कहलाता है। राष्ट्र, जीवंत, सार्वभौमिक, युगांतकारी और हर विविधतावों को समाहित करने की क्षमता रखने वाला एक दर्शन है। एक राष्ट्र बहुतसे राज्यों में बंटा हों सकता है तथा वे एक निर्धारित भौगोलिक क्षेत्र में रहते हैं, जिसे राष्ट्र कहा जाता है।

राज्य अर्थात स्टेट शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम इटली के विद्वान मैकियावली द्वारा किया गया था। अपनी कृति' द प्रिंस ' में 1531 में उन्होने राज्य शब्द का प्रयोग किया। इससे पूर्व राजनीतिक समुदाय के लिए पोलिश, रेस पब्लिका, सिविटास, रेगनम, आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता था। इससे यह संकेत मिलता है कि राज्य शब्द के पूर्व भी राज्य का अस्तित्व था। राज्य अपने स्वरूप में राजनीतिक तथा राष्ट्र अपने स्वरूप में भावनात्मक होता है। राज्य के निर्माण आधार में कानून है, राष्ट्र के निर्माण आधार में भावनाए

होती हैं । राज्य बाध्य करता है , राष्ट्र माँग करता है । राज्य के लिए संप्रभुता एक अनिवार्य तत्व है, कोई राष्ट्र परतंत्र भी हो सकता है और स्वतंत्र भी । राज्य अपने स्वरूप से राजनीतिक तथा राष्ट्र का स्वरूप लगभग आध्यात्मिक होता है । राज्य के तत्व सुनिश्चित होते हैं (जनसंख्या, निश्चित भू - भाग , सरकार व संप्रभुता) । राष्ट्र के तत्व होते हैं , परंतु सुनिश्चित नहीं । राज्य, राष्ट्र से वृहद हो सकता है (प्रायः आज़ के राज्य बहुराष्ट्रीय हैं)और लघु भी । राज्य मुख्यतया राजनीतिक होता है, केवल संयोगवश साँस्कृतिक होता है जबकि राष्ट्र मुख्यतया साँस्कृतिक होता है केवल संयोगवश राजनीतिक ।

भारत वर्ष प्राचीन काल से ही विविध धर्मों का प्रांगण रहा है । प्राचीन भारत में ही हिन्दू , जैन , और बौद्ध धर्मों का उदय हुआ , परंतु इन सभी धर्मों और संस्कृतियों का पारस्परिक सम्मिश्रण और प्रभाव, प्रति प्रभाव इस प्रकार हुआ कि लोग भले ही विभिन्न भाषाए बोलते हैं , विभिन्न धर्मों को मानते हैं , विभिन्न सामाजिक रीति रिवाजों पर चले हों पर समूचे राष्ट्र में सभी की एक सामान्य जीवन पद्धति है । भारत वर्ष की एकता को विदेशियों ने भी स्वीकारा है । वे सर्वप्रथम सिंधु तटवासियों के सम्पर्क में आए और इसीलिए पूरे राष्ट्र को ही उन्होने सिंधु या इंडस नाम दिया ।ईरानी भाषा में हिंद शब्द संस्कृत के सिंधु से निकला है ।इस शब्द का प्रयोग छठी सदी ई. पू. के ईरानी अभिलेखों में सिंधु क्षेत्रों के लिए किया गया है । काल क्रम केसाथ हमारा देश इंडिया के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

राष्ट्र व राष्ट्रीयता पर भारतीय विचारधारा :

राष्ट्र की अवधारणा भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही रही है । प्राचीन भारतीय ऋषि महर्षियों ने इसीलिए एक राज्य विशेष की सीमा से परे पूरे जगत के कल्याण का दर्शन अंगीकृत कर रखा था ।राष्ट्र में कुछ ऐसे तत्व पाए जाते हैं जिन्हे सांझा करने के कारण ही वे राष्ट्र कहलाते हैं । जैसे साझा मूल, नस्ल, वंश , भाषा ,धर्म , इतिहास, संस्कृति आदि । इन तत्वों के साथ ही साथ सांझा भूत,जाति और धरोहर भी सांझा करते हैं । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एम. जी. वैद्य के अनुसार राज्य, एक राजकीय व्यवस्था है जो कानून के बल पर चलती है और कानून को प्रभावी बनाने के लिए उसके पीछे दंड देने की शक्ति रहतीहै । जबकि राष्ट्र यानि लोग़ होते हैं , लोगों का राष्ट्र बनने के लिए तीन प्रधान शर्तें हैं :

पहला, जिस भूमि पर लोग रहते हैं, उस भूमि के प्रति उनकी भावना। उनको अपनी भूमि माता के समान पवित्र और वंदनीय लगनी चाहिए। वह मातृ भूमि होनी चाहिए ।

दूसरी शर्त के रूप में एक इतिहास होना चाहिए। इतिहास की घटनाए जैसे आनंदित करने वाली वैसे ही दुखदायी भी होती हैं, ये घटनाए विजय की होती हैं तो पराजय की भी होती हैं । जिनको ये अपने इतिहास की घटना लगती है, उनका राष्ट्र होता है।

तीसरी और सबसे प्रमुख शर्त यह है कि इनका मूल्यअवधारणा यानि वैल्यू सिस्टम समान होता है और इस मूल्यअवधारणा से जिनके अच्छे या बुरे ठहराने के मापदंड समान होतेहैं, उनका राष्ट्र बनता है।यह मूल्य व्यवस्था ही संस्कृति होती है। ये जो लोग हैं, उनका नाम हिन्दू है, इसलिये यह हिन्दू राष्ट्र है।

संघ के नाम में ही राष्ट्रीय शब्द है वह केवल राष्ट्र की चिंता करता है । एक राष्ट्र के लिए एक ही धर्म होना अनिवार्य नहीं, एक ही भाषा होना आवश्यक नहीं या एक ही वंश या नस्ल का होना आवश्यक नहीं है।संघ आगे कहता है, हिन्दू धर्म नहीं, अनेक धर्मों का संघ है। धर्म का अंग्रेजी में रिलिजन या मज़हब ऐसा अनुवाद करने के कारण ही अनेक गलत धरनाए बनी हुई हैं। हिन्दू मज़हब नहीं वह एक मूल्य व्यवस्था का वाचक है, अर्थात यह संस्कृति का बोधक है। इस व्यवस्था में विविधता, फ़िर वह विविधता ईश्वर के नाम की हो, उसके उपासना के आकार की हो या उसके लिए बनाये गए पूजा स्थल या प्रार्थना स्थल की हो,का सम्मान है। यही हिन्दू संस्कृति है। इसी का नाम हिंदुत्व है।

विनायक दामोदर सावरकर के अनुसार, राष्ट्र या प्रादेशिक एकता हिंदुत्व का पहला तत्व है ।हिन्दू वह है जिसके मन में सिंधु से ब्रह्मपुत्र तक और हिमालय से कन्याकुमारी तक के समस्त भौगोलिकप्रदेश के प्रति अनुराग है। सावरकर ने जाति या रक्त संबंधको हिंदुत्व का दूसरा तत्व बताया है।सावरकर के शब्दों में, हिन्दू वह है जिसकी धमनियों में सप्त सैन्धव क्षेत्र की जाति का रक्त बहता है ।सावरकर ने हिंदुत्व का तीसरा लक्षण संस्कृति को माना है । सावरकर के शब्दों में, जिस व्यक्ति को हिन्दू सभ्यता और संस्कृति पर गर्व है, वह हिन्दू है।

राष्ट्र और राष्ट्रीयता पर पश्चिम की विचारधारा

बेंडक्ट एंडेर्सन के अनुसार– राष्ट्र, राज्य की मूलतः सांस्कृतिक क्रिया है। एंडेर्सोन ने अपनी पुस्तक “इमेजिंग पॉलिटिकल कम्यूनिटी“ में राज्य को सीमित और संप्रभु बताया है। राष्ट्र के सभी आवश्यक तत्वजब एक राज्य की सीमा में निहित हो जाती है तो राष्ट्र राज्य का निर्माण हो जाता है। एंडेर्सोन महोदय के अनुसार इसके दो पक्ष हैं, पहला राजनीतिक पक्ष, इसके अनुसार राष्ट्र, राज्य दोनों समानांतर है ।[1]

दूसरा पक्ष, भावनात्मक पक्ष, जिसके अनुसार लोगों की सांझा संस्कृति, सांझा इतिहास, सांझा मूल्य उन्हे भावनात्मक रूप से जोड़े रखता है। यह जब संप्रभु, निश्चित सीमा क्षेत्र में आ जाता है, तो राज्य राष्ट्र का निर्माण हो जाता हैं। राज्य राष्ट्र आधुनिक अवधारणा है।[2]

राष्ट्र व राष्ट्रीयता पर अर्नेस्ट आन्द्रे गेल्लेनेर की पुस्तक “ नेशन एंड नेशनलिस्म जिसका प्रकाशन 1983 में हुआ, के अनुसार राष्ट्रीयता प्राथमिक रूप से एक राजनीतिक सिद्धांत है जो कहता है कि राजनीति को राष्ट्रीय इकाई के अनुकूल होना चाहिए। गेल्लनेर महोदय कहते हैं कि राष्ट्रवाद केवल सामाजिक आवश्यकता के रूप में केवल आधुनिक विश्व में लागू होता है। प्राचीन समय में शासक वर्ग साँस्कृतिक एकरूपता को बहुत कम प्रोत्साहन देते थे। लेकिन आज़ के समय में यह कार्य काफ़ी तकनीकी भरा हुआ व जटिल परंतु महत्वपूर्ण हो गया है।[3]

एंडरी हीवूड ने अपनी पुस्तक पोलटिक्स (1997) में व्यक्त किया कि राष्ट्र को परिभाषित करने में कठिनाई का अनुभव व्यक्तिनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ दोनों के मिश्रण के रूप में अनुभव करते हैं। वैकल्पिक रूप में, लोगों का समूह जो समान भाषा बोलते हैं, समान धर्म व अतीत उन्हे बंधन में रखता है। वास्तव में वैकल्पिक कारण से राष्ट्र को परिभाषित करना असंभव है ।[4]

शोध के प्रश्न,

1. 90 के दशक में, गोरखपुर में, हिंदुत्व की राजनीति किस विशेष लक्षण में परिलक्षित होती है?

---

[1] Benedict, Anderson (1990). Imagined Communities, reflections on the origin and spread of nationalism: Verso, London

[2] ibid.

[3] Ernest, Gellner (1983).Nation and Nationalism : Oxford, Blackwell

[4] Andre , Heywood (2012). Politics: Palgrave Foundation

2. गोरखपुर में हिंदुत्व की राजनीति के लिए कौन से सामाजिक प्रेरक कार्य कर रहे हैं?
3. राम जन्मभूमि आन्दोलन के लिए उत्प्रेरक तत्व क्या थे ?
4. मठ, हिंदुत्व का राजनीतिकरण करता है, कैसे?
5. गोरखपुर की जनसांखिकीय संरचना, हिन्दुत्व की राजनीति की पक्षधर है, कैसे ?

शोध उद्देश्य:

1. गोरखपुर में उपस्थित हिंदुत्व राजनीति की पृष्ठभूमि की पहचान करना।
2. किस प्रकार उपस्थित पृष्ठभूमि, हिंदुत्व राजनीति का गढ़ गोरखपुर को बना दिया, इसकी ख़ोज करना।
3. 1991 के अयोध्या आंदोलन के प्रभाव के बाद गोरखपुर में "हिंदुत्व राजनीति' के तत्व कैसे इसे अजेय बना दिये, इसकी ख़ोज करना।
4. हिंदुत्व राजनीति का क्षेत्र में विकास से किस प्रकार सामंजस्य बैठाया गया, इसकी ख़ोज करना।
5. गोरखपुर का जनघनत्व और उसका गोरखपुर में हिंदुत्व पर प्रभाव
6. हिंदुत्व की राजनीति, और उसका जाति से संबंध का अध्ययन

शोध परिकल्पना :

" हिंदुत्व की राजनीति का अभ्युदय और मतदाताओ का दृष्टिकोण : उत्तर रामजन्मभूमि आन्दोलन के सन्दर्भ में गोरखपुर ज़िले का अध्ययन " विषय पर शोध हेतु शोध परिकल्पना

1. गोरखपुर में हिन्दुत्व की राजनीतिके लिए प्रबल विचारधारा परिलक्षित होती है।
2. जनसांखिकीय संरचना हिन्दुत्व की राजनीति के लिए पक्षधर है।
3. महिला मतदाता, धार्मिक प्रभाव में जल्दी आ जाती हैं।

शोध पद्धति :

हिस्टॉरिकल एनालिसिस आर्किवल रिसर्च ओरल हिस्टरी व रैनडम संपलिंग मेथड व साक्षात्कार के माध्यम से शोध किया। 100 ग्रामीण व 100 शहरी क्षेत्रों में जाकर विभिन्न परिस्थिति में उनके प्रेक्षण का तालिका माध्यम से अध्ययन किया।

अध्याय योजना :

अपने पहले अध्याय " भारत में हिंदुत्व की राजनीति" के अंतर्गत राष्ट्र राज्य की अवधारणा पर भारतीय मनीषियों के विचार के साथ ही साथ पश्चिमी विचारकों की अवधारणा का अध्ययन तथा विषय पर उपलब्ध साहित्य की समीक्षा करते हुए एक सैद्धांतिक आधार बनाने का प्रयत्न किया। सैद्धांतिक विश्लेषण के बाद भारत में हिंदुत्व की राजनीति के विकास को हिंदूवाद को एक विचारधारा के रूप में व हिंदुत्व को आधुनिक समय के अनुरूप उसके अनुप्रयोग 1923 से विनायक दामोदर सावरकर के गढ़ने से उत्पन्न शब्द के रूप में अध्ययन किया। अध्ययन की सुविधा हेतु भारत में हिंदुत्व की राजनीति के उदय को कालक्रम के अनुसार मध्य युग में, पुनर्जागरण युग, औपनिवेशिक भारत के काल में और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के काल में बाटते हुए अध्ययन किया। अध्ययन दौरान मध्य युग में मुस्लिम आक्रमणकारियों द्वारा भारत में विजय अभियान उनका सफल क्रियान्वयन और इसके परिणामस्वरूप हिन्दू जनता पर शोषण, अनेकों प्रकार के करों की वसूली, जबरन धर्मांतरण को बाध्य किया जाना आदि घटनाओ के फलस्वरूप हिंदूवादी संगठनो ने आर्य समाज, प्रार्थना समाज जैसे संगठनो की स्थापना हुई जिससे समाज में पुनः चेतना आयी। स्वामी दयानंद सरस्वती के आर्य समाज का नारा ही था " वेदों की ओर लौटो " अर्थात अपने वेदों में लिखित गौरवपूर्ण इतिहास को जानो। उससे पुनः अपने अन्दर चेतना जगावों। इसी लिए इस काल को ही पुनर्जागरण काल कहते हैं। इसके बाद औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश सरकार द्वारा विभिन्न तरह के शोषण की प्रक्रिया चलती है इस काल में 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की स्थापना होती है परंतु यह भी हिन्दू धर्मावलंबियों हेतु कुछ नहीं करती है। अतः हिन्दू महासभा जैसे संगठनो का उदय होता है। हिंदूवादी संगठनो **में**ई स्फूर्ति 1925 में 27 सितंबर को विजयदशमी के दिन आ जाती है जब चार हिन्दू महासभा के नेता बी. एस. मुंज़ेगणेश सावरकर, एल. वी. परांजपे और बी. बी. ठोलकेर के उपस्थिति में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना हुई। नौ दशक पहले 1925 से शुरू हुई राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की यात्रा को देखे तो स्पष्ट है कि इस दौर में कई तरह के हिंदूवादी समाज और समितिया बनायी गई, उनका विस्तार हुआ और पुनः अपनी पहचान खो दी। परंतु राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अपनी राह से नही भटका। संघ हमेशा से बिना किसी भय के यह घोषित करता रहा है कि भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाना उसका ध्येय है। ऐसा हिन्दू राष्ट्र जिसमे हिन्दू समाज की जातिया अपनी अपनी नियत जगह पर बनी रहे पर राजनीतिक फ़ैसले लेते समय ये विभाजन अप्रासंगिक हो जाय।

संघ वर्णाश्रम धर्म व्यवस्था में बिना किसी हस्तक्षेप के संघ सभी हिन्दू जातियोंको समरसता की छतरी के नीचे ले आना चाहता है पर इसके लिए उसे बार बार हिन्दू समाज को बताना पड़ता है कि आप अपने चारों तरफ़ से दुश्मनों से घिरे हुए हैं । इसके लिए कई बार संघ को नये नये दुश्मन गढ़ने पड़ते हैं । ताकि इन दुश्मनों का भय दिखाकर हिन्दू समाज को एकजुटकिया जा सके । परंतु दुश्मन गढ़कर हिन्दुओ को एकतित्र करना संघ कि व्यापक रणनीति का एक हिस्सा मात्र है , यह पूरी रणनीति नहीं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भी स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही अपनी पूर्ण गतिविधियों को विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से प्रारंभ कर पाया उसके बाद पुनः विभिन्न राज्यों में हिंदुत्ववादी संस्थावों का उदय जैसे महाराष्ट्र में शिव सेना, उत्तर प्रदेश में हिन्दू युवा वाहिनी आदि का उदय होता है।

अपने दूसरे अध्याय उत्तर प्रदेश में हिन्दुत्व की राजनीति में उत्तर प्रदेश में हिन्दुत्व की रणनीति के लिए उपलब्ध साहित्य की समीक्षा करते हुए एक सैद्धांतिक आधार प्राप्त करते हुए हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की उत्तर प्रदेश के अन्दर की रणनीतियों व क्रियान्वयन का अध्ययन करते हुए उत्तर प्रदेश में स्थित विभिन्न तीर्थस्थलों जैसे प्रयागराज, अयोध्या , काशी, मथुरा का हिन्दू धर्मावलंबियों पर प्रभाव का अध्ययन व विभिन्न हिंदूवादी संस्थावों का आपस में समन्वयन, उत्तर प्रदेश में स्थित हिंदुत्ववादी संस्थावों के सामाजिक सम्पर्क के साधनों जैसे विद्यालय, महाविद्यालय, विभिन्न व्यापारिक संस्थाए, सांस्कृतिक संगठन संस्कार भारती आदि की उपस्थिति व उसके प्रभाव का अध्ययन किया अयोध्या के रामजन्मभूमि आन्दोलन का प्रभाव का विस्तृत अध्ययन उत्तर प्रदेश के संदर्भ में करते हुए पंडित मदन मोहन मालवीय, नाना जी देशमुख , स्वर्गीय महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज व ब्रह्मलीन महंत अवैद्यनाथ जी महाराज के योगदान को तथा दीन दयाल उपाध्याय के समन्वित मानवतावाद के सिद्धांत का अध्ययन करते हुए विभिन्न हिन्दुत्व विरोधी गतिविधिवों से संघर्ष व उसमे सफलता की रणनीतियों का वर्णन किया गया है।

तीसरा अध्याय गोरखपुर में हिंदुत्व की राजनीतिका उदय : एक एतिहासिक विश्लेषण व उपस्थित संस्थानों का योगदान के अंतर्गत गोरखपुर के संक्षिप्त इतिहास का वर्णन करते हुए विभिन्न ग्रंथों को स्त्रोत के रूप में प्रयोग करते हुए गोरखपुर में हिंदुत्व की एतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन किया। गोरखपुर के एतिहास के विभिन्न कालखंडों जैसे मुस्लिम शासन के समय गोरखपुर की प्रस्थिति पुनः औपनिवेशिक शासन के दौरान 1829 में गोरखपुर को मण्डल मुख्यालय की प्रस्थिति प्राप्त हो गई। 1844 ई में गोरखपुर में

चर्च मिशनरी सोसाइटी द्वारा एक स्कूल की स्थापना की गई जिसने शिक्षण के साथ ही साथ धर्म का प्रचार प्रसार भी शुरू कर दिया था। गोरखपुर में नाथ संप्रदाय की उपस्थिति एवं उसके संक्षिप्त इतिहास व 1920 के काल से नाथ संप्रदाय के इस पीठ ने राजनीतिक महत्वाकांक्षाकी पूर्ति हेतु अपने स्वरूप, में परिवर्तन का अध्ययन किया। ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा स्थापित विभिन्न शिक्षण संस्थायों का कार्य करने का ढंग, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के गोरखपुर में कार्य करने के तरीके मंदिर से किस प्रकार सामंजस्य स्थापित करते है का अध्ययन करते हुए नानाजी देशमुख के काल से गोरखपुर में होलिकोत्सव के पर्व पर निकाले जाने वाले भगवान नरसिंह यात्रा और उसके द्वारा उस समय चली आ रही कुप्रथा के समापन का अध्ययन व ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज द्वारा राजनीति में पदार्पण करने व तत्कालीन हिंदुत्व की राजनीति में विशेष स्थान बनाने का वर्णन है। इनके बाद इनके धार्मिक और राजनीतिक उत्तराधिकारी ब्रह्मलीन महंत अवैद्यनाथ जी महाराज ने इनके धार्मिक और राजनीतिक परंपरा को आगे बढ़ाया। उन्होने दिग्विजयनाथ जी महाराज के द्वारा स्थापित संस्थावों का कुशल प्रबंधन किया। इनके राजनीतिक उत्तराधिकारी व धार्मिक उत्तराधिकारी महंत आदित्यनाथ ने मठ को प्रदेश की राजनीति के सर्वोच्च शिखर पर पहुचा दिया। गोरखपुर के सांस्कृतिक क्रियाकलाप में संस्कार भारती का योगदान व आदित्यनाथ जी महाराज स्थापित हिन्दू युवा वाहिनी का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है।

चौथे अध्याय में धर्म की राजनीति और उसका क्षेत्रीय मतदाता पर प्रभाव के अंतर्गत क्षेत्र विशेष में मतदाताओं को धर्म विशेष के प्रति हिंदुत्व के प्रति झुकाव का प्रभाव का अध्ययन करने के लिए गोरखपुर में स्थित नाथ संप्रदाय की पीठ को केंद्र में रखकर किए गए अध्ययन से प्राप्त प्रेक्षण के अनुसार गोरखपुर शहर में नागरिकों में पीठ के प्रति गहरी आस्था है पीठ द्वारा लगातार चलती सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियां नागरिकों के मन मस्तिष्क में सदैव जीवंत रहती हैं व पीठ द्वारा किए गए जन कल्याणकारी उपाय जनमानस के प्रति और अधिक निष्ठावान बनाता है| आम नागरिकों के सुख दुख में पीठ द्वारा सक्रिय रूप से भाग लेना अन्य राजनीतिक संगठनों से अलग पीठ की गतिविधियों को बना देता है,जहां आम राजनीतिक दल मात्र चुनाव के समय जनता के बीच अपने को प्रस्तुत करते हैं वही हिंदुत्ववादी संगठनों द्वारा चलाया जाने वाला कार्यक्रम मात्र चुनाव के समय न चलकर अपितु पर चलता रहता है जो उन्हें अवसरवादी जैसे शब्दों से दूर रखता है |आम नागरिकों के बीच का अध्ययन करने के लिए इस अध्याय मैं हिस्टोरिकल एनालिसिस रिसर्च आर्काइवल ओरल हिस्ट्री की पद्धति का प्रयोग किया गया है |आम मतदाताओं के बीच जाकर प्रेक्षण लेने के

लिए रेंडम सेंपलिंग मेथड का प्रयोग किया गया है साथ ही साथ समूह साक्षात्कार का भी प्रयोग किया गया है| इस तरह शोध की परिणामों को प्राप्त किया जा सका | इस तरह निम्नलिखित परिणामों को प्राप्त किया जा सका |

गोरखपुर हिंदुत्व की राजनीति के लिए हमेशा उर्वर रही हैएवं गोरखपुर में जमीनी स्तर पर हिंदुत्ववादी संगठनो की उपस्थिति हिंदुत्व की राजनीति के लिए सहायक है व गोरखपुर में जनसांखिकीय संरचना हिंदुत्व की राजनीति की पक्षधर है तथा महिला मतदाता धार्मिक प्रभाव में जल्दी आ जाती हैं इन शोध परिकल्पना के साथ ही एतिहासिक विश्लेषण व मतदाता के समूह साक्षात्कार की विधि इस शोध में काफी सहायक रही।

इस तरह हम अध्यन से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि हिंदुत्व का इतिहास मानव सभ्यता के विकास जितना ही पुराना है। हिंदुत्व में मानव सभ्यता के उच्चतमआदर्शो व मूल्यों का समावेश है और प्रकृति पूजा इसके मूल में है।

सन्दर्भ

1-Anderson Benedict, (1990), Imagined Communities, Reflections on the origin and spread of nationalism,(London, Verso)

2-Ernest Gellner,(1983) Nations and Nationalism,(Oxford, Blackwell)

3-Heywood, Andree,(2012) (Palgrave Foundation)

अध्याय-द्वितीय

भारत में हिन्दुत्व की राजनीति

धर्म का राजनीतिक प्रयोग मानव सभ्यता के उद्भव काल से ही होता रहा है। विश्व के सभी देश ,चाहे वे जितना भी धर्मनिरपेक्षता का आडंबर करते हों, परंतु किसी न किसी धर्म के सापेक्ष उनकी सत्ता चलती रहती है। भारत वर्ष भी इसका अपवाद नहीं है। भारत में हिन्दू धर्म, जो विश्व का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है इसी के सापेक्ष यहाँ की सत्ता चलती रहती है। भारत में हिंदुत्व की राजनीति का अभ्युदय प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद से ही तत्कालीन भारत में उपस्थित राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों में प्रारंभ हों चुकाथा । 1870 से लेकर 1920 तक के समय में विभिन्न हिन्दू समाज सुधारक आंदोलनों ने जन्म ले लिया था ।इसीलिए 1870 से 1920 तक के काल में हिन्दू समाज के विभिन्न संघटनों काअभ्युदय हुआ जिसका कारण ब्रिटिश उपनिवेशों में हिन्दू धर्मावलंबियों का शोषण, ईसाईकरण, व मुस्लिम धर्म का प्रसार आदि था इन घटनाओ के प्रतिक्रिया स्वरूप हिन्दुवों को स्वाभिमानी बनाने हेतु आर्य समाज 1875 में हिन्दू महासभा1915 में व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 1925 में हों चुकी थी। छात्रों के संघटन के रूप में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना 1940 में हुई थी।

इसके बाद के वर्षों में अति हिन्दू राष्ट्रवादी, सांप्रदायिक और लड़ाका संगठन, भारतीय जन संघ 1951 में, वनवासी कल्याण आश्रम 1952 में, भारतीय मजदूर संघ 1955 में विश्व हिन्दू परिषद 1964 में,शिव सेना 1966 में, दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना 1972 में, सेवा भारती 1979 में, भारतीय जनता पार्टी 1980 , बजरंग दल 1984, धर्म संसद 1984 , दुर्गावाहिनी 1990, स्वदेशी जागरण मंच 1991 इत्यादि की स्थापना हुई। इन सभी संस्थानों ने संगठनों ने देश के अलग अलग भागों में तथा आगे चलकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ मिलकर या अलग रहते हुए विभिन्न क्रिया कलापों के द्वारा तत्कालीन समाज में हिंदुत्व को भारतीय राजनीति का एक महत्वपूर्ण तत्व बना दिया।

हिंदुत्व की राजनीति याकिसी भी प्रकार के धर्म को केंद्र में रखकर की जाने वाली राजनीतिक विचारधारा में तीन तत्व या चरण होते हैं और उनमे एक तारतम्य होता है। इस क्रम में सबसे पहला चरण इस विश्वास का है कि एक ही धर्म को मानने वाले के सांसारिक हित यानि राजनीतिक,आर्थिक, सामाजिक,और

साँस्कृतिक हित भी एक जैसे होते हैं। दूसरा तत्व यह विश्वास है कि भारत जैसे बहुभाषीसमाज में एक धर्म के अनुयायियों के सांसारिक हित, सामाजिक,साँस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक हित अन्य किसी भी धर्म के अनुयायियों के सांसारिक हितों से भिंन्न है। हिंदुत्व की राजनीतिक विचारधारा का तीसरा चरण यह विश्वास तथा माना जाता हैं कि विभिन्न धर्मों के अनुयायियों या समुदायों के हित एक दूसरे के विरोधी हैं।

राष्ट्र और राष्ट्रीयता पर भारतीय विचारधारा

राष्ट्र एक जनसमूह को कहते हैं, जिनकी एक निश्चित पहचान होती है, जो उन्हे राष्ट्र से जोड़ती है। यह जनसमूह साधारणतया समान भाषा ,धर्म, इतिहास,नैतिक आचार या मूल उदगम से होता है।

राजृदीप्तों अर्थात 'राजृ' धातु से कर्म में ' ष्ट्र न' प्रत्यय लगाने से संस्कृत में राष्ट्र शब्द बनता है अर्थात विविध संसाधनों से सम्पन्न साँस्कृतिक पहचान वाला देश ही राष्ट्र कहलाता है। राष्ट्र , जीवंत, सार्वभौमिक , युगांतकारी और हर विविधतावों को समाहित करने की क्षमता रखने वाला एक दर्शन है । एक राष्ट्र बहुत से राज्यों में बंटा हों सकता है तथा वे एक निर्धारित भौगोलिक क्षेत्र में रहते हैं, जिसे राष्ट्र कहा जाता है।

राज्य अर्थात स्टेट शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम इटली के विद्वान मैकियावली द्वारा किया गया था। अपनी कृति' द प्रिंस ' में 1531 में उन्होने राज्य शब्द का प्रयोग किया। इससे पूर्व राजनीतिक समुदाय के लिए पोलिश , रेस पब्लिका , सिविटास , रेगनम , आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता था। इससे यह संकेत मिलता है कि राज्य शब्द के पूर्व भी राज्य का अस्तित्व था। राज्य अपने स्वरूप में राजनीतिक तथा राष्ट्र अपने स्वरूप में भावनात्मक होता है। राज्य के निर्माण आधार में कानून है , राष्ट्र के निर्माण आधार में भावनाए होती हैं । राज्य बाध्य करता है , राष्ट्र माँग करता है। राज्य के लिए संप्रभुता एक अनिवार्य तत्व है, कोई राष्ट्र परतंत्र भी हो सकता है और स्वतंत्र भी। राज्य अपने स्वरूप से राजनीतिक तथा राष्ट्र का स्वरूप लगभग आध्यात्मिक होता है। राज्य के तत्व सुनिश्चित होते हैं (जनसंख्या, निश्चित भू - भाग , सरकार व संप्रभुता)। राष्ट्र के तत्व होते हैं, परंतु सुनिश्चित नहीं। राज्य, राष्ट्र से वृहद हो सकता है (प्रायः आज़ के राज्य बहुराष्ट्रीय हैं)और लघु भी। राज्य मुख्यतया राजनीतिक होता है, केवल संयोगवश साँस्कृतिक होता है जबकि राष्ट्र मुख्यतया साँस्कृतिक होता है केवल संयोगवश राजनीतिक।

भारत वर्ष प्राचीन काल से ही विविध धर्मों का प्रांगण रहा है। प्राचीन भारत में ही हिन्दू, जैन , और बौद्ध धर्मों का उदय हुआ , परंतु इन सभी धर्मों और संस्कृतियों का पारस्परिक सम्मिश्रा और प्रभाव , प्रति प्रभाव इस प्रकार हुआ कि लोग भले ही विभिन्न भाषाए बोलते हैं , विभिन्न धर्मों को मानते हैं , विभिन्न सामाजिक रीति रिवाजों पर चले हों पर समूचे राष्ट्र में सभी की एक सामान्य जीवन पद्धति है। भारत वर्ष की एकता को विदेशियों ने भी स्वीकारा है। वे सर्वप्रथम सिंधु तटवासियों के सम्पर्क में आए और इसीलिए पूरे राष्ट्र को ही उन्होने सिंधु या इंडस नाम दिया। ईरानी भाषा में हिंद शब्द संस्कृत के सिंधु से निकला है।इस शब्द का प्रयोग छठी सदी ई. पू. के ईरानी अभिलेखों में सिंधु क्षेत्रों के लिए किया गया है। काल क्रम के साथ हमारा देश इंडिया के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

राष्ट्र की अवधारणा भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही रही है। प्राचीन भारतीय ऋषि महर्षियों ने इसीलिए एक राज्य विशेष की सीमा से परे पूरे जगत के कल्याण का दर्शन अंगीकृत कर रखा था।राष्ट्र मेंकुछ ऐसे तत्व पाए जाते हैं जिन्हे सांझा करने के कारण ही वे राष्ट्र कहलाते हैं। जैसे साझा मूल, नस्ल, वंश , भाषा ,धर्म , इतिहास, संस्कृति आदि। इन तत्वों के साथ ही साथ सांझा भूत,जाति और धरोहर भी सांझा करते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एम. जी. वैद्य के अनुसार राज्य, एक राजकीय व्यवस्था है जो कानून के बल पर चलती है और कानून को प्रभावी बनाने के लिए उसके पीछे दंड देने की शक्ति रहतीहै। जबकि राष्ट्र यानि लोग़ होते हैं , लोगों का राष्ट्र बनने के लिए तीन प्रधान शर्ते हैं :

पहला, जिस भूमि पर लोग रहते हैं, उस भूमि के प्रति उनकी भावना। उनको अपनी भूमि माता के समान पवित्र और वंदनीय लगनी चाहिए। वह मातृ भूमि होनी चाहिए।

दूसरी शर्त के रूप में एक इतिहास होना चाहिए। इतिहास की घटनाए जैसे आनंदित करने वालीवैसे ही दुखदायी भी होती हैं, ये घटनाए विजय की होती हैं तो पराजय की भी होती हैं । जिनको ये अपने इतिहास की घटना लगती है , उनका राष्ट्र होता है।

तीसरी और सबसे प्रमुख शर्त यह है कि इनका मूल्यअवधारणा यानि वैल्यू सिस्टम समान होता है, और इस मूल्यअवधारणा से जिनके अच्छे या बुरे ठहराने के मापदंड समान होते हैं, उनका राष्ट्र बनता है।यह मूल्य व्यवस्था ही संस्कृति होती है। ये जो लोग हैं, उनका नाम हिन्दू है, इसलिये यह हिन्दू राष्ट्र है।

संघ के नाम में ही राष्ट्रीय शब्द है वह केवल राष्ट्र की चिंता करता है । एक रष्ट्र के लिए एक ही धर्म होना अनिवार्य नहीं , एक ही भाषा होना आवश्यक नहीं या एक ही वंश या नस्ल का होना आवश्यक नहीं है ।संघ आगे कहता है, हिन्दू धर्म नहीं, अनेक धर्मों का संघ है । धर्म का अंग्रेजी में रिलिजन या मज़हब ऐसा अनुवाद करने के कारण ही अनेक गलत धरनाए बनी हुई हैं। हिन्दू मज़हब नहीं वह एक मूल्य व्यवस्था का वाचक है , अर्थात यह संस्कृति का बोधक है । इस व्यवस्था में विविधता , फ़िर वह विविधता ईश्वर के नाम की हो , उसके उपासना के आकार की हो या उसके लिए बनाये गए पूजा स्थल या प्रार्थना स्थल की हो ,का सम्मान है । यही हिन्दू संस्कृति है । इसी का नाम हिंदुत्व है ।

विनायक दामोदर सावरकर के अनुसार , राष्ट्र या प्रादेशिक एकता हिंदुत्व का पहला तत्व है ।हिन्दू वह है जिसके मन में सिंधु से ब्रह्मपुत्र तक और हिमालय से कन्याकुमारी तक के समस्त भौगोलिकप्रदेश के प्रति अनुराग है । सावरकर ने जाति या रक्त संबंध को हिंदुत्व का दूसरा तत्व बताया है।सावरकर के शब्दों में , हिन्दू वह है जिसकी धमनियों में सप्त सैन्धव क्षेत्र की जाति का रक्त बहता है ।सावरकर ने हिंदुत्व का तीसरा लक्षण संस्कृति को माना है । सावरकर के शब्दों में , जिस व्यक्ति को हिन्दू सभ्यता और संस्कृति पर गर्व है, वह हिन्दू है।

हिंदुत्व की परिभाषा:

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार“ Hindutva is an ideology seeking to establish the hegemony of Hindu and the Hindu way of life .”

Encyclopedia Britannica के अनुसार Hindutva (Hindu-ness) (is) an ideology that shought to define Indian Culture in terms of Hindu Values .”

हिंदुत्व शब्द या पदका प्रयोग विनायक दामोदर सावरकर ने 1923 में अपनी विचारधारा की रूप रेखा बनाने में किया । भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने 11 दिसम्बर 1995 को हिंदुत्व को जीवन का एक तरीका या जीवनपद्धति माना । भारतीय जनता पार्टी ने अपने आधिकारिक आदर्श में 1989 में इसे शामिल किया । विनायक दामोदर सावरकर को इसका प्रतिपादक माना जा सकता है । सावरकर इटालियन क्रांतिकारी मेजिनी

के कार्यों और जीवन से प्रभावित थे , ने 1904 में अभिनव भारत नामक संस्था की स्थापना की थी। हिंदुत्व के बीज़ इस संस्था में मिलते हैं।

राष्ट्र और राष्ट्रीयता पर पश्चिम की विचारधारा

बेंडक्ट एंडेर्सन के अनुसार– राष्ट्र, राज्य की मूलतः सांस्कृतिक क्रिया है। एंडेर्सोन ने अपनी पुस्तक"इमेजिंग पॉलिटिकल कम्यूनिटी" में राज्य को सीमित और संप्रभु बताया है। राष्ट्र के सभी आवश्यक तत्वजब एक राज्य की सीमा में निहित हो जाती है तो राष्ट्र राज्य का निर्माण हो जाता है। एंडेर्सोन महोदय केअनुसार इसके दो पक्ष हैं, पहला राजनीतिक पक्ष , इसके अनुसार राष्ट्र, राज्य दोनों समानांतर है ।

दूसरा पक्ष, भावनात्मक पक्ष, जिसके अनुसार लोगों की सांझा संस्कृति, सांझा इतिहास , सांझा मूल्य उन्हे भावनात्मक रूप से जोड़े रखता है। यह जब संप्रभु , निश्चित सीमा क्षेत्र में आ जाता है , तो राज्य राष्ट्र का निर्माण हो जाता हैं। राज्य राष्ट्र आधुनिक अवधारणा है।

राष्ट्र व राष्ट्रीयता पर अर्नेस्ट आन्द्रे गेल्लेनेर की पुस्तक" नेशन एंड नेशनलिस्म जिसका प्रकाशन 1983 में हुआ , के अनुसार राष्ट्रीयता प्राथमिक रूप से एक राजनीतिक सिद्धांत है जो कहता है कि राजनीति को राष्ट्रीय इकाई के अनुकूल होना चाहिए। गेल्लनेर महोदय कहते हैं कि राष्ट्रवाद केवल सामाजिक आवश्यकता के रूप में केवल आधुनिक विश्व में लागू होता है। प्राचीन समय में शासक वर्ग साँस्कृतिक एकरूपता को बहुत कम प्रोत्साहन देते थे। लेकिन आज़ के समय में यह कार्य काफ़ी तकनीकी भरा हुआ व जटिल परंतु महत्वपूर्ण हो गया है।

एंडरी हीवूड ने अपनी पुस्तक पोलटिक्स (1997) में व्यक्त किया कि राष्ट्र को परिभाषित करने में कठिनाई का अनुभव व्यक्तिनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ दोनों के मिश्रण के रूप में अनुभव करते हैं। वैकल्पिक रूप में , लोगों का समूह जो समान भाषा बोलते हैं , समान र्म व अतीत उन्हे बंधन में रखता है। वास्तव में वैकल्पिक कारण से राष्ट्र को परिभाषित करना असंभव है|

क्रिस्टोफे जैफरलोट ने अपनी पुस्तक द हिन्दू नेशनललिस्ट मूवमेंट एंड इंडियन पोलिटिक्स में 1925 से लेकर 1990 तक के काल में पहचान की राजनीति और उसपर आगे बढ़ने की राजनीति को आर्य समाज और हिन्दू महासभा द्वारा बनाये गए हिंदूवादी माहौल को नम्र हिंदूवाद के चलते उपस्थित हिन्दू समाज को ख़तरे से लड़ने में सक्षम न होने के कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा अपनाने व उसपर आगे बढ़ने की गतिविधिया का उल्लेख है। इसके अंतर्गत हिन्दू राष्ट्र बनाने के विभिन्न चरणोंजैसे हिन्दू राष्ट्रवाद का उदय , आर्य समाज और आर्य राष्ट्रवाद का उदय , हिन्दू संघटनों की गतिविधिया तथा सावरकर तथा सावरकर द्वारा कारागार में रहते हुए मुस्लिम धर्मावलंबियों द्वारा राष्ट्र के अन्दर की जाने वाली विभिन्न परिस्थितिवों जिनके बीच 1925 में हिंदुत्वशब्द गढ़ा गया , का उल्लेख है। एंथनी स्मिथ द्वारा विकसित नृजातीय राष्ट्रवाद का वर्णन है और उसे आर्य समाज ,हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वारा अंगीकृत किए जाने का उल्लेख किया गया है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के हिंदुत्ववादी राष्ट्रवादी विचार , ब्राह्मणवाद और इसका सामाजिक अन्तरविरोध , माधव सदाशिव गोलवांकर (गुरुजी) के आदर्शवाद और उनके आदर्शवादी सिद्धांत के स्त्रोत जर्मनी के जोहान कासपर ब्लूनस्च्ली के सिद्धांत के अंगीकृत करने का उल्लेख है। विभिन्न प्रकार के जातिवाद और सामाजिक संगठनो को विभिन्न क्रम में रखने और उनमे प्राथमिकता क्रम के कारण सहित उल्लेख जेफ़रलोट महोदय ने किया है। संगठन को शीर्ष पर रखते हुए उसके अंतर्गत मानव को रखना , राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के शाखा विस्तार को प्राथमिकता , राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और उनके विभिन्न गतिविधियों तथा अन्य हिंदूवादी संस्था हिन्दू महासभा की गतिविधिवों तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से उनकी नम्र नीतियों के कारण भिन्नता का उल्लेख मिलता है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जहाँ साँस्कृतिक सैन्य संगठन के रूप में कार्य करती है वही हिन्दू महासभा काँग्रेस में एक विशेषहित समूह के रूप में थी। भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के गोरक्षा से दूरी तथा मुस्लिम धर्मावलंबियों की ओर झुकाव के कारण तथा 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रभाव से आगे चलकर स्वतंत्र पार्टी बना। हिन्दू महासभा के नेता बी. एस. मुंजे राष्ट्रीय स्वयं सेवकसंघ के आजीवन संरक्षक रहे। नृजातीय धार्मिक समूह की रणनीतियों व जवाहर लाल नेहरू की धर्मनिरपेक्षता की राजनीति के 1947 के बाद के समय में संघर्ष , अयोध्या की घटना पर प्रथम बार ध्यानाकर्षण करने की हिंदुत्ववादियों की रणनीति को दर्शाया गया है। हिन्दू राष्ट्रवादी गुटों व हिन्दू परंपरावादी गुटों के पूर्वी पाकिस्तान के हिंदुओ के रक्षार्थ एक समूह बनाने तथा नेहरू व हिन्दू धर्म के

परंपरावादियों , धर्मनिरपेक्षता के भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के एक वैधानिक नियम बनने तथा एक हिंदूवादी पार्टी हिन्दू महासभा के मध्य भारतमें गतिविधियों को दर्शाया गया है। जन संघ और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सम्पर्क तंत्र को एक विशिष्ट दल के निर्माण की रणनीति के रूप में दर्शाया गया है। 1960 के संक्रमण काल के अंतर्गत लगातार हिंदुत्ववादियों की चलने वाली रणनीति कॉंग्रेस के तंत्र पर इस रणनीति से पड़ने वाले दबाव , हिन्दू परंपरावादियों व राज्य राजनीति, नेहरू व धर्मनिरपेक्षता की राजनीति , आर्थिक क्षेत्र में अर्थव्यवस्था पर लोक नियंत्रण का जन संघ का मत, विकेंद्रीकरण की इच्छा व जनसंघ को मध्य विश्व के वक्ता के रूप में उल्लेख किया गया है। दृढ़ोक्ति से उपयोगितावाद की ओर पलायन , वैधानिक विपक्ष का उदय , दल निर्माण की समूह विधि आदि का वर्णन उल्लिखित है। हिन्दू धर्मावलंबियों के संगठित होने के साथ ही साथ मतदान प्रक्रिया में गठबंधन आदि के तरीकों का वर्णन हिंदुत्ववादी नेतावों के पक्ष में मत बनाने की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है।

जैफरलोट महोदय , 1970 के गतिविधियों का वर्णन करते हुए जनसंघ का मुख्यविभाजन ऊर्ध्वाधर न होकर के क्षैतिज होने , व्यक्ति के ऊपर संगठन को प्राथमिकता कारण कि व्यक्ति नाशवान व संस्थाए शाश्वत होने के कारण , हिन्दू राष्ट्रवादीयों की जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन में भूमिका , सक्रियतावादी काल के प्रारंभ होने व अपने अस्तित्व को बनाए रखते हुए समाजसुधारक वर्ग का राजनीतिक वर्ग के रूप में स्थानांतरण , का वर्णन किया हैं। 1980 के काल में हिन्दू राष्ट्रवादी रणनीतिवों के 1980 में विलय होने का वर्णन, जन संघ से भारतीय जनता पार्टी के बनने तथा उससे उत्पन्न गतिरोधों , नवीन परिस्थितियों से सामंजस्य बनाने व धर्मनिरपेक्षता के क्षरण को दर्शाया गया है । भारतीय जनता पार्टी , क्या जन संघ की वास्तविक रूप में उत्तराधिकारी है ? इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास किया गया है। विश्व हिन्दू परिषद का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नए प्रकल्प के रूप में उदय , ईसाई मिशनरीज के अनुशरण में विश्व स्तर पर हिन्दू धर्मावलंबियों को एक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से किया जाने का उल्लेख है। 1990से पहले के परिदृश्यों का वर्णन व मन्दिर आन्दोलन और मंडल आन्दोलन के द्वारा हिन्दू धर्मावलंबियों का सामूहिकरण और जातिगत अन्तरविरोधों के बिखराव को शुद्ध व सरल नृजातीय धार्मिक सम्मिलन द्वारा विभिन्न क्षेत्र में रहने वाले हिन्दू धर्मावलंबियों के द्वारा भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय स्तर की पार्टी के रूप में स्वीकारता को दर्शाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जेफरलोट महोदय, हिन्दू राष्ट्रवादी गतिविधिवों और उनसे भारतीय राजनीति के प्रभावित होने के प्रभाव को कालक्रम के अनुसार व्यवस्थित तरीक़े से व्याख्या करते हैं परंतु एतिहासिक आधार बताने में असफल रहे हैं। लेख़क द्वारा पुस्तक में दी गई कालक्रमानुसार घटित हिंदुत्ववादी क्रियायों से पाठक पूर्णतया सहमत है। इन घटनावों के कारण ही बहुसंख्यक धर्मावलंबियों की बहुसंख्यता की ओट में जो शोषण हो रहा था उसे व्यक्त करने का एक ससक्त राजनीतिक मंच मिल गया

प्रलय क़ानूनगों की पुस्तक “RSS’s Tryst with Politics (from Hedgewar to Sudarshan) में लेख़क महोदय ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की उसके विभिन्न प्रमुख के कार्यकाल तथा उनके कार्यकाल के दौरान उनकी व्यक्तिगत छवि का राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया हैं। लेख़क ने इस पुस्तक के माध्यम से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख प्रयोजनों और उसके राष्ट्र के प्रति आदर्शवादी सोच , दूरदृश्यता का विवेचन किया गया है। इस पुस्तक में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के उद्भव की पृष्ठभूमि में न जाकर लेख़क ने केवल प्रथम प्रमुख डॉ केशव बलिराम हेड्गेवार से लेकर सुदर्शन तक के कार्यकाल में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कृत्य को दर्शाया है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की छवि सर्वाधिक कट्टर इसके दूसरे प्रमुख माधव सदाशिव गोलवांकर के कार्यकालमें रही। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर लिखित इस पुस्तक में केशव बलिराम हेडगेवार जो कि इसके संस्थापक थे, उनका सीधा राजनीतिक उद्देश्य था जबकि उनके उत्तराधिकारी गोलवांकर के साधुत्व प्रकृति के होने के कारण उनकी व्यक्तिगत रूप से राजनीति से दूरी बनी रही परंतुराष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ राजनीतिक बना रहा । राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के तृतीय मुखिया बाला साहेब देवरास ने गंभीरता से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख उद्देश्यों में विभिन्न वर्गो जैसे दलित , जनजाति वर्ग और औरतों को हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए संगठित किया। उनके उत्तराधिकारी राजेंद्र सिंह ने राजनीतिक उद्देश्यों को संगठित किया । सुदर्शन ने राज्य शक्ति पर नियंत्रण करने के साथ साथ हिंदुत्व पर पुनः बल देने का प्रयास किया। लेख़क महोदय ने शुरू से अंत तक इस बात को तार्किक रूप से रखा है कि हेड्गेवार से लेकर सुदर्शन तक ने कैसे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को भारत को हिन्दू राष्ट्र में परिवर्तित करने में लगाया है।

प्रलय कानूनगो महोदय भी अपनी इस पुस्तक में स्थानीय सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को बताने में असफल रहे हैं । इस पुस्तक में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रथम प्रमुख से लेकर सुदर्शन तक कार्यकाल के दौरान

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की गतिविधियों का वर्णन है परंतु इस पुस्तक में हिंदुत्व की गतिविधिया राजनीतिक संस्कृति को कैसे प्रभावित की, इस पर यह पुस्तक मौन है।[1]

"द थीम्स इन पॉलिटिक्स की कड़ी में जोया हसन महोदय संपादित पुस्तक पार्टीएंड पार्टी पॉलिटिक्स इन इंडिया में पाँच भागों में विभाजित है इसमें भारतीय राजनीति की विभिन्न दशाओं का वर्णन किया गया है भाग 1 में' द कांग्रेस सिस्टम इन इंडिया' रजनी कोठारी का निबंध है। भाग 2 में हिंदू राष्ट्रवादी राजनीति के उदय की दशाए है।भाग 3 में समानता मूलक राजनीति और वामदलों की कार्यप्रणाली है भाग 4 में सामाजिक विविधता और दलगत राजनीति को दर्शाया गया है भाग 5 में राजनीतिक प्रतियोगिताओं और दलगत राजनीतिक तंत्र के परिवर्तन को दर्शाया गया है।जोया हसन महोदया संपादित पुस्तक पार्टीज एंड पार्टी पॉलिटिक्स इन इंडिया में विभिन्न राष्ट्रीय पार्टियों से कांग्रेसका उदय जाति और वर्ग का समाज पर प्रभाव उनका विकास और गठबंधन की राजनीति पर प्रभाव का वर्णन किया गया है।इसमें भारतीय राजनीति की विभिन्न दशाओं का वर्णन किया गया है। सामाजिक विविधता और दलगत राजनीति का वर्णन है परंतु पुस्तक में किसी भी प्रकार की ऐतिहासिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि को नहीं दर्शाया गया है इस प्रकार पुस्तक विस्तृत वर्णन करते हुए भी आधारहीन है।[2]

ज़ोया हसन की पुस्तक "पॉलिटिक्स आफ इंक्लूजन"में मुस्लिम और निम्न जातियों की राजनीति का उदय, जाति और वर्ग के क़ानूनी समावेश का परीक्षण विभिन्न उदाहरणों से किया गया है। विभिन्न वर्गों को आरक्षण व उनके राजनीतिक प्रतिनिधित्व का वर्णन भी किया गया है परंतु पुस्तक में कहीं पर भी किसी प्रकार का ऐतिहासिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि नहीं दर्शाया गया है।भौगोलिक का स्तर का विभिन्न वर्गों और जातियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है जैसे अनेक जनजाति वर्ग भौगोलिक रूप से तथा प्रकृति प्रेमी होते हैं उनकी संस्कृति भी उनको प्रकृति प्रेमी बनाती है इस तरह बिना इन आधारों के अध्ययन अधूरा है।[3]

ज्योतिर्मय शर्मा के पुस्तक हिंदुत्वएक्सप्लोरिंग द आईडियाऑफ़ हिंदू नेशनलिज्म में लेखक महोदय ने स्वामी दयानंद सरस्वती, श्री अरविंदो, स्वामी विवेकानंद ,विनायक दामोदर सावरकर के आधुनिक हिंदुत्व

---

[1] क़ानूनगो: प्रलय, मनोहर प्रकाशन,2002

[2] हसन:ज़ोया ,ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,2009)

[3] हसन:ज़ोया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,2009)

आंदोलन का आलोचनात्मक वर्णन किया है। हिंदुत्व का राजनीतिक दर्शन और जीवन चर्या हिंदुओं के वर्चस्व स्थापित करने के उद्देश्य से किया गया है । श्री शर्मा वर्णन करते हैं कि उन्नीसवी शताब्दी का विषम राष्ट्रवाद जो इटालियन क्रांतिकारी मैजिनी से प्रेरित है यह भी प्राचीन मौलिक हिंदू ग्रंथ वेदों से लिया गया है |पिछले दशकों से उभरते हुए हिंदू लड़का राष्ट्रवाद ने,हिंदू कौन हैं ? हिंदूवाद क्या है ? हिंदुत्व और हिन्दूवाद का हिंदू के लिए मतलब क्या है?इन प्रश्नों का हल खोजते हुए यह वर्णन करने का प्रयास किया है कि उन्नीसवी शताब्दी और बीसवीं शताब्दी के महान दार्शनिक स्वामी दयानंद सरस्वती, श्री महर्षि अरविंद, स्वामी विवेकानंद और वी डी सावरकर के लेखों में हिंदूवाद, राष्ट्रवाद, पहचान और संस्कृत के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं| संक्षिप्त में इस पुस्तक में यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि हिंदू वाद सभी धर्मों की माता है और आर्य सर्वश्रेष्ठ जाति है ।हिंदूवादजो कि हिंदुत्व आंदोलन से माना जाता है सभी अन्य धर्मों से श्रेष्ठ है क्योंकि यह सभी अन्य धर्मों के सत्य को प्रकट करता है |[4]

बंचस ऑफ थॉट्स नामक पुस्तक का परिचय देते हुए प्रोफेसर एम. ए. वेंकटाराव कहते हैं कि "गुरु जी के विचारों से भरे हुए इस पुस्तक में संघ के संपूर्ण सकारात्मक,देशभक्तिपूर्ण , एक ही समय में आदर्शवादी और प्रायोगिक दोनों ही, राष्ट्र निर्माण के सिद्धांत और विधियों का वर्णन किया गया है|" इस पुस्तक को चार भाग में विभाजित किया गया है ।भाग एक में उद्देश्य जिसके अंतर्गत हमारा विश्व उद्देश्य मानवता के अंतिम शरणार्थी ,समय की चुनौतियां ,सही ढांचा ,राष्ट्र की अंतर आत्मा की पुकार, सच्चे राष्ट्रीय सम्मान हेतु सजीव सकारात्मक गतिमान हिंदू वाद और हमारे कार्य केउद्देश्य का वर्णन है| भाग 2 में राष्ट्र और उसकी समस्या का वर्णन है ।हमारी मातृभूमि ,महान उद्देश्य, देवी गुण ,मातृभूमि की संतान होने के नाते राष्ट्रीय जीवन, स्थानिकता के साथ राष्ट्रवाद, इसके अंतर्गत इसकी जड़ों और परिणामों को दर्शाया गया है ।सजा देने के साहस, हिंदू राष्ट्र की अद्वितीयता, हिंदूराष्ट्र और अल्पसंख्यक, हिंदू राष्ट्र और धर्म निरपेक्षता,मूल सत्य का प्रतिज्ञान, आंतरिक धमकियां, जैसे मुस्लिम, ईसाई और मार्क्सवाद का वर्णन है । भाग 3 में संपन्नता प्राप्त करने के पथ अंतर्गत राष्ट्रीय अन्तर चेतना को जागृत करने, एतिहासिक जरूरतों का मिलना, एक राष्ट्र की आवश्यकता ,सभी चुनौतियों का एक उत्तर, राष्ट्रीय जीवन का अमृत, संसार की वास्तविकता , संपूर्ण प्रतिबंध ,विजय की पूजा, विजय हेतु युद्ध, सही मापक, सही दर्शन, युद्ध राष्ट्र, नए युग की पुकार का वर्णन है ।

[4] शर्मा :ज्योतिर्मय,पेंगुइन बुक्स इंडिया ,2003

सामाजिक उत्थान हेतु अस्पृश्यता, अभिशाप और इसका उपचार, बहिष्कृत बंधु की सेवा, मानवता और मातृत्व हेतु पुकार का वर्णन है। भाग 4 में मानव निर्माण तकनीकी का वर्णन है। जिससे सच्ची राष्ट्र निर्माण हेतु सोच ,तकनीक की दक्षता और गुरु द्वारा पुकार का वर्णन है।[5]

द सैफ्रन वेव: डेमोक्रेसी एंड हिंदू नेशनलिज्म इन मॉडर्न इंडिया में थॉमस ब्लोम हानसेन महोदय के अनुसार औपनिवेशिक शासन काल के बाद नए लोकतांत्रिक देशों में मजबूत राष्ट्रवाद और धार्मिक गतिविधियां बहुत से पश्चिमी विचारों के लिए चिंता का विषय है द सैफ्रन वेव में थॉमस हानसेन महोदय ने हमारा ध्यान विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में उभरते हुए दाहिने विंग हिंदू राष्ट्रवादी पार्टी और उसकी राजनीतिक इकाई भारतीय जनता पार्टी जो प्राचीन हिंदू संस्कृति के आधार पर पार्टी बनाने का दावा करती है ,की तरफ ले जाते हैं। हानसेन महोदय के अनुसार ,हिंदू राष्ट्रवाद कोमुख्य रूप से धार्मिक परिदृश्य मजबूत राजनीतिक गतिविधि के बजाय सकारात्मक रूप से भारतीय जनता पार्टी को भारतीय लोकतांत्रिक शासन में वृहद लोकतांत्रिक स्थानांतरण के रूप में देखते हैं हानसेन महोदय के अनुसार लोकतांत्रिक स्थानांतरण इस तरह से हुआ की जातियां और धार्मिक अल्पसंख्यक राजनीतिक गतिविधियों में भागीदारी और एक नागरिक के रूप में सुरक्षित महसूस करने में सफल हुए हैं। भारतीय मध्यम वर्ग की इच्छा और चिंताओं को हिंदू राष्ट्रवादी गतिविधियों ने सफलतापूर्वक अपने में समाहित कर लिया है। हानसेन भारतीय राजनीति को लोकतंत्र और जातिवाद के बीच की कड़ी को केंद्रित करते हुए भारतीय राजनीति को नए नजरिए से देखते हैं। औपनिवेशिक काल के बाद विश्व के लिए सामाजिक गतिविधियों ने पूर्व औपनिवेशिक भारत को बदल दिया है। इस पुस्तक से न केवल ऐतिहासिक गहराई, हिंदू राष्ट्रवाद को समझने में मददअपितु समकालीन भारतीय राजनीति को समझने में मदद मिलती है । पुस्तक को 7 अध्याय में बाटते हुए ,प्रथम अध्याय में आधुनिकता, भारत में लोकतंत्र ,दूसरे अध्याय में भारत को हिंदू राष्ट्र के रूप में कल्पना,तीसरे अध्याय में हिंदू राष्ट्र को संगठित करना, चौथे अध्याय में लोकतंत्र, लोकप्रियता और भारतीय शासन ,पांचवे अध्याय में भगवा लहर में 1970 में संघ परिवार का अधिक मजबूत होना औरउसकी शाखाओं को पूरे देश में फैलना, छठे अध्याय में, सांप्रदायिक पहचान ,राष्ट्रहित सातवें अध्याय में हिंदू राष्ट्रवाद, लोकतंत्र और भूमंडलीकरण का वर्णन किया गया है| इस पुस्तक में हानसेन महोदय ने हिंदू राष्ट्रवाद को सकारात्मक रूप से दिखाते हुए राष्ट्रीय

[5] गोलवांकर: एम.एस.नोटन प्रकाशन

स्वयंसेवक को एक सैन्य संगठन के रूप में देखते हुए, भारत में लोकतांत्रिक तरीके से अपनी पहचान बनाने का वर्णन किया है।

नवीनतम पुस्तक “संघम शरणम गच्छामि” के लेखक “विनय त्रिवेदी” ने 1925 में स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को डॉ हेडगेवार ने भारत को एक हिंदू राष्ट्र रूप में देखने स्वप्न के साथ नीव रखी| हिंदुत्व में राष्ट्रवाद के मेल ने सत्ता के शीर्ष तक पहुंचने की लंबे सफर को आसान किया |इसमें नेता नहीं विचारधारा महत्वपूर्ण है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को सिर्फ शाखा के रास्ते समझना पंचतंत्र के हाथी एक तरफ से महसूस करना भर है दावा है कि संघ दुनिया का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है संघ के 175000 प्रकल्प और 60,000 से ज्यादा शाखाएं चलती हैं| देश के बाहर 40 से ज्यादा देशों में उसके संगठन हैं| राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ फिनिक्स पक्षी की तरह है तीन तीन बार सरकार के प्रतिबंधों के बाद भी उसे खत्म नहीं किया जा सका बल्कि उसका विस्तार ही हुआ जिंदगी का शायद ही कोई पहलू हो जिसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ या उसके कोई प्रकल्प नहीं छूता बदलते वक्त के साथ संघ ने सिर्फ अपना गणवेश ही नहीं बदला नजरिए को भी व्यापक बनाया है वक्त के साथ बदलने की फितरत संघ के मिट्टी में है| त्रिवेदी ने इस किताब में संघ के अब तक के सफर के ऐसे सभी अहम पड़ाव दर्ज किए हैं जिनको बिना भारत को पूरी तरह से समझना मुश्किल होगा संघ की यात्रा के माध्यम से त्रिवेदी भारतीय राजनीति कुछ अनकहे किस्सों की परत भी उधर ते हैं| संघ के लगभग सभी पहलुओं को छूने वाली या किताब न सिर्फ इसका दस्तावेज है बल्कि भविष्य का आईना भी है| "संघम शरणम गच्छामि" राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर कई मायनों में एक संपूर्ण किताब है जो उसके समर्थकों के साथ साथ उसके आलोचकों को भी इस नजरिए के साथ पढ़नी पड़ेगी कि आप संघ को पसंद कर सकते हैं या फिर ना पसंद लेकिन उसे नजरअंदाज कतई नहीं कर सकते|[6]

फ़ासिसज़्म इन इंडिया,डिबेटिंग –आर.एस.एस.-बी.जे.पी. पोलिटिक्स में राम पुनियानी ने वर्णन किया है कि भारत में नाजीवाद के उदय , यूरोप में फासीवाद का उदय एक डरावना परिदृश्य लेकर उदय हुआ है, जहाँ अति राष्ट्रवादी राजनीतिक विचारधारा अल्पसंख्यक को लक्ष्य करते हुए एक प्रकार से विनाश का माहौल उत्पन्न करता है। राजनीतिक अधिकार निलंबित कर दिए जाते हैं। इस काल में अधिकार रखने तथा उनके समर्थकों के पक्ष में एक बड़ा आधार होता है जो भूत काल को सुनहरा बताते हैं। कुछ लोग जैसे प्रकाश करात

---

[6] त्रिवेदी: विनय, एका पब्लिकेशन, 2020)

(सी.पी.आई.) मार्क्सवादी इसे केवल अधिकारवादी बताते हैं जबकि अन्य उसे फ़ासीवाद के रूप में व्यक्त करते हैं। हालाँकि यूरोप का राष्ट्रवाद विचारधारा की उत्पत्ति के मूल में नक्सलवाद है।

राष्ट्रवाद की जो अवधारणा भारतीय जनता पार्टी लेकर चलती है उसमे संस्कृति, धर्म और मनुष्य को लेकर चलते इसी कारण पिछले सात वर्षो से प्रजातान्त्रिक तरीक़े से चुनी गई सरकार कार्य कर रही है । संघ का राष्ट्रवाद नेशनलिस्म नहीं, इसमे प्राचीन भारतीय संस्कृति धर्म और मनुष्य है। इस तरह से राम पुनियानी स्वयं इस बात को कुछ हद तक स्वीकार करते हैं कि भारत का नाजीवाद यूरोप के फ़ासीवाद से अलग परिदृश्य प्रस्तुत करता है।[7]

पैट्रिओटीस्म,रिलीजन एंड आर.एस.एस.आइडिओलाजी में राम पुनियानी वर्णन करते हैं कि शब्द "राष्ट्र विरोधी" कुछ वर्षों से ज़्यादा प्रचलन में है । वे सभी लोग जो आर.एस.एस. और उसकी शाखाओ की आलोचना करते हैं उनपर राष्ट्रविरोधी होने का लेवल (दर्ज़ा) दे दिया जाता है। हिन्दू राष्ट्रवाद के स्रोत होने के कारण , आर.एस.एस. देशभक्ति को धर्म से जोड़ने के कारण अधिक बलवान हो चुका है| जहाँ हिंदुओ की उनकी देशभक्ति के कारण जयजयकार होती है। विशिष्टतया मुस्लिम के बारे में ,पाकिस्तान के प्रति वफ़ादारी के सूक्ष्म संकेत दिये जाते हैं । राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुखिया मोहन भागवत ने कहा कि हिन्दू अपने प्रकृति से राष्ट्र भक्त होते हैं यदि आप हिन्दू हैं तो स्वतः देशभक्त होंगें। आप अचेतन हिन्दू हो सकते हैं, आप को जगना होगा। गाँधी की देशभक्ति हिन्दू धर्म के कारण है।गाँधी के अनुसार धर्म व्यक्तिगत मामला है। वह अपने को सनातनी हिन्दू कहते हैं। उनका हिंदूवाद उदार एवं समावेशी है। वह अपनी आध्यात्मिक बल सभी धर्मों से ग्रहण करते हैं।

मुस्लिम राष्ट्रवादी नेतागण जो ब्रिटिश शासन व विभाजन के विरुद्ध थे ,जैसे ख़ान अब्दुल गफ़्फ़ार ख़ान, मौलाना अबुल कलाम आजाद की भूमिका को दरकिनार करते हैं।[9]

रिपब्लिक ऑफ हिंदुत्व(हाउ द संघ इज़ रिसेपिंग इंडियन डेमोक्रेसी) में बद्री नारायण महोदय ने पिछले कई वर्षों से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के भारत में सामाजिक पुर्नसंरचना की दिशा कार्य करने की गतिविधियों को

---

[7] पैट्रिओटीस्म,रिलीजन एंड आर.एस.एस. आइडिओलाजी , राम पुनियानी,मीडिया हाउस(2017)

[8] एच.टी. जनवरी 2020

[9] एचटीटीपी://www.indiancurrents.org/article-patriotism-religion-and –rss-ideology-ram-puniyani-230.php

वर्णित किया है। इसका प्रयोग बाद में भारतीय जनता पार्टी के राजनीतिक लाभ प्राप्त करने में किया जाता है। सामान्य जन मन के समझ से आगे आकर संघ ने स्वयं को सामाजिक समावेशी बना लिया है। जिससे भारतीय समाज के अधिकांश वर्गो तक अपनी उपस्थिति दर्ज़ कराकर हिन्दू राष्ट्रवाद की ओर क़दम बढ़ाया है।

आर.एस.एस. ने सक्रिय रूप से, दलित, जनजातियों और अन्य हाशिए पर रही समुदायों को हिन्दुत्व में समाहित और आत्मसात किया है। इस तरह भारतीय जनता पार्टी के लिए वोट में हस्तांतरित कर लिया है। उत्तर प्रदेश में हिन्दुत्व के बल मौलिक रूप से भारतीय गणतंत्रको पुनः आकार दे रहे हैं। हम संघ की विचारधारा और उसकी सोच से असहमत हो सकते हैं , उसकी घृणा ,नफ़रत और हिंसा की भावना को भारतीय समाज राजनीति के लिए नासूर (फोड़ा) मान सकते हैं ,लेकिन वह यह सब कर रहा है इससे इंकार न कर सकते हैं। उसने भारतीय समाज को ज़्यादा उग्र ,हिंसक और घृण से भर दिया है लेकिन इन सभी तथ्यों के साथ साथ यह भी सत्य है कि इसकी समाज के एक बड़े वर्ग में स्वीकृति हुई है ।[10]

में राम पुनियानी ने भारतीय राष्ट्रवाद व हिन्दू राष्ट्रवाद को काफ़ी रोचक ढंग से तुलना करते हुए कहते हैं कि राष्ट्रवाद की कल्पना करते हुए भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस को कलकत्ता में इसका नेतृत्व करने की व्यवस्था की गई। नारायण मेधाजी लोखण्डे जो मजदूर समस्या से जुड़े प्रमुख नेता थे आधुनिक राष्ट्रवाद के जनक माने जाते थे। हिन्दू राष्ट्र वादी ने प्राचीन अनादि काल के मूल्य को रखा। अनादिकाल से हम हिन्दू राष्ट्र हैं। हिन्दू राष्ट्रवाद की राजनीति ,पिछले 30 वर्ष से मज़बूत हुई है। हिन्दू राष्ट्रवाद सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की बात करता है। धर्म के नाम पर राजनीति बड़े बड़े राजनीतिक संस्थाओ को धीरे धीरे नष्ट कर देती है। फासीवाद, बड़े कॉर्पोरेट वर्ल्ड, किसान मजदूर के अधिकार ख़त्म कर रहा है। मूल तत्व वाद यानि शक्ति शाली समूह धर्म की समझ समाज पर लाद देता है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के अंतर्गत सावरकर ने हिंदुत्व के तीन आधार दिए। जिसमे संस्कृति के अंतर्गत कही भी आदिवासी , महिला, दलित, की संस्कृति की बात नहीं की। हिंदुत्व की राजनीति हिन्दू की बात भी पीछे कर रही है। हिंदुत्व का मतलब राम मंदिर न होकर हिन्दू की पहचान का सवाल है। मंदिर निर्माण समाज ख़ुद कर

---

[10] रिपब्लिक ऑफ़हिंदुत्व(हाउ द संघ रिशेपिंग इंडियन डेमोक्रेसी) बद्री,नारायण ,पेनगुइन बुक्स (2021)

सकता है । हिन्दू या मुस्लिम की बुनियादी जरूरत उसकी अस्मिता का सवाल । भोजन, शिक्षा, बेरोज़गारी आदि बुनियादी सवाल पर राम पुनियानी ने ज़ोर दिया है।

राज्यों में समाज सुधार आंदोलन: हिंदुत्व के जनक कोलकाता में समाज सुधार आंदोलन: 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना के साथ ही तत्कालीन भारत में उपस्थित कुरीतियों, हिंदू धर्म में व्याप्त आडंबरोंपर समाज सुधार आंदोलन के रूप में प्रहार किया गया। राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना, सती प्रथा ,बाल विवाह आदि तत्कालीन सामाजिक बुराइयों को खत्म करने के लिए किया था | इस संगठन में तत्कालीन समाज में हिंदुत्व के प्रचार प्रसार में व्यापक भूमिका निभाई। 1839 में द्वारिका नाथ टैगोर ने तत्वबोधिनी समाज की स्थापना की। 1898 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी विवेकानंदने की । इस संस्था ने सामाजिक क्रियाकलापों द्वारा कोलकाता में हिंदुत्व की प्रसार में व्यापक भूमिकाका निर्माण किया । स्वामी विवेकानंद ने 1893 में अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लिया । उनके ओजस्वी भाषण को सुनकर "न्यूयार्क हेराल्ड" नामक पत्रिका ने लिखा "जिस देश में हिंदुत्व दर्शन के इतने बड़े विद्वान निवास करते हों , उस देश में ईसाई धर्म प्रचारक भेजना बेवकूफी है । 1900 में द्वितीय विश्व धर्म सम्मेलन का आयोजन पेरिस में हुआ । इसमें भी स्वामी विवेकानंद ने भाग लिया।

महाराष्ट्र में हिंदुत्व का प्रसार: 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा आर्य समाज की स्थापना की गई इसमें तत्कालीन हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों और उसका फायदा उठाकर ईसाईकरण व मुस्लिम धर्म का प्रचार होने का विरोध किया गया । स्वामी दयानंद सरस्वती ने गौरक्षिणी सभा की स्थापना की । स्वामी दयानंद सरस्वती को भारत का मार्टिन लूथर किंग भी कहा जाता है। स्वामी जी ने जाति व्यवस्था का विरोध किया । पूरे देश में शिक्षण संस्थानों की स्थापना आर्य समाज द्वारा की गई जिसे दयानंद एंग्लो वैदिक स्कूल नाम से जाना जाता है । इन शिक्षण संस्थानों ने पूरे देश में सामाजिक औरशैक्षणिक दृष्टि से बदलाव लाया |दयानंद सरस्वती ने शुद्धि आंदोलन भी चलाया। शुद्धि आंदोलन के अंतर्गत ऐसे हिंदुओं जिनको उनके दलित होने या पिछड़ेपन के कारण ईसाई या किसी अन्य धर्म में परिवर्तित होने से वापस लाने की प्रक्रिया को शुद्धि आंदोलन का नाम दिया। महाराष्ट्र में हिंदुत्व के प्रचारप्रसार का श्रेय बाल गंगाधर तिलक को भी जाता है तत्कालीन समाज में व्याप्त बुराइयों, कुरीतियों तथा युवकों को संगठित करने हेतु गणेश उत्सव आदि का आयोजन किया । तिलक प्रथम राष्ट्रवादी नेता थे, जिन्होंने जनता से निकट संबंध था और इस दृष्टि से उन्होंने

अखाड़े, लाठी क्लब तथा गौ हत्या के विरुद्ध अभियान चलाया । उन्होंने ही डेक्कन एजुकेशन सोसायटी व फर्ग्युसन कॉलेज की स्थापना की। महाराष्ट्र में ही परमहंस मंडली तथा प्रार्थना समाज की स्थापना की गई है ,महादेव गोविंद रानाडे ने महिला शिक्षा तथा उत्थान पर बल दिया। इसलिए उन्हें महाराष्ट्र का सुकरात कहते हैं |

पंजाब हिंदू सभाकी स्थापना 1909 में हुई। हिंदू सांप्रदायिक विचारधारा और राजनीति की नीव इसके नेताओं बीएन. मुखर्जी तथा लालचंद ने हीं रखी , उन्हें इस बात का बहुत क्षोभ था कि राष्ट्रीय कांग्रेस सभी भारतीयों को एक राष्ट्र के रूप में संगठित करने की कोशिश कर रही है तथा मुसलमानों को राजी करने के लिए हिंदू हितों की बलि दे रही है।अपने अंग्रेज पुस्तिका' राजनीति में आत्म- अस्वीकार" में, लालचंद ने कांग्रेस को हिंदुओं का ऐसा दुर्भाग्य बताया जिसे उन्होंने खुद आमंत्रित किया था।उनका कहना था कि पिछले 25 वर्षों में जो जहर फैलाया गया है उसके कारण हिंदुओं काअस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। अतः हिंदुओं को न केवल कांग्रेस का परित्याग करना चाहिए बल्कि उसे खत्म करने की भी कोशिश करनी चाहिए ।लालचंद की स्पष्ट घोषणा थी हिंदुओं को न केवल इस बात में विश्वास करना चाहिए बल्कि इसे अपने जैविक अस्तित्व, अपने जीवन और अपने आचरण का अनिवार्य अंग बना लेना चाहिए, कि वह हिंदू पहले थे और भारतीय बाद में | अखिल भारतीय हिंदू महासभा का पहला अधिवेशन, अप्रैल 1915 में कासिम बाजार के महाराजा की अध्यक्षता में हुआ लेकिन महासभा मुस्लिम लीग की तुलना में बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ा , इसका एक महत्वपूर्ण कारण यह था कि मुसलमानों में जमीदारों, अभिजात वर्ग के लोगों ,भूतपूर्व नौकरशाहों का वर्चस्व था, जबकि हिंदुओं में आधुनिक शिक्षा के प्रचार के कारण वैज्ञानिक दृष्टिलोकतंत्र और राष्ट्रीयता पर आगे बढ़ रहा था। हिंदू और मुसलमान दोनों समुदायों के स्वामी और धार्मिक सत्ता संभालते हुए लोग उदारवादी तथा सरकार पर आश्रित थे लेकिन हिंदू में उनका वर्चस्वकम हो रहा था जबकि मुसलमानों में बरकरार था। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि मुस्लिम समाज के सामाजिक और वैचारिक पिछड़ेपन तथा मध्य वर्ग की कमजोर स्थिति ने मुस्लिम सांप्रदायिकता के फैलाव में योगदान किया ।एक और बात थी जिसकी वजह से हिंदू सांप्रदायिकता अपेक्षाकृत कमजोर रही थी क्योंकि औपनिवेशिक सत्ता ने उसे बहुत कम सुविधाए प्रदान की क्योकि मुस्लिम सांप्रदायिकता पर ज्यादा भरोसा था|1864 में वेद समाज की स्थापना श्री धरालू नायडू द्वारा मद्रास में की गई थी । ये केशव चंद सेन के शिष्य थे ।इस संस्था ने दक्षिण भारत में हिंदुत्व के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया अतः इसे दक्षिण भारत का ब्रह्म समाज कहते हैं।

संयुक्त प्रांत में हिंदुत्व का प्रचार प्रसार संयुक्त प्रांत, इलाहाबाद और वाराणसी जैसे महातीर्थ का प्रांत होने के कारण हिंदुत्व की राजनीति के लिए हमेशा से ही उर्वर रहा है|अलीगढ़ आंदोलन, किसके संस्थापक सर सैयद अहमद खान थे ,मुस्लिम धार्मिक संस्थाओं की स्थापना की प्रतिक्रियाके स्वरूप संयुक्त प्रांत में भी, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, जैसे महान संस्थाओं की स्थापना हुई ।देवबंद स्कूल 1866-67 में सहारनपुर में स्थापित हुआ इसका उद्देश्य मुस्लिम संप्रदाय के लिए धार्मिक नेता तैयार करना था। इन संस्थाओं की स्थापना के प्रतिक्रियामें एक संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना काशी में की गई है|

हिंदुत्व राजनीति की आर्थिक पृष्ठभूमि

भारत वर्ष , ग्रामों का देश है, भारत वर्ष ,प्राचीन काल से ही कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला राष्ट्र रहा है ,यहां की कृषि मानसून आधारित, कृषि प्रणाली है ,वर्षा ,धूप ,मिट्टी आदि के आधार पर समूचे भारतवर्ष में विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाती रही हैं । मानसून आधारित कृषि के कारण, सूर्य, नदियों, पेड़ पौधों की पूजा-अर्चना, भारत में होती रही है । पशुपालन उद्योग के रूप में सदा से ही कृषि के पूरक के रूप में रहा है । हिंदू धर्ममें गाय को माता का दर्जा देकर, इसे सदा से ही पूज्य तथा 33 करोड़ देवी देवताओं का वास स्थल वाली पशु के रूप में माना जाता है। गाय को प्राचीन काल से ही अघन्या यानी न मारने योग्य पशु का दर्जा दिया गया है । 1890 के दशक के पूर्वार्द्ध में पूरे भारत में गोवध विरोधी आंदोलनों ने गति पकड़ी| प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद में जड़ी बूटियों की, कृषि व जंगलों पर निर्भरता , पर्यावरण सरक्षण, आदि द्वारा हम देखते हैं कि गो पालन पर बल देना , जैविक खाद का प्रयोग , बाबा रामदेव का पतंजलि, नव हिंदुत्वका एक रूप है , योगा, बाबा रामदेव और उनका उपभोक्ता ब्राण्ड पतंजलि , नागरिकता के विचारों से संपर्क स्थापित करते हैं जो कि राष्ट्र के आर्थिक स्वास्थ्य और नागरिक के स्वास्थ्य के हित में होता है । ये जीवन के एक ही परिदृश्य हैं जो हिंदुत्व द्वारा प्रख्यापितहैं।

हिंदुत्व राजनीति की वैचारिक पृष्ठभूमि

स्वामी विवेकानंद और विनायक दामोदर सावरकर ने तत्कालीन समाज में हिंदुत्व की राजनीति के सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की आधारशिला बनाने का कार्य किए। 1893 में, शिकागो में, विश्व धर्म संसद में स्वामी विवेकानंद का संबोधन ने, संपूर्ण विश्व में उन्हें लोकप्रिय तथा हिंदू दर्शन की व्याख्या कर उन्होंने हिंदू धर्म के

नए आयामों को स्थापित किया। इससे समूचे भारतवर्ष में, इस धर्म के अनुयायियों में ,एक नई राजनीतिक चेतना की लहर इस धर्म के माध्यम से जागृत हुई। विनायक दामोदर सावरकर ने" इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस 1857" के माध्यम से राष्ट्रवाद और हिंदुत्व की एक नईअलघ जगाने का प्रयत्न किया ।पुस्तक के माध्यम से उन्होंने क्रांति का आह्वान किया। 1901 में नासिक में मित्र-मेला नामक संस्था की स्थापना की जो कि मेजिनी के "तरुण इटली" के नमूने पर" अभिनव भारत" में परिवर्तित हो गई|

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद ब्रिटिश सरकार ने भारतीय देसी रियासतों की स्वायत्तता का दर्जा देने की बात कही, लॉर्ड मिंटो के इलाहाबाद में घोषणा पत्र के अनुसार ब्रिटिश सरकार पूर्णतया धर्मनिरपेक्ष सरकार होगी ,परंतु 1907 के मार्ले मिंटो सुधार अधिनियमसे व 1905 के बंगाल भंग आंदोलन से भी इसकी विभाजन कारी मानसिकता की पुष्टि होती है। इन आंदोलनों की प्रतिक्रिया स्वरूप हिंदुत्ववादी संगठनों ने अपना विरोध विभिन्न आंदोलनों के माध्यम से प्रकट किया। खिलाफत आंदोलन और 1916 का लखनऊ समझौता इन गतिविधियों को विस्तार देने का काम किया। विभिन्न आंदोलनों ने तत्कालीन भारत में उपस्थित जनसमुदाय की भावना का प्रसार किया , जिसके प्रतिज्ञा स्वरूप हिंदुत्ववादी संगठनों को पर्याप्त बल मिला |

इलाहाबाद के लार्ड मिंटो पार्क में महारानी विक्टोरिया के पढ़े गए घोषणापत्र से ही भारत में एक धर्मनिरपेक्ष सरकार देने की बात की गई थी परंतु 1905 के बंगाल बटवारा और 1907 के मार्ले मिंटो अधिनियम जो कि सुधार के नाम पर बना था, इन गतिविधिवों से ही ब्रिटिश सरकार की मंशा साफ जाहिर हो चुकी थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भी इस बात धर्मनिरपेक्षता की बात कही गई है परंतु न तो ब्रिटिश राज्य में ,न हीं आज की सरकारें ,कहां तक इसका कारण पालन कर पाई है, यह सर्वविदित है|

वास्तविकता में हिंदुत्व एक आधुनिक सोच है ,विचारधारा है, चेतना है ।जिसकी आदर्शवादी जड़े निश्चित ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में जो कि 19वीं और 20वीं शताब्दी के मध्य थी ,में पड़ी हुई है ।ऐसे निश्चित आदर्शवादी हिंदुत्व की विचाधारा प्रायोगिक रूप में 1920 से उभर कर सामने आई ।विभिन्न परिस्थितियों में हिंदुत्व संस्थाओंमें सफलतापूर्वक अभियान के बाद यह तत्व एक बल बन पाया ।धर्म कोई भी हो, सांप्रदायिकता का कारण नहीं हो सकता ,हालांकि सभी तरह के सांप्रदायिकतावादी धार्मिक मतभेदों का

इस्तेमाल उन सामाजिक आवश्यकताओं, आकांक्षाओ,संघर्षों इत्यादि को ढकने या विकृत रूप में पेश करने का प्रयत्न किया जाता रहा है, भले ही उनका धर्म से कुछ भी लेना देना ना हो, किसी भी व्यक्ति, दल या आंदोलन में सांप्रदायिक विचारधारा का जन्मपहले चरण में होता है, बहुत से जातीय समूह इसके शिकार हो जाते हैं ,यद्यपि वे सांप्रदायिकता के अन्य दो तत्वों को स्वीकार नहीं करते। यानि यह नहीं मानते कि धर्म पर आधारित विभिन्न समुदायों के हित अनिवार्य रूप से एक दूसरे के विरोधी ही होते हैं। यह वही लोग थे जिन्होंने अपने को सिर्फ राष्ट्रीयता वादी कहने के बजाय, राष्ट्रीयतावादी मुसलमान या राष्ट्रीयतावादी सिख के रूप में देखा|

सांप्रदायिकता के दूसरे चरण को उदार सांप्रदायिकता या हाल की लोकप्रिय शब्दावली का प्रयोग करें तो नरमपंथी सांप्रदायिकता कहा जा सकता है। उदार सांप्रदायिकता, मूलतः संप्रदायिकता की राजनीति ही कर रहे थे, फिर भी उनकी आस्था कुछ उदारवादी, लोकतांत्रिक, मानवतावादी और राष्ट्रीयता वादी मूल्यों में थी। ये यह तो मानते थे कि भारत का निर्माण ऐसे विभिन्न धर्म आधारित समुदायों से हुआ है जिनके अपने अलग-अलग और विशेष हित हैं , जिनमें कभी-कभी टक्कर आ जाती है , फिर भी यह मानते थे और सार्वजनिक रूप से कहते भी थे कि इन विभिन्न सांप्रदायिक हितों के परस्पर समाहित किया जा सकता है तथा सामान्य राष्ट्रीय हितों से इनकी संगति बैठाई जा सकती है और इस प्रकार भारत को एक राष्ट्र बनाया जा सकता है|

सांप्रदायिकता का तीसरा या अंतिम चरण उपस्थित हुआ जो कि उग्रवादी सांप्रदायिकता के नाम से जाना गया उग्रवादी संप्रदायिकता, यानि ऐसी सांप्रदायिकता जिस के तौर- तरीके फासीवादी हो, उग्रवादी संप्रदायिकता में भय या घृणाहोती है ।भाषा कर्म एवं आचरण के स्तर पर इसका स्वभाव हिंसात्मक होता है ,अपने राजनीतिक विरोधियों को इस सांप्रदायिक विचारधारा वाले अपने दुश्मन मान लेते हैं तथा उनके खिलाफ युद्ध की भाषा का प्रयोग करते हैं। इस उग्रवादी चरण में ही विभिन्न धर्मों के सांप्रदायिक व्यक्तियों द्वारा घोषणा करना प्रारंभ करते हैं कि उनके धर्म विशेष पर और उनके संस्कृति पर खतरा है ,यद्यपि सांप्रदायिकता के तीनों दौर अलग अलग समय पर आए परंतु वे एक- दूसरे पर इतने आश्रित रहे कि उनपर एक दूसरे का प्रभाव पड़ता रहा और उनसे एक निरंतरता भी बनी रहे। संप्रदायिकता का उदय आधुनिक राजनीति से जुड़ा हुआ है|

आधुनिक राजनीति प्राचीन, मध्ययुगीन की राजनीति का सीधा विकास ही था, साथ ही वह एक नई जमीन पर विकसित हुई, राष्ट्रीयतावाद, समाजवाद जैसी अन्य दृश्यों की तरह ही राजनीति और विचारधारा के रूप में सांप्रदायिकता तथा समाजवादी विचारधारा के रूप में सांप्रदायिकता का उदय भी तभी संभव हुआ जब जनता की भागीदारी, जन जागरण और जन्मत के आधार पर चलने वाली राजनीति अपना मजबूत स्थान बना चुकी थी|

आधुनिक युग के पहले की राजनीति में उच्च वर्ग का वर्चस्व था और जनसाधारण उपेक्षित था। जनता विद्रोह भी करती थी तो राजनीति व्यवस्था के बाहर रहकर ही करती थी इसलिए उसे अशांति का या नकारात्मक गतिविधियों का रूप दिखा दिया जाता था। फिर भी यदि किसी तरह विद्रोह सफल भी हो जाता था तो उनके नेताओं को भी शासक वर्ग में शामिल कर लिया जाता था।जवाहरलाल नेहरू ने 1936 में लिखा कि" यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए कि यह भारत में सांप्रदायिकता एक परवर्ती घटना है ,जिसका जन्म हमारी आंखों के सामने ही हुआ है।" अर्थात यह एक नई घटना नहीं है ,ऐसा भी नहीं है कि सांप्रदायिकता का विकास सिर्फ भारत में ही हुआ है, यह भारत के विशेष ऐतिहासिक सामाजिक विकास का अनिवार्य या अपरिहार्य नतीजा भी नहीं है। यह उन स्थितियों का फल है जिन्होंने दूसरे समाजों में सांप्रदायिकता जैसी घटनाओं और विचारधाराओं को जन्म दिया है जैसे फासीवाद ,साम्यवाद,, विरोध नस्लवाद, उत्तरी आयरलैंड में कैथोलिक प्रोटेस्टेंट संघर्ष या लेबनान में ईसाई मुस्लिम संघर्षआदि इसके जीवंत उदाहरण हैं

सांप्रदायिकता उपनिवेशवाद की देन

भारत के विशेष संदर्भ में यदि देखा जाए तो सांप्रदायिकता या सांप्रदायिक चेतना का जन्म उपनिवेशवाद के दबाव तथा उसके खिलाफ संघर्ष करने की जरूरत से उत्पन्न परिवर्तनों के कारण ही हुआ। विभिन्न अंचलों तथा देश के बढ़ते हुए आर्थिक राजनीतिक और प्रशासनिक एकीकरण, भारत को एक आधुनिक राष्ट्र बनाने की प्रक्रिया, उपनिवेशवाद तथा भारतीय जनता का बढ़ता हुआ अंतर्विरोध तथा आधुनिक सामाजिक वर्गों एवं उपवर्गों का निर्माण आदि ऐसे विभिन्न कारण हैं, जिनसे लोगों ने अपने सामूहिक हितों को नए दृष्टिकोण से देखने की जरूरत महसूस की। राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक- भाषाई विकास तथा वर्ग संघर्ष की आधुनिक धारणाओं का प्रसार एवं प्रक्रिया का अनिवार्य नतीजा था। लेकिन जहां भी इन धारणाओं का विकास धीमी गति से या आंशिक रूप में हुआ तो नए यथार्थ को ग्रहण करने व संपर्क के

व्यापक दायरे बनाने और नई पहचान और विचारधाराओं का विकास करने के लिए लोगों ने जाति, धर्म, संप्रदाय और पहचान के पुराने परिचित, पूर्व-आधुनिक तरीकों के प्रति सुझाव प्रकट किया, जो अपरिहार्य था । इन स्थितियों में दुनिया भर में ऐसे ही घटनाएं घटित हुई हैं भारत में भी अधिकांश स्थानों पर ऐसा ही घटित हुआ । देश के कुछ हिस्सों में आम जनता के कुछ वर्गों में धार्मिक चेतना, संप्रदायिक चेतना में बदल गई। समाज की जरूरत पूरा करने में सक्षम होना तथा सामाजिक तथा राजनीतिक ताकतों का फायदा आदि कारणों से सांप्रदायिक ताकतों को बल मिला। सांप्रदायिकता का विकास अनिवार्य, अपरिहार्य भारत के संदर्भ में नहीं था । परंतु यह मात्र सत्ता लोलुप राजनीतिज्ञ शासकों के षड्यंत्र का नतीजा मात्र था, यह भी गलत है । इसकी जड़ सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में थी । उस समय की पूरी सामाजिक स्थिति ही ऐसी थी कि सांप्रदायिकता, हिंदुत्व के लिए जमीन तैयार कर रही थी ।इसके अभाव में यह लंबे समय तक टिक नहीं सकती थी | भारतीय उपनिवेशवादी अर्थव्यवस्था तथा इसके कारण इसके लगातार पिछड़ जाने का कारण भी संप्रदायिकता यानी हिंदुत्व में विकास कारण बन कर उभरा ।औपनिवेशिक शोषण के फल स्वरुप भारतीय अर्थव्यवस्था में ठहराया था तथा भारतीय जनता खासतौर पर मध्यवर्ग के जीवन पर इसका व्यापक असर पड़ा ,इसके कारण ऐसी स्थितियां पैदा हो गए, जो भारतीय समाज के विभाजन तथा सांप्रदायिकता के विकास के लिए सहायक रही ।बीसवीं शताब्दी के दौरान भारत में न तो औद्योगिक विकास औरन ही शिक्षा स्वास्थ्य तथा अन्य सामाजिक ,सांस्कृतिक गतिविधियों का विस्तृत फैलाव हुआ था ।1928 के बाद की विश्वव्यापी मंदी के दौरान आर्थिक अवसर भी सिमट के चले जा रहे थे तथा काफी बेरोजगारी फैल गई थी। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हमारे यहां, जो राष्ट्रीयता वादी विचार थे और उन विचारों के अंतर्गत जो प्रचार प्रसार किया गया था, उसके एक बड़े भाग में हिंदूवादी सुर था और इस सुरने सांप्रदायिकता के विकास में सहयोग किया । बहुत से संघर्षशील नेताओं ने राष्ट्रीयता वादी विचारधारा में हिंदुत्व का पक्ष जोड़ दिया, वह मध्ययुगीन भारतीय संस्कृत को बिल्कुल भूल जाते थे और प्राचीन भारतीय संस्कृति की महत्ता पर पूरा जोर देते थे । वह भारतीय राष्ट्रीयता को हिंदूवादी रंग देने की कोशिश करते थे या कम से कम रोजमर्रा के राजनीतिक आंदोलन में हिंदू मुहावरों सूक्तिवों का प्रयोग करते ही थे । पंडित बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रीयता का प्रचार करने के लिए गणेश पूजा और शिवाजी जयंती का सहारा लिया तो बंग- भंग के खिलाफ आंदोलन की शुरुआत, गंगा में डुबकी लगाकर की गई। बंकिम चंद्र चटर्जी आदि आदित्य जैसे महान लेखकों ने तथा बंगला, हिंदी, उर्दू तथा अन्य भाषाओं के बहुत से अन्य लेखकों ने अपने उपन्यासों नाटकों,

कविताओं ,कहानियों आदि में मुसलमानों का उल्लेख अक्सर विदेशियों या यवनों के रूप में किया करते थे और राष्ट्रीयता को हिंदुओं से जोड़कर देखते थे मुस्लिम शासकों और उनके अधिकारियों को अत्याचारों के रूप में चित्रित करने वाला इस प्रकार का साहित्य शिक्षित मुसलमानों में असंतोष पैदा करता था तथा उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन से विमुख कर देता था।

यदि देखा जाए तो वास्तविकता यह है ,कि हिंदू रंगत की सांप्रदायिकता के उदय का उतना कारण नहीं बना जितना कि विकास को रोकने में राष्ट्र वादियों की विफलता का कारण बन गया। इन कारणों से तत्कालीन मुस्लिम राष्ट्रवादी नेता ,राष्ट्रीय आंदोलन से अलग हटने लगे और मुस्लिम सांप्रदायिकता वादियो ने इसका प्रयोग मुसलमानों की संख्या को राष्ट्रीय आंदोलन से अलग रखने में और उन में यह भावना जगाने के लिए किया की राष्ट्रीयता वादी आंदोलन सफल हो गया तो देश में हिंदू राज्य स्थापित होजाएगा । भारतीय इतिहास विशेष रूप से प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय इतिहास की सांप्रदायिक तथा अवैज्ञानिक विकृत व्याख्या ,संप्रदायिक चेतना का फैलाव का एक मुख्य कारण बना। सांप्रदायिक विचारधारा का यह एक मुख्य अंश भी था। स्कूलों ,कालेजों में भारतीय इतिहास बुनियादी रूप से सांप्रदायिक दृष्टि से ही पढ़ाया जा रहा था और इससे सांप्रदायिकता के उदय और विकास में बड़ी सहायता मिली। इसका असर इतना गहरा था कि कुछ कट्टर राष्ट्रीयतावादियो ने भी भले ही काफी अचेतन स्तर पर इनमें से कुछ व्याख्यावों को स्वीकार भी कर लिया । उदाहरण के लिए महात्मा गांधी ने लिखा हमारे देश में सांप्रदायिक सौहार्द तब तक स्थाई रूप से नहीं लाया जा सकता, जब तक हमारे स्कूलों- कालेजों में, इतिहास की पाठ्य पुस्तकों के जरिए, इतिहास की बेहद विकृत व्याख्या पढ़ाई जाती रहेंगी। पाठ्य पुस्तकों के साथ ही साथ तत्कालीन समय की कविताओं, नाटकों ,ऐतिहासिक उपन्यासों और कहानियों, समाचार पत्रों तथा लोकप्रिय पत्रिकाओं और पर्चे आदि के द्वारा इतिहास की सांप्रदायिक व्याख्या की जा रही थी।

इतिहास के सांप्रदायिक रंग देने की शुरुआत सबसे पहले19वीं शताब्दी में हुई। ब्रिटिश इतिहासकार जेम्स ने भारतीय इतिहास के प्राचीन काल को हिंदू युग और मध्य काल को मुस्लिम युग की संज्ञा दी इससे उनके अनुसार आधुनिक काल को ईसाई युगकहना श्रेयस्कर होगा। दूसरे, ब्रिटिश और भारतीय इतिहासकारों ने भी इस मामले में, उनका अनुसरण किया ।मध्यकाल में मुस्लिम जनता भी उतने ही निर्धन ,शोषित और दमन की शिकार थी, जितनी की हिंदू जनता, साथी जमीदारों ,जागीरदारों तथा शासकों में दोनों धर्मों के लोग

थे, फिर भी इन लेखों को घोषित करने का प्रयत्न किया तथा काफी हद तक सफल भी रहे कि उस दौर में सभी मुस्लिम शासक थे और सभी हिंदू शासित। अर्थात भारत की राजव्यवस्था के चरित्र का निर्णय किया जाने लगा कि आपका ,अपना धर्म क्या है ? हिंदू सांप्रदायिकता वादियो ने इस साम्राज्यवादी प्रचार को भी जल्दी ही स्वीकार कर लिया कि मध्य युग के शासक हिंदू विरोधी थे , हिंदुओं पर जुल्म करते थे और उन्हेंउनकी इच्छा के विरुद्ध मुसलमान बनाते थे ,उस समय के सभी संप्रदायिकता वादी इतिहासकारों ने साम्राज्यवादियों की व्याख्याओ का समर्थन करते हुए मध्य युगीन इतिहास को हिंदू मुस्लिम विवाद का एक लंबा काल घोषित कर दिया और यह माना कि पूरे मध्य युग में हिंदू एवं मुस्लिमसंस्कृतिया अलग-अलग मौजूद थी। मध्य काल में मुसलमान शासकों को उनके धर्म के आधार पर ही विदेशी घोषित कर दिया गया | स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में हजारों वर्षो की गुलामी और विदेशी शासन जैसे मुहावरों का प्रयोग साधारणतया राष्ट्र वादियों द्वारा किया जाने लगा सबसे अधिक दुर्भाग्य की बात यह थी कि इतिहास की हिंदू सांप्रदायिक दृष्टि इस मिथक पर बहुत जोर देती थी कि भारतीय समाज प्राचीन काल में एक महान ऊंचाई पर पहुंच गया था और मध्य काल में मुस्लिम शासन तथा वर्चस्व के कारण लगातार पतन होता गया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना:

हिंदुत्व के विकास के विभिन्न कारकों के कारण1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के साथ ही विभिन्न हिंदुत्ववादी गतिविधियों कोएक मंच प्राप्त हो गया । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 1925 में विजयदशमी के दिन डॉ केशव बलिराम हेडगेवार ने मध्य प्रांत की राजधानी नागपुर में की थी।

चिकित्सा विज्ञान के छात्र के रूप में कोलकाता में 1910 में डॉक्टर हेडगेवार ,एक क्रांतिकारी संगठन में शामिल हुए ।उसके बाद नागपुर वापस आकर महात्मा गांधी के1920 के असहयोग आंदोलन में भाग लिया , लेकिन 1925 में विनायक दामोदर सावरकर के हिंदुत्व के लेखों को पढ़कर और नागपुर में हिंदू मुस्लिम सांप्रदायिकविरोध के कारण डॉ हेडगेवार विचलित होकर क्रांति एवं सत्याग्रह से भिन्न एक पथ को अपनाया । उन्होंने हिंदुओं की मनोवैज्ञानिक समस्या और राष्ट्रीय चेतना तथा सामाजिक एकता में मदद करने वाले किसी संस्था की आवश्यकता महसूस की। उन्होंने हिंदुओं के समूह को जड़ से परिवर्तित करने की जरूरत पर बल दिया । डॉ हेडगेवार ने अखाड़ों के आधुनिक रूप को स्वीकार किया।क्षेत्रीय अखाड़ा दलों की स्थापना आदि अपनी नई समूहों के लिए करने लगे । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सबसे मूल इकाई शाखा ,जो

50 से 100 पुरुष स्वयंसेवकों का समूह था,वह प्रतिदिन मिलते थे और स्वस्थ रहने हेतु व्यायाम ,सैन्य प्रशिक्षण इत्यादि जैसे लाठी भाजना ,समूह गान तथा विचारों पर चर्चा आदि होती थी। स्वयंसेवकों को मराठा नेता शिवाजी महाराज को समर्पित भगवा ध्वज को नियमित रूप से प्रणाम करना होता था, इस नियमित अभ्यास से स्वयंसेवक भौतिक रूप से मजबूत एवं बौद्धिक व्यक्ति बन जाते थे। नौजवान व्यक्ति जो संगठन में भर्ती होते थे और जो जीवन भर चलने वाली व्यक्ति बंधपत्र से एक दूसरे को एवं एक संयुक्त दायित्वका निर्वहन करते थे । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं को जिन्हें प्रचारक कहते थे,कि क्षेत्रीय गतिविधियों एवं क्षेत्रीय शाखा और केंद्रीय संगठन के बीच समन्वय हेतु उत्तरदाई होते थे। स्वयंसेवक, प्रतिबद्ध ,उत्तरदायित्व युक्त प्रचारक ,एक अविवाहित पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं का संगठन बनाते थे। सभी वर्गों का कार्य विभिन्न क्षमताओं से युक्त था।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की मूल इकाई शाखा थी जो कि हिंदू समुदाय को संगठित करने वाली राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मुख्य उपकरण था। एक शाखा में 50 से 100 पुरुष कार्यकर्ता होते थे जो कि समान सामाजिक पृष्ठभूमि से होते थे जो कि सामाजिक सम एकता की भावना को शाखा में बनाते थे। प्रत्येक शाखा को चार उम्र समूहों में बाटा गया था। पहले में, शिशु स्वयंसेवक, जिसमें 6 या 7 वर्ष से लेकर 10 वर्ष तक की आयु के कार्यकर्ताओं का समूह था। दूसरा, बाल स्वयंसेवक, जिसमें 10 वर्ष से लेकर 14 वर्ष की आयु के कार्यकर्ता शामिल होते थे। तीसरा ,तरुण स्वयंसेवक, जिसमें 14 वर्ष से लेकर28 वर्ष तक के कार्यकर्ता होते थे। चौथा, प्रौढ़ स्वयंसेवक, जिसमें 28 वर्ष या उससे अधिक आयु के कार्यकर्ता होते थे। जे.एन. कुरियन महोदय, के शोध के अनुसार, भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, शाखा में 60% कार्यकर्ता ,18 वर्ष से 25 वर्ष की आयु के थे।

हिंदुत्व की राजनीति**1947** से लेकर अब तक

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अपने को और व्यापक करने का अवसर प्राप्त किया। 1949 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर लगा प्रतिबंध हटने के बाद उसे अपनी एक सम्मानित छवि बनाने को बाध्य हो गई। इसी क्रम में सबसे पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने गोरखपुर में प्रथम प्राथमिक स्कूल की स्थापना 1952 में की जिसका नाम सरस्वती शिशु मंदिर रखा। इसका उद्घाटन श्री गोलवाँकर द्वारा किया गया। इसके बाद पूरे देश में इस तरह के स्कूल स्थापित होने लगे । 1950 से लेकर 1960 तक का काल भारतीय

राजनीति में पार्टी व्यवस्था में, केंद्रीय विरोधाभासों का काल था। पार्टियों के उच्च्च आदर्शों, सिद्धांतों व कार्यक्रमों में बहुत विरोध था ।यह समाज के विभिन्न वर्गों, क्षेत्र समर्थकों को संगठित करने में विफल रही ।उधर कांग्रेस पार्टी काफी सफलतापूर्वक अपने विरोधी पार्टियों को संगठित होने से रोककर अपने विपक्ष को मजबूत होने से रोक कर एकाधिकार स्थापित कर ली थी। संघ के दो प्रारंभिक मुखिया हेडगेवार व एमएस. गोलवलकर ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को एक सांस्कृतिक संगठन के रूप में रखा तथा उसे राजनीति से दूर रखा। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक स्वयं को व्यक्तिगत रूप से, कांग्रेस संगठन में कम करते हुए भी हिंदुत्व राजनीति को बढ़ाने वाले संगठन में शामिल हो सकते थे ।स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हिंदू महासभा भी राजनीतिक उद्देश्य के लिए उचित रूप से संगठित ना हो पाई। इसलिए एक नवीन राजनीतिक पार्टी ,जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से भिन्न हो,परंतु सहयोगी जरूर हो की स्थापना के प्रयास हेतु युवा प्रचारक अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व में एक बंगाली राजनीतिज्ञ श्यामा प्रसाद मुखर्जी से मिला जो कि उस समय तुरंत ही नेहरू कैबिनेट से त्यागपत्र दिए थे। इस तरह 1951 में जनसंघ की स्थापना हुई । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उद्देश्य से मिलती जुलती इस नई पार्टी के साथ काम करने लगे और इसे एक संगठन एक स्वरूप प्रदान किया। 1966 से 1977 के बीच के काल में किए गए एक शोध के अनुसार 90 परसेंट जन संघ के पदाधिकारी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पृष्ठभूमि के थे। कांग्रेस के प्रभुत्व काल में जनसंघ भी हिंदूमहासभा से अच्छा परिणाम ना दे सकी। 1952 के प्रथम लोकसभा निर्वाचन में इस पार्टी ने 92 सीट पर अपने उम्मीदवार खड़ा किए परंतु केवल 3 पर ही विजयश्री प्राप्त कर पाई तथा तीन पर्सेंट वोट इसे प्राप्त हुआ। 1957 के लोकसभा निर्वाचन में इसे 4 सीट प्राप्त हुआ। 1967 के निर्वाचन में इसने 35 सीट व 9 परसेंट वोट प्राप्त कर उस समय तक की सर्वोत्तम सफलता प्राप्त की , परंतु पुनः1971 में 22 सीट पर रह गई। आपातकाल के दौरान जटिल राजनीतिक संगठन के कारण 1980 में पुनः भारतीय जनता पार्टी के रूप में इसका पुनर्जन्म हुआ। भारतीय जनता पार्टी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से निकटता बनाए रखें तथा इसके प्रथम प्रधान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक अटल बिहारी बाजपेई ही बने। 1980 से भारतीय जनता पार्टी ,राष्ट्रव्यापी विपक्ष की भूमिका निभाने में सफल हो गई । 1984 में राम जन्मभूमि मुद्दे को विश्व हिंदू परिषद ने प्रमुखता के साथ उठाया। अयोध्या मामले को लेकर हिंदुत्ववादी लेखक" सीताराम गोयल" की पुस्तक " हिंदू टेंपल्स व्हाट हैपेंडइन देम"(वॉइस ऑफ इंडिया,2013)के अनुसार 2000 मुस्लिमस्मारकों पर प्रभुत्व स्थापित कर, उन्हें हिंदू मंदिरों में बदला गया। हिंदुत्व के प्रचारक, प्रचार करते हुए आमजन से प्रश्न करते थे कि

तुम राम के संतान हो या बाबर के, जो इस प्रश्न का उत्तर न देगा उसे इस देश में रहने का अधिकार नहीं है। देश के 90 परसेंट मुसलमान हिंदू धर्म से जबरन परिवर्तित मुसलमान हैं, विश्व हिंदू परिषद और भारतीय जनता पार्टी ने मिलकर 1990 में रथ यात्रा ,श्री लालकृष्ण आडवाणी के नेतृत्व में निकाली । पुनः 6 दिसंबर 1993 को विश्व हिंदू परिषद ने मिलकर अयोध्या में एक विशाल जनसभा का आयोजन किया, जिसमें लगभग 300000 लोगों ने भाग लिया, उस समय उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी का शासन था इस कारण स्थानीय प्रशासन ने हिंदुत्व समूहों का अत्यधिक कम विरोध किया तथा अतिउत्साहित होकर कार्य सेवकों ने बाबर मस्जिद का विध्वंस कर दिया।उसी समय हिंदुत्ववादी नेताओं ने घोषणा की कि इस स्थान पर पहले श्रीराम का जन्म स्थान था, जिसे बाबर ने विध्वंस कर दिया था ,अतः इस स्थान पर श्री राम का मंदिर बनना चाहिए | इस घटना के बाद भारतीय राजनीति में एक नया मोड़ आ गया | पिछले लगभग दो दशकों से ये घटना भारतीय राजनीति को प्रभावित करता रहा है । 1995 में कनाडा के प्रोफेसर अरविंद शर्मा ने सार्वलौकिक मानवाधिकारों की हिंदू उद्घोषणा को ड्राफ्टकिया ।उनके अनुसार 21वीं सदी हिंदू की सदीहोगी । एकता और पवित्रता के आधार पर इनका यह कहना मात्र ख्याली पुलाव नहीं ,अपितु तथ्य और विश्लेषणात्मक अध्ययन से यह सिद्ध किया है। 1996 में भारतीय जनता पार्टी पहली बार केंद्र की सरकार में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सबसे बड़े घटक के रुप में शामिल हुई। पुनः इसने 1999 से 2004 तक राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सबसे बड़े घटक के रूप में केंद्र सरकार में रही। परंतु अयोध्या में राम जन्मभूमि स्थल पर भव्य राम मंदिर बनवाने का वादा गठबंधन सरकार की मजबूरी बताकर व मामले को न्यायालय में विचाराधीन बताकर उस प्रकरण से विमुख होती रही हैं। श्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी ने अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन करते हुए केंद्र सरकार में तथा मार्च 2017 से उत्तर प्रदेश में सत्ता में है परंतु हम देखते हैं कि राम जन्मभूमि आंदोलन को जिस तरह भारतीय जनता पार्टी ने अपने शीर्ष प्राथमिकता में रखा था उसके लिए अनुकूल समय व मार्ग की प्रतीक्षा कर रही है। हम कहते हैं हमारा हिंदू राष्ट्र है, हिंदू राष्ट्र है इसका मतलब इसमें मुसलमान नहीं चाहिए ऐसा बिल्कुल नहीं ,जिस दिन यह कहा जाएगा कि इसमें मुसलमान नहीं चाहिए उस दिन वह हिंदुत्व नहींरहेगा श्री मोहन भागवत द्वारा" भविष्य का भारत" संवाद का सार इस वाक्य में छुपा है जिस हिंदुत्व की बात मोहन भागवत कर रहे हैं हिंदुस्तान में सबसे पहले सावरकर ने स्थापित किया। सर्वोच्च न्यायालय ने 1995 कि अपने निर्णय में हिंदुत्व को जीवन की एक पद्धति घोषित किया और कहा कि इसे धर्म से नहीं जोड़ना चाहिए लेकिन हिंदुओं को एक धार्मिक कूट के

तौर पर कथा करने की कोशिश राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने ही की राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय प्रमुख जी वी. गोलवलकर जो गुरुजी के नाम से प्रसिद्ध हैं ,अपनी पुस्तक बंच ऑफ थॉट मेंमुसलमानों और ईसाइयों को हिंदू समाज के लिए खतरा बताया था।श्री भागवत कहते हैं ,गोल्वाँकर के भाषण परिस्थिति बस थे, जो कि शाश्वत महत्व नहीं रखती , समय बदलता है ,सोच बदलती है और सोच के अनुसार बदलने की इजाजत मिलती है ,डॉक्टर हेडगेवार जी से मिलती है ।उन्होंने कहा कि हम समय के साथ संगठन में बदलाव के लिए स्वतंत्र हैं इसलिए अब भागवत कह रहे हैं कि, उन्हें किसी दूसरे समुदाय से और अब जब हिंदू राष्ट्रवाद फिर से अपने चरम पर है तो क्यों मोहन भागवत समावेशी भारत की बात कर रहे हैं ।भागवत कहते हैं अंग्रेजों के आने से पहले हमने कभी अल्पसंख्यक शब्द का इस्तेमाल नहीं किया तो वह गलत नहीं हैं , उनका बदलने को तैयार होना, सवालों के जवाब देना, तारीफ के लायक है लेकिन यह सवाल भी बना हुआ है क्या दिल्ली में उठी आवाज़ सड़कों पर एक धर्म विचारधारा को बहाना बनाकर खून बहाने पर उतारू लोगों तक पहुंचेगी, उम्मीद है कि बजरंग दल जैसे हिंदुत्व की बात कर रहा है जिसमें सभी शामिल हो ,जहां अपने उस इतिहास को याद करना होगा और हिंदुत्व के रूप में लानी होगी। सनातन धर्म, संस्कृत संगीत और कला ने संभाल कर रखा है। भागवत जब कहते हैं कि भारत में जो लोग रहते हैं वह सभी राष्ट्रीयता और पहचान की दृष्टि से हिंदू हैं तो वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पुरानी विचारधारा को दोहरा रहे हैं ।राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ यह पहले भी कहता रहा है भारत में रहने वाले सब हिंदू हैं और वह गलत भी नहीं है लेकिन समस्या यह है कि हिंदू और मुसलमान के आधार पर पहचान गहरी होती गई है। जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ यह कहता है हिंदुस्तान में रहने वाले सब हिंदू हैं तो इतिहास में इसकी तमाम उदाहरण मिलती है इसमें कुछ सच्चाई भी है वह दौर था जब भारत से बाहर रहने वाला हर शख्स हिंदू ही कहलाताथा ।अंग्रेजों का ही दृष्टिकोण रहा है या अंग्रेजी सरकार का इसमें बड़ा हाथ रहा कि आज़ हिंदू सिर्फ धर्म बन गया और इसके मुकाबले में मुसलमान शब्द खड़ा हो गया। गुलाम,नामक व्यक्ति पहले हिंदुस्तानी पहलवान थेजिन्होने पेरिस में कुश्ती के लिए गए और तुर्क पहलवान को हराया। उस समय के सबसे प्रसिद्ध पहलवान गुलाम को मोतीलाल नेहरू अपने साथ यूरोप के दौरे पर ले गएऔर गुलाम का खर्च उठा रहे थे, एक बंगाली करोड़पति हिंदू| गुलाम की एक ही तस्वीर है जो पेरिस में ली गई थी जिसमें उनका माप लिया गया था उसके नीचे भी हिंदू लिखा है। इसके बारे में फ्रेंच प्रेस में जहां भी लिखा गया गुलाम को हिंदू के रूप में इंगित किया गया,संबोधित किया गया यानी हिंदुस्तान के लोगों को आजादी के पहले , बाहर की दुनिया में हिंदू बोल बुलाना बहुत आम बात थी तब

उनकी पहचान हिंदुस्तानी मुसलमान के तौर पर नहीं,की जाती थी। ब्रिटिश सरकार ने और विभाजन ने हिंदुस्तानी मुसलमान जैसे शब्दों को जन्म दिया। हिंदुस्तान है यह,वह हिंदुस्तान है जहां मुसलमानों को कभी जरूरत नहीं रहेगी कोई उन्हें अपनाए क्योंकि वह इस मूल का वैसे ही हैं जैसे सारे हैं ।

राम जन्मभूमि विवादित भूमिके रूप में घोषित है वर्तमान में सर्वोच्च न्यायालय में काफ़ी समय तक लंबित रहने के बाद 9 नवम्बर 2019 को सर्वसम्मति से राम मंदिर के पक्ष में निर्णय कर चुकी हैउत्तर प्रदेश में कट्टर हिंदुत्व के प्रति योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी सत्ता में ड्ड है भारतीय जनता पार्टी सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के अनुसार 5 अगस्त 2020 को राम मंदिर कार्यक्रम संपन्न कर लिया है इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय जनता पार्टी ने अपने घोषणा पत्र के अनुसार संवैधानिक मर्यादा में रहकर अनुच्छेद 370 की समाप्ति तीन तलाक जज कानून बनाकर समापन पुस्तक में एकल नागरिक संहिता की ओर कदम और मंदिर निर्माण के अपने शीर्ष प्राथमिक उद्देश्यों की ओर अग्रसर हो चुकी है |

निष्कर्ष

इस तरह हम देखते हैं जनता पार्टी की केंद्र की उत्तर प्रदेश की सरकार मंदिर, मंडल और मार्केटिंग अपने शीर्ष प्राथमिकता में लेकर हिंदुत्व के साथ विकास सामाजिक संतुलन और अपने जनाधार को और विकसित करने में सफल रही है भारत में हिंदुत्व की राजनीति के अध्याय के अंतर्गत हमें देखते हैं धर्म का राजनीतिक प्रयोग मानव सभ्यता के उद्भव काल से ही होता रहा है इसके सभी चाहे कितना भी धर्मनिरपेक्षता का आदर करें परंतु किसी न किसी रूप में किसी धर्म का पोषण अवश्य करते हैं और उसी के साथ चलती रहती है विश्व के देशों में चाहे जनमानस की संख्या या किसी धर्म विशेष को राज्य के संरक्षण के कोई धर्म हो जाता है भारत में हिंदू धर्म का सबसे बड़ा धर्म है इसी के साथ चलती रहती है भारत में हिंदुत्व की राजनीति के माध्यम से समाज के लिए जमीन तैयार की स्वतंत्रता आंदोलन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय मजदूर संघ की स्थापना भारतीय जनता पार्टी के रूप में जाने जाते हैं

अध्याय–तृतीय

उत्तर प्रदेश में हिन्दुत्व की राजनीति

19वीं शताब्दी से अधिकारिक और आम बोलचाल के विभिन्न नामों को, परिभाषाओ को, विभिन्न परिसीमाओं को अपने मे समाहित करते हुए आधुनिक उत्तर प्रदेश वर्ष 2000 मे अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त किया ।1833 ई. मे बंगाल प्रेसीडेंसी को दो भागो मे विभाजित किया गया । आगरा प्रेसीडेंसी उनमेसे एक था । अवध को सरकार ने 1858 मे मिलाकर 1902 मे नाम 'यूनाइटेड प्रोविन्स आफ आगरा एंड अवध' नाम हुआ । 1921 मे इसका नाम यूनाइटेड प्रोविनस ऑफ ब्रिटिश इंडिया हुआ । 1 अप्रैल 1937 से इसका नाम यूनाइटेड प्रांत हुआ 1947 ई. मे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद रामपुर, बनारस, टहरी गढ़वाल, राजसी राज्यों को संयुक्त प्रांत मे मिलाया गया । सन 1950 मे इसका आधिकारिक नाम उत्तर प्रदेश पड़ा। इन विभिन्न नामों व परिसीमाओ के पीछे की कहानी भी प्रशासकीय दृष्टकोण न होकर ब्रिटिश सरकार की फूट डालो और राज़ करो की नीति थी। उत्तर प्रदेश, उत्तर भारत मे स्थित, भारत वर्ष की सबसे बड़ी जन्शंख्या वाला प्रदेश है । विश्व के सन्दर्भ मे देखे तो चीन, भारत, अमेरिका और इंडोनेशिया के बाद 5वी सबसे बड़ी जन संख्या धारित करने वाला क्षेत्र है । यह देश के कुल क्षेत्रफल का 7.33 प्रतिशत ही धारित करता है परंतु देश की कुल आबादी का 16.50 प्रतिशत का पालन करता है ।2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश मे निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या 19,98,12,341 है । इनमे पुरुष जनशंख्या 10,44,80,510 अर्थात 52.28 प्रतिशत तथा महिला जनशनख्या 9,53,31,831 अर्थात 47.72 प्रतिशत है । राज्य मे सबसे अधिक जनशनख्या 79.73 प्रतिशत हिन्दू धर्म को मानने वाले है।[1]

प्राचीन काल से ही गंगा के मैदानी भाग होने के कारण सघन जन वाला क्षेत्र रहा है । प्रागैतिहासिक काल मे यहा आधुनिक मानव के साक्ष्य मिले है । महाजनपद काल मे कोशल गणराज्य आधुनिक उत्तर प्रदेश मे ही था । रामायण महाकाव्य काल मे आयोध्या कोशल राज्य की राजधानी थी। मथुरा मे भगवान श्री कृष्णा ने जन्म लिया था । एशिया के प्रकाश पुंज भगवान गौतम बुद्ध ने अपना पहला उपदेश यही पर दिया था । मुगल काल की बात करे तो तत्कालीन प्रदेश भी उस समय के साम्राज्य का हृदय था । 1540 ई. मे शेरशाह सूरी ने इसी प्रदेश मे अपने

---

[1] जनसंख्या एवं नगरीकरण,बौद्धिक प्रकाशन ,इलाहाबाद,2016,65

साम्राज्य की राजधानी बनाया। महान मुग़ल सम्राट अक़बर ने अपने साम्राज्य की राजधानी आगरा और फतेहपुर सीकरी को बनाया।

भौगोलिक दृष्टकोण से देखे तो आधुनिक उत्तर प्रदेश के उत्तर मे तिब्बत और नेपाल, दक्षिण मे मध्य प्रदेश, हरियाणा दिल्ली राजस्थान आदि पश्चिम मे, पूर्व मे बिहार स्थित है । उत्तर प्रदेश का क्षेत्रफ़ल के दृष्टिकोण से भारत के राज्यों मे राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र तथा आंध्र प्रदेश के बाद 5 वे स्थान पर है । इसका क्षेत्रफ़ल 243,290 वर्ग क़िलोमीटर है । इसकी सीमाए अन्तरराष्ट्रीय महत्व रखती है । नेपाल से इसकी सीमाए लगती है । इसके उत्तर मे हिमालया पर्वत, गंगा यमुना के दोआब मे फ़ैला उपजाऊ मैदान, गंगा यमुना और अदृश्य सरस्वती नदी का संगम जैसा दुर्लभ सयोग समेटे प्रयाग जो कि भारत की आध्यात्मिक राजधानी भी कही जाती है । इसी प्रदेश मे स्थित है । भारत की साँस्कृतिक राजधानी वाराणसी जो कि वारुणा और अस्सी नदियो के बीच बसी है, इसी प्रदेश मे स्थित है ।

जनसंखिकीय दृस्टीकोण से भी उत्तर प्रदेश सघन जनसंख्या वाला प्रदेश है । यहा देश की 16.50 प्रतिशत आबादी 7.33 भारत के भू भाग मे रहती है । शिक्षा के क्षेत्र मे भी एतिहासिक काल से ही उत्तर प्रदेश का अपना विशेष स्थान रहा है। सांस्कृतिक राजधानी वाराणसी मे संपूर्णा नंद संस्कृत विश्विदयालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय ,इलाहाबाद विश्वविद्यालय आदि स्थित है। इन संस्थावो के पुरातनछात्र विभिन्न विधावों मे पारंगत होकर आज़ अन्तरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय पटल पर उत्तर प्रदेश का नाम रोशन कर रहे है । राजनीति के क्षेत्र मे, जैसे स्वतंत्रता के पहले से ही प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मेरठ से ही शुरू हुआ । उत्तर प्रदेश ने ही देश को आधुनिक भारत के शिल्पी कहे जाने वाले पंडित मदन मोहन मालवीय जैसे शिक्षाविद, नेता प्रदान किया ।

उत्तर प्रदेश मे हिंदुत्व की राजनीति : सैद्धान्तिकविश्लेषण

ज़ोया हसन की पुस्तक “कूएस्ट फॉर पावर:ओप्पोस्टिओनल मूवमेंट एंड पोस्ट काँग्रेस पोलिटिक्स इन उत्तर प्रदेश” मे महोदया ने उत्तर प्रदेश मे भारतीय जनता पार्टी के सफ़ल होने के कारको का गहन विश्लेषण किया है। उनके अनुसार ऊत्तर प्रदेश मे भारतीय जनता पार्टी की सफलता हेतु शुरुआती दिनों मे केवल सांप्रदायिक

माहौल को उत्तरदाई बताती है ।इस सांप्रदायिक माहौल को बनाने मे तीन घटकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया । हिन्दी- उर्दू गतिरोध, सांप्रदायिक हिंसा व मण्डल कमीशन की रिपोर्ट लागू करनेपर ऊपरी जाति के लोगों का सरकार(काँग्रेस) से नाराज़गी । ज़ोया हसन महोदया के अनुसार भारतीय जनता पार्टी अभी भी अयोध्या के रामजन्मभूमि आंदोलन व मण्डल रिपोर्ट के लागू करने के विरोध को भुनाती है परंतु अधिक समय तक यह प्रासंगिक नहीं रह सकता ।अतः भारतीय जनता पार्टी ने अब अपने को और अधिक तथ्यों से संपोषित कर लिया है । भारतीय जनता पार्टी ने मण्डल रिपोर्ट से बाहर रह गए अन्य पिछड़ा वर्ग को साथ लेकर इस जाति के वोटों पर अपनी पकड़ मज़बूत की[2] । कम्यूनिटी एंड कॉस्ट इन पोस्ट काँग्रेस पोलिटिक्स इन उत्तर प्रदेश (1998) व रेपरसेंटटेसऑन एंड रीडिष्ट्रबूटियोन:द न्यू लोअर कॉस्ट पोलिटिक्स इन नॉर्थ इंडिया मे भी ज़ोया हसन महोदया ने इसी बात को स्वीकार किया है ।

सुधा पाई महोदया, ने अपने आर्टिकल 'एसम्ब्ली पोल रिवियू:इमरजेन्स ऑफ न्यूसोश्ल फोर्सेस इन यू.पी.(1993)', कास्ट एंड कॉमऊनल मोबिलआइजेसन इन द एलेक्टोरल पोलिटिक्स ऑफ यू.पी.(1994) और अपनी पुस्तक "स्टेट पोलिटिक्स:न्यू डाइमैन्शन(2000)" मे 1991के बाद लोक सभा व विधान सभा चुनाव मे भारतीय जनता पार्टी के प्रदर्शन और सामाजिक आधार मे परिवर्तन का वर्णन किया है । 1993 के विधान सभा चुनाव मे व 1996 के लोक सभा चुनाव मे भारतीय जनता पार्टी ने काँग्रेस के सवर्ण जाति के वोटरों पर अपनी बढ़त बना ली । साथ ही साथ भारतीय जनता पार्टी ने पिछड़े वर्ग के वोटरों पर भी अपनी बढ़त बना ली । सैनी,लोधी,कुर्मी आदि के साथ साथ मध्यम पिछड़ा वर्ग और वाल्मीकि और पासी समाज का भी समर्थन प्राप्त किया ।[3]

अमरेश मिश्रा ने अपनी पुस्तक "उत्तर प्रदेश :पोलिटिक्स इन फ़्लएक्स" मे काँग्रेस के केंद्रीकृत राजनीति और भ्रष्टाचार, अपराधिकता पर सवार व्यवस्था से आहत होकर भारतीय जनता पार्टी के रामराज्य आधारित साफ़

---

[2] हसन:ज़ोया,ऑक्सफोर्ड उनिवर्सिटी प्रेस,1998

[3] सुधा पाई ;स्टेट पोलिटिक्स:न्यू डाइमैन्शन2000

सुथरे लोक जीवन देने पर विश्वास करते हुए सामान्य वर्ग और मध्यम वर्ग ने विशेषकर उत्तर प्रदेश मे समर्थन का आधार बना लिया है ।[4]

जसमिने जेरीनिनी ब्रोटेल ने अपने लेख ‘द बी.जे.पी. इन यू.पी.,फ्रोम हिंदुत्व टू कोनसेनसुयल पोलिटिक्स ? (1998) मे भी भारतीय जनता पार्टी द्वारा लोचशील नज़रिया अपनाने तथा मुस्लिम विरोध मे उदारता और नये कार्य विधि के समक्ष समता लाने के वादे के कारण एससी और अन्य पिछड़े वर्ग मे भी स्थान बना पाई है ।

ज़ोया हसन ने भी अपनी पुस्तक ‘पार्टीएस एंड पार्टी पोलिटिक्स इन इंडिया(2002) मेभारतीय जनता पार्टी के ब्राह्मण बनिया पार्टी बनकर लंबे समय तक न टिक पाने के कारण बताते हुए पार्टी द्वारा अपने नये गठित सामाजिक आधार मध्यम पिछड़ा वर्ग को सबसे मजबूत आधार उत्तर प्रदेश मे बताया गया है।[5]

ज्ञानेंद्र पांडे अपनी पुस्तक “हिन्दू एंड अदर्स(1993) मेलिखते है कि हिन्दुत्व मे अब मुस्लिम जैसे अल्पसंखयक वर्ग को भी अन्य के रूप मे न देखकर पूर्व के उत्तर भारतीय हिंदू रूप मे देखते हैइस पुस्तक में बाहरी मुस्लिम शासकों द्वारा आक्रमण करने के दौरानजबरन मुस्लिम धर्म अपनाने को उनकी मज़बूरी मे उठाया गया क़दम मानते हुए उन्हे पूर्व उत्तर भारतीय हिन्दू के रूप में विशेषकर उत्तर प्रदेश आदि में ये घटनाए काफ़ी हुई हैं , शासन द्वारा दी जा रही सुविधावों के कारण वे अपने पुराने मूल धर्म में वापस नहीं आना चाहते,अतः वे अपने स्थिति से आज़ संतुष्ट हैं पर कही न कही उनके मन मस्तिस्कमें हिंदुत्व के लिए प्रेम है ।

अचिन वानिक ने अपनी नवीनतम पुस्तक “हिंदुत्व रिसींग सेकुलर क्लैमस, कोम्मुनल रेयल्टिएस” मे भारतीय राजनीति के लगातार मंथन पर यह एक नवीनतम कृति है ।“द पैनफुल ट्रैनजिशन: बौर्गेओईस डेमॉक्रसि इन इंडिया” (1990) और “द फुएरिएस ऑफ इंडियन कोम्मुनलिस्म,रेलीजन,मोडेरनिटी एंड सेकुलरआइजेटन” (1997) मे दिये गए विचारों का यह पुस्तक विस्तार है इस बात को ठीक व तार्किक ढ़ंग से समझाने के लिए क्यों और कैसे भारतीय जनता पार्टी और संघ परिवार आज इतने शक्तिशाली हो चुके है? लेख़क महोदय कहते है हमे भारतीय धर्मनिरपेक्षता और इसके एतिहासिक उत्तपति के दावो के बारे मे हमे आलोचनात्मक रूप से पुनः

---

[4] अमरेश मिश्रा ; उत्तर प्रदेश:पोलिटिक्स इन फ़्लक्स

[5] ज़ोया हसन:ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रैस 2002

मूल्यांकन करना होगा। विचारों के इस आवश्यक युद्ध मे मुख्य धारा का उदारवादी प्रवचन हिंदुत्व की काट के लिए पर्याप्त नहीं है। क्यूकि दोनों ही भारतीय सभ्यता के स्थायित्व पर कुछ आधारों कों साझा करते है। और कैसे प्राथमिक हिंदूवाद और संस्कृति ने आज के सामाजिक क्रम कों गढ़ा है आधार दिया है। यह पुस्तक सैद्धान्तिक रूप से ऐसे दृष्टिकोण का विरोध करती है, और न केवल भारतीय राज्यो की धर्मनिरपेक्षता की वकालत अपितु सभ्य समाज़ के अपेक्षाकृत और अधिक धर्मनिरपेक्षता को बढावा देती है। इस पुस्तक के अनुसार संघ परिवार सही बल है यह दूर की बात है। हिंदू राष्ट्र लाने का संघ परिवार का दावा न केवल नाम का अपितु सभी रूपो मे ,कुछ धार्मिक अल्पसंखयकों के अधिकारों का गम्भीर स्थायी कटौती, शब्दों और बल द्वारा जों हिंदुत्व गतिविधियों का विरोध करते है, पर नज़र रखना और हाशिए पर लाने का कार्य करना आदि ऐसे कार्य है जों कि न केवल सांस्कृतिक रूप से बल्कि ऐसे तात्विक आधार बनते है जों कि वर्तमान असमानता,आर्थिक सामाजिक व राजनीतिक जीवन को जन्म देते है। उसे हटाने हेतु हमे साम्यवाद की अपेक्षाकृत अधिक नव उदारवादी क्रम बनाना होगा।[6]

राकेश सिन्हा ने अपने लेख “एंटि मोदीस्म इस नॉट एन अलटेरनाटिव टू हिंदुत्व (2017) मे कहते है कि पूरे देश मे फ़ैले हुए छद्म धर्मनिरपेक्ष बलों ने हिंदुत्व विरोधी सामाजिक गठबंधन की प्रयोगशाला के रूप मे गुजरात विधानसभा चुनाव 2017 को देखा जो कि राष्ट्रीय राजनीति के लिए एक नया दर्पण हो सकता है। चुनाव प्रचार और राजनीतिक बातचीत ने इस प्रश्न को बिना उत्तर दिए ही छोड़ दिया कि हिंदुत्व की विचारधारा और नरेंद्र मोदी की राष्ट्रीय नेता के रूप मे स्वीकार्यता अभी भी है या नहीं। भारतीय जनता पार्टी को हराने की इच्छा और इसका राष्ट्रीय राजनीति पर पड़ने वाला प्रभाव ने अत्यंत उत्साहित करने वाला राजनीतिक घटना बना दिया था। छद्मधर्मनिरपेक्ष दलों ने गुजरात के मतदातावों पर विशाल मनोवैज्ञानिक दबाव डाला और यह भ्रम मे रखा कि वे दुर्जेय राजनीति के वाहक हो सकते है। भारतीय जनता पार्टी के ख़िलाफ़ माहौल गुजरात मे बनाना उनके लिए

[6] अचिन वणिक,तुलिका बुक्स,2017

न्यायोचित था क्योकि यह मोदी और भारतीय जनता पार्टी अध्यक्ष अमित शाह का गृह राज्य है ।राज्य मे सघन प्रचार प्रधानमंत्री द्वारा यह सिद्ध करता है कि यह राज्य कितना महत्व रखता है ।[7]

उत्तर प्रदेश मे हिंदुत्व की राजनीति[8]

इंग्लिश ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी प्रारंभ मे केवल व्यापार के लिए आई थी । परंतु उस समय के भारतीय राजनीतिक दुर्दशा का लाभ उठाकर कंपनी ने व्यापारिक उद्देश्यों के साथ राजनतिक क्रियाकलाप मे भाग लेना शुरू कर दिया । बक्सर के युद्ध (1764) से ईस्ट इंडिया कंपनीने भारत मे अपने राजनीतिक पकड़ की शुरुवात की । 1813 ई. के चार्टर से भारत मे ईसाई मिशनरियो को धर्म प्रचार की छूट प्राप्त हुई । इन ईसाई धर्म मिशनरिओ का दृस्टिकोण भारत के प्रति बड़ा तिरस्कार पूर्ण था,उनका एक मात्र उद्देस्य भारत मे अपनी सर्वोच्चता सिद्ध करना था । अंग्रेज अपनी नीति के अनुसार अधिकांश भारतियों को ईसाई बनाकर भारत मे अपने साम्राज्य को सुढ़ृन करना चाहते थे । यह तथ्य कंपनी के अध्यक्ष माग्लेज महोदय के हाउस ऑफ कॉमन मे दिये एक वक्तयव से प्रकट होता है । उन्होने कहा " देवयोग से भारत का विस्तृत साम्राज्य ब्रिटैन को मिला है ताकि ईसाई धर्म का पताका एक छोर से दूसरे छोर तक फ्हराया जा सके । प्रत्येक व्यक्ति को शिघ्रातीशीघ्र समस्त भारतियों को ईसाई बनाने के महान कार्य को पूर्णतया सम्पन्न करने मे अपनी समस्त शक्ति लगा देनी चाहिए ।[9]"

इस कथन से स्पष्ट होता है कि कंपनी सरकार ईसाई धर्म को बढ़ावा दे रही थी । ईसाई धर्म को स्वीकार करने वाले कों सरकारी नौकरी, उच्च पद एव अनेक सुविधाएप्रदान की जा रही थी । 1813 के कम्पनी के आदेश पत्र द्वारा ईसाई पादरियों कों आज्ञा प्राप्त करके भारत मे आने की सुविधा प्राप्त हों गई । परिणामतः बड़ी संख्या मे ईसाई पादरी भारत आए जिनका मुख्य उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार करना था । परिणामतः 1850 ई मे पास किए गए ' धार्मिक निर्योग्यता अधिनियम ' द्वारा हिन्दू रीति-रिवाजों मे परिवर्तन लाया गया, अर्थात धार्मिक परिवर्तन से

[7] इंडियनएक्सप्रेस,दिसंबर,16,8

[8] 1870 से 1920 तक का काल

[9] यूनिकसामान्य अध्ययन 2013

पुत्र अपने पिता की सम्पति से वंचित नहीं किया जा सकता था। इस क़ानून का मुख्य लाभ ईसाई धर्म कों अपनाने वालों कों था।अंग्रेजों की इस नीति ने हिन्दू और मुसलमानों मे कम्पनी के प्रति सन्देह उत्पन्न कर दिया।

इन घटनाओ ने तत्कालीन भारतीय समाज को पुनर्जागृत होने कोविवश कर दिया। कम्पनी की पाश्चात्य शिक्षा पद्धति से आधुनिक तत्कालीन युवा मन चिंतनशील हों उठा, तरुण व वृद्ध सभी इस विषय मे सोचने कों विवश हुए। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति से प्रभावित लोगों ने हिन्दू सामाजिक रचना, धर्म, रीति-रिवाजों व परम्परावों को तर्क की कसौटी पर कसना प्रारंभ कर दिया। इससे अनेक सामाजिक और धार्मिक आन्दोलनों ने जन्म लिया। भारतीय समाज कों पुनर्जीवन प्रदान करने का प्रयत्न प्रबुद्ध्य भारतीय सामाजिक एवमधार्मिक सुधारकों, सुधारवादी ब्रिटिश गवर्नर जनरलो और पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार ने किया। अंग्रेजी शिक्षा ने भारत मे धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र मे महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। इसका सर्वाधिक प्रभाव भारतीय मध्यम वर्ग पर पड़ा। इस शिक्षा के प्रभाव मे आकर ही भारतीयों ने विदेशी सभ्यता और साहित्य के बारे मे ढेरों जानकारी एकत्र की तथा अपनी सभ्यता से तुलना कर सच्चाई कों जानना चाहा। प्रारंभ मे अर्थात 1813 तक कम्पनी प्रशासन ने भारत के सामाजिक,धार्मिक, एवं सांस्कृतिक मामलों मे अहस्तक्षेप की नीति अपनाए, कारण कि अंग्रेज हमेशा ही इस बात से सशंकित रहते थे कि इन मामलों मे हस्तक्षेप करने से रूढिवादी भारतीय लोग कम्पनी की सत्ता के लिए ख़तरा उत्पन्न कर सकते है। परंतु 1813 ई के बाद ब्रिटिश शासन ने अपने व्यवसायिक हितों और व्यापारिक लाभों के लिए सीमित हस्तक्षेप करना प्रारंभ कर दिया।जिसके परिणाम स्वरूप कलांतर मे अनेक सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलनों ने जन्म लिया।

उत्तर प्रदेश मे धर्म सुधार आंदोलन : 1860 से 1920का काल

उत्तर प्रदेश जहा कि(तत्कालीन समय मे मध्य प्रांत के नाम से जाना जाता था),मुख्य रूप से पहले मुस्लिम धर्म सुधार आंदोलन ने जन्म लिया।जैसे वहाबी आंदोलन तथा वलीउल्लाह आंदोलन,इस आंदोलन को भारत मे सबसे ज़्यादा प्रचारित करने का श्रेय सैयद अहमद बरेलवी एव इस्लाम हाजी मौलवी मुहम्मद को दिया जाता है। भारत मे वहाबी आंदोलन ईरान से प्रेरित होकर चलाया गया। सर्वप्रथम इस आंदोलन ने ही मुसलमानों पर पड़ने वाले पाश्चात्य प्रभावों का विरोध किया।आंदोलन द्वारा इस्लाम धर्म की पवित्रता को बचाये रखने का

प्रयास किया गया। इस आंदोलन को 1870 मे दबा दिया गया।इस आंदोलन का मुख्य केंद्र पटना था।पूर्वी भारत मे इस आंदोलन के मुख्य नेता शेख़ करामत अली तथा हाजी शरीयतुल्ला थे।1870 मे प्रकाशित डबल्यू. हंटर की पुस्तक ''इंडियन मुसलमान'मे सरकार को सलाह दी गई कि वे मुसलमानों से समझौता कर तथा उन्हे कुछ रियायते दे कर अपनी ओर मिलाये। "इंडियन मुसलमान' की सुझावों पर ब्रिटिश सरकार ने सर सैयद अहमद को अपने पक्ष मे तैयार किया। सैयद अहमद ने मुस्लिम समुदाय को आधुनिक बनाने एवंइस्लाम मे व्याप्त बुराइयों कों दूर करनेका प्रयत्न किया। उन्होने पीरी-मुरीदी प्रथा (पीर लोग अपने शिष्यों कों कुछ रहस्यमयी शब्द देकर गुरु बन जाते थे) एव दास प्रथा को समाप्त करने का प्रयत्न किया। उनके विचार उनकी पत्रिका ''तहज़ीब उल अखलाक" मे भी मिलते है। उन्होने 1875 मे अलीगढ़ मे एक एंग्लो मुस्लिम स्कूल जिसे एंग्लो ओरिएंटल स्कूल भी कहा जाता था, की स्थापना की।[10]

देवबंद स्कूल: इस स्कूल की स्थापना 1866-67 ई मे मुहम्मद कासिम ननौत्वी एव रशीद अहमद गंगोही द्वारा स्थापित देवबंदस्कूल के विद्यार्थी कों इस्लाम धर्म के प्रभाव कों फैलाने के लिए किया गया था। 1888 ई मे देवबंद संस्था के उलेमावों ने फ़तवा जारी किया। इस संस्था के नेता महमूदुल-हसन ने संस्था के धार्मिक विचारों कों राजनीतिक,बौद्धिक स्वरूप देने का प्रयास किया। शिबली नुमानी आदि फ़ारसी और अरबी के प्रसिद्ध विद्वान थे।

इन संस्थाओ की स्थापना के फलस्वरूप मुस्लिम धर्म और उनकी संघ की संस्था का प्रभुत्व बनता जा रहा था। हिन्दू धर्म मध्य काल की शासन व्यवस्थासे ही उपेक्षित हो रहा था। हिन्दू धर्म मे एक पुनर्जागरण की आवश्यकता महसूस की जाने लगी थी। 1791 मे जोनाथन डंकेनद्वारा स्थापित संस्कृत स्कूल जो कि धार्मिक नगरी वाराणसी मे स्थापित था, इसने शिक्षा के माध्यम से हिंदुत्व का प्रचार प्रसार बनाये रखा।1860 से 1920 की अवधि मे हिंदुत्व की वंशावली के रूप मे स्वामी विवेकानन्द के साथ साथ विनायक दामोदर सावरकर के जीवन व कार्यों से कर सकते है। 1893 मे स्वामी विवेकानंद ने जब विश्व धर्म संसद के बारे मे सुना तो उन्हे यह हिंदुत्व के प्रचार प्रसारहेतु स्वर्णिम अवसर प्रतीतहुआ। तमाम कठिनाइयों का सामना करते हुए भी वे शिकागो मे

[10] यूनिकसामान्य अध्ययन , 2013

आयोजित विश्व धर्म संसद मे भाग लिए और हिंदुत्व का दर्शन पर आधारित अपने ओज़स्वी भाषण से उपस्थित जनसमूह कों मंत्रमुग्ध कर दिया ।उन्होने पाश्चात्य जगत कों भारतीय संस्कृति एवं दर्शन से अवगत कराया । धर्म संसद मे स्वामीजी ने अपने भाषण मे भौतिकवाद एवं आध्यात्मवाद के मध्य संतुलन बनाने की बात कही । विवेकानन्द ने पूरे संसार के लिए एक ऐसी संस्कृति की कल्पना की जो पश्चिमी देशों के भौतिकवाद एव पूर्वी देशों केआध्यात्मवाद के मध्य संतुलन बनाने की बात कर सके तथा सम्पूर्णविश्व कों खुशिया प्रदान कर सके । उनके ओजस्वी भाषण कों सुनकर "न्यूयार्क हेराल्ड" नामक पत्र लिखता है, "जिस देश मे हिंदुत्व के दर्शन के इतने बड़े विद्वान निवास करते हों उस देश मे ईसाई धर्म प्रचारक भेजना वेवकूफी होगी ।" इस सफलतापूर्ण भाषण ने विवेकानन्द को विश्व क्षितिज पर ला कर स्थापित कर दिया । 1897 तक विश्व के विभिन्न देशों की यात्रा करते हुए वे पुनः भारत वापस आए । स्वामी विवेकानन्द के विचार आशावान व ऊर्जा युक्त होते थे । वे पश्चिम के भौतिकवाद व वैज्ञानिक दृष्टिकोण की तुलना पूर्वके आध्यात्मिक श्रेष्ठता से करते हुए अपने तर्कों से श्रेष्ठ सिद्ध कर ले जाते थे । स्वामी विवेकानन्द के सन्देश का वाराणसी में स्थित राम कृष्ण मठ से व्यापक प्रचार प्रसार हुआ ।

1920 से 1945 तक के काल मे उत्तर प्रदेश मे हिंदुत्व की राजनीति

इस काल के दौरान हिंदुत्वके सर्व श्रेष्ठ विचारक विनायक दामोदर सावरकर हुए । विनायक दामोदर सावरकर जिन्होने अपने निबंध "हिंदुत्व : हिन्दू कौन है?" मे केंद्रीय विचार के रूप मे हिंदुत्व कों परिभाषित करने का प्रयास किया है । हिंदुत्व के प्राचीन दृष्टिकोण कों किनारे करते हुए उन्होने कहा कि हिंदुत्व प्राथमिक रूप से धर्म का मामला नहीं है| हिंदूवाद, हिंदुत्ववाद का एक भाग हैउनके अनुसार हिन्दू वह है जो भारत वर्ष मे निवास करता है । विनायक दामोदर सावरकर मित्र मेला नामक संघ बनाया जो बाद मे अभिनव भारत के रूप मे जाना गया ।विनायक दामोदर सावरकर को 20वी सदी के हिंदुत्व का सबसे बड़ा नायक माना जाता है ।

भारत मे अंग्रेजी साम्राज्यवादी नीतिया संप्रयदायिक संस्थानोंके बनने और विकसित होने का स्वर्णिम अवसर प्रदान करती रही ।एक सांप्रदायिक संस्थान केवल व्यक्तिगत नेतृत्व की आकांक्षावों और संप्रदाय विशेष के हितों की रक्षा की भावनावों कों ही पूरा नहीं करता था आपितु विदेशी साम्राज्यवाद की भी अप्रत्यक्ष रूप से

सहायता करता था । इसीलिये तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने तत्कालीन सांप्रदायिक संघटनों के उभरने को पूरा प्रोत्साहित किया ।

हिन्दू महासभा का उदय ; 1910 मे इलाहाबाद के प्रमुख हिन्दू प्रबुद्ध जनों ने अखिल भारतीय हिन्दू महासभा बनाने का निश्चय किया । हिन्दू महासभा ने हरिद्वार मे अपने मुख्य कार्यालय स्थापित किया । और महत्वपूर्ण हिन्दू मेला के अवसरों पर सम्मेलनों का सफ़लतापूर्वक आयोजन किया ।1922 मे प्रथम असहयोग आंदोलन की समाप्ति पर मालबार तट और मुल्तान मे विस्तृत सांप्रदायिक दंगे हुए इससे हिंदुओ के जान और माल की व्यापक क्षति हुई । हिंदू धर्म के एक वर्ग ने हिन्दुवों को आत्मरक्षा के लिए संघठित करने का निश्चय किया । हिन्दू महा सभा के ग़ठन के तर्क की व्याख्या करते हुए पंडित मदन मोहनमालवीय ने कहा, “मुसलमान और ईसाई , शताब्दियों से अपने धर्म का प्रचार के लिए कार्य करते रहे है । भारत के मुसलमानों का मुख्य भाग इन्ही हिन्दू धर्म से परिवर्तित लोगों का है । इस प्रक्रिया को रोकने के हेतु यह आवश्यक है कि एक हिन्दू मिशन (प्रचारक संस्था) बनाया जाय ।“ इसी प्रकार मुस्लिम लीग द्वारा चुने हुए निकायों मे अधिक प्रतिनिध्त्व कीमांग का प्रतिकार करने के लिए और उन्हे न्याय दिलाने के लिए यह आवश्यक था कि हिन्दू को संगठित किया जाय । इस हिन्दू महासभा के आरम्भिक दिनो मे, शुद्धि और संघठन यह इसके प्रमुख ध्येय थे । पंडित मदन मोहन मालवीय ने इस आंदोलन के सामाजिक और आर्थिक आंदोलन पर पर भी बल दिया । भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस राजनैतिक संस्था होने के कारण वह सामाजिक, सांस्कृतिक तथा अराजनैतिक क्षेत्रों मे कार्य नहीं कर रही थी । अतएव हिन्दू समाज से सामाजिक कुरीतियों, बाल विवाह, जाति प्रथा,अश्पृश्यता दूर करने के लिए सभा को संघटित किया गया । इसीलिये पंडित मदन मोहन मालवीय ने कहा, “हिन्दू महासभा काँग्रेस की प्रतिद्वंदी नहीं अपितु उसके कार्य की अनुपूर्ति और सुदृढ बनाने के लिए है ‘। 1938 मे जब विनायक दामोदर सावरकर इसके प्रधान बने तो भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की मुसलमानों कोंप्रसन्न करने की नीति से दु:खी होकर सावरकर ने हिन्दू राष्ट्र का नारा दे दिया ।सावरकर का दावा था कि भारत हिंन्दू जनका देश है, जिसमे केवल हिन्दू जाति ही रहती है और यहा मुसलमानों तथा अन्य अल्पसंख्यकों कों एक अल्पसंख्यक जाति का स्थान ही मिल सकता है । विनायक दामोदर सावरकर की मृत्यु के बाद श्यामा प्रसाद मुखर्जीइसके प्रधान बने और उन्होने इसे कुछ अधिक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण दिया । हिन्दू महासभा मुस्लिम लीग के पाकिस्तान की मांग केप्रतिकार स्वरूप अखंड हिन्दुस्तान का नारा लगाती थी ।

बनारस हिन्दू विश्विद्यालय की स्थापना; 1916 पंडित मदन मोहन मालवीय के अथक प्रयास से बनारस हिन्दू विश्विद्याल्य की स्थापना होती है । इससे पहले इसे सेंट्रल हिन्दू स्कूल के नाम से जाना जाता था ।इस संस्था की उत्तर प्रदेश मे हिंदुत्व की स्थापना मे अमूल्य योगदान रहा है हिंदुत्व की संस्कृति से ओत प्रोत इस संस्था मे पुरातन भारतीय धार्मिक शिक्षा के साथ साथ आधुनिक समय की माँग के अनुरूप आधुनिक शिक्षा की व्यवस्था उपलब्ध है । पुरातन और आधुनिकता मे अदभुद समन्वय स्थापित करने मे यह विश्विद्यालय सफल रहा है । राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रथम प्रमुख केशव बलिराम हेडगेवार के 1931 मे बनारस हिन्दू विश्विद्यालय मे गोलवांकर के मुलाक़ात से ही विश्विद्यालय मे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की नीव पड़ गई थी । गोलवांकर ने प्रभावित होकर तुरंत ही राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ कों स्वीकार कर लिया ।इस प्रकार बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ की नीव पड़ गई थी।

माधव सदाशिव गोवलंकर जो कि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे 1924 मे प्रवेश लिए व 1926 मे बी.एस.सी. व 1928 मे एम.एस.सी. की परीक्षा प्राणी शास्त्र मे उत्तीर्ण किए । उसके बाद बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे प्राणी शास्त्र विभाग मे निदर्शक के रूप मे पद सभाला । विश्विद्यालय मे अध्यन के दौरान विषय के साथ- साथ संस्कृत महाकाव्यों,पाश्चात्य दर्शन,श्री रामकृष्ण परमहंस,स्वामी विवेकानन्द की ओजपूर्ण व प्रेरक विचार सम्पदा, भिन्न-भिन्न उपासना ग्रंथो तथा शास्त्रीय विषयों का आस्था पूर्ण अध्ययन किया । इसी कारण उनकी रुचि अध्यातम की ओर भी हो गई थी । अपने विद्यार्थी जीवन से ही माधव राव अपने अपने मित्रों के अध्ययन मे उनका मार्गदर्शन करते रहते थे । और अब तो अध्यापन उनकी आजीविका का साधन ही बन गया था । उनके अध्यापन का विषय प्राणी शास्त्र था, परंतु विश्विद्यालय प्रशासन ने उनकी प्रतिभा पहचान कर उन्हे बी.ए. की कक्षा के छात्रों को अंग्रेजी व राजनीति शास्त्र भी पढ़ाने का अवसर दिया । वे छात्रों के बीच गुरुजी नाम से प्रसिद्ध हुए । डॉ हेडगेवार द्वारा भेजे गए नागपुर के स्वयंसेवक भैयाजी दानी के द्वारा गुरुजी संघ के संपर्क मे आए और उस शाखा के संघ चालक भी बने । सयुक्त प्रांत केइस महान शिक्षण संस्था के युवा वर्ग कोगुरुजी जैसे ओजस्वी व्यक्तित्व से सीधा संपर्क परिसर ही नहीं अपितु पूरे मध्य भारत मे इसने हिंदुत्व की एक नई अलख जगा दी।

राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ के मुख्यालय नागपुरसे मुरलीदर दत्तात्रेय देवरास को लखनऊ 1937 मे उनके भाई मधुकर दत्तात्रेय देवरास को बंगाल मे व सयुक्त प्रांत मेबनारस हिन्दू विश्वद्यालय के अतिरिक्त दो अन्य शिक्षण संस्थाओ पर ध्यान केंद्रित किया जैसे भाऊराव देवरास जो की स्नातक हो चुके थे फिर भी लखनऊ विश्विद्यालय में प्रवेश लिए ताकि नवयुवकों से संपर्क आसानी से साधा जा सके। 1942 मे मधुसूदन वामन मोघे कोइलाहाबाद क्षेत्र मे प्रचारक बनाकर भेजा। राजेंद्र सिंह जो कि उस समय इलाहाबाद विश्विद्याल्य से भौतिकी मे परास्नातक कर रहे थे, मोघे के संपर्क मे आकर 1942 मे राष्ट्रीय स्वयंसेवक से जुड़े व 1944 मे प्रतापगढ़ के प्रचारक बन गए। पश्चिम उत्तर प्रदेश मे कानपुर के सनातन धर्म कालेज में 1937 में बाबासाहेब आप्टेभेजे गए। यही पर शाखा स्थापित की गई जिसमे सुंदर सिंह भण्डारी व दीनदयाल उपाध्याय जैसे व्यक्तित्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ा व प्रचारक बन गए।

दीन दयाल उपाध्याय : दीनदयाल जी का जन्म 25 सितंबर 1916 कों हुआ था। वे कानपुर विश्विद्यालय से बी.ए. उतीर्ण करने के बाद सिविल सेवा परीक्षा उतीर्ण किए ,परंतु त्यागपत्र दे दिया। छात्र जीवन से ही ये राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्य रहे। 1942 से पूर्णतया कालेज छोड़ने के बाद ये प्रचारक बन गए व एकनिष्ठ भाव से संघ का संगठन कार्य देखने लगे। उन्होने भारत की सनातन विचारधारा कों युगानुकूल रूप मे प्रस्तुत करते हुए देश को एकात्म मानववाद जैसी प्रगतिशील विचारधारा दी। राष्ट्र जीवन दर्शन के निर्माता दीनदयाल जी का उद्देश्य स्वतंत्रता की पुनर्रचना की प्रयासों के लिए विशुध्द भारतीय तत्व दृष्टि प्रदान करना था। उन्होने भारत की सनातन विचारधारा को युगानुकूल रूप मेप्रस्तुत करते हुए कहा आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य सामान्य मानव का सुख है, विचार स्वतंत्र के इस युग मे मानव कल्याण के लिए अनेक विचारधाराओको पनपने का अवसर मिला है। इसमें साम्यवाद,पूजीवाद,अंत्योदय,सर्वोदय आदि प्रमुख हैं।किन्तु चराचर जगत को संतुलित,स्वस्थ,व सुंदर बनाकर मनुष्य मात्र पूर्णता की ओर ले जा सकने मे सक्षम एकमात्र प्रक्रमसनातन धर्म द्वारा प्रतिपादित जीवन विज्ञान ,जीवन-कला व जीवन दर्शन है। संस्कृतिनिष्ठ दीनदयाल उपाध्याय जी के द्वारा निर्मित राजनैतिक जीवनदर्शन का पहला सूत्र है उनके ही शब्दों मे ," भारत मे रहने वाला और इसके प्रति ममत्व की भावना रखने वाला मानव समूह एक जन है। उनकी जीवन प्रणाली, कला, साहित्य,दर्शन सब भारतीय संस्कृति है। इसीलिये भारतीय राष्ट्रवाद का आधार यह संस्कृति है। इस संस्कृति मे जब तक निष्ठा रहेगी तब तक भारत एकात्म रहेगा।"

वसुधेव कुटुंबकम हमारी सभ्यता मे निहित है । इसी के अनुसार भारत मे सभी धर्मों कों समान आधिकार प्राप्त है।[11]

उत्तर प्रदेश मे हिंदुत्व की राजनीति : 1945 से लेकर आज तक

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के कृत्यों सेउत्तर प्रदेश (तत्कालीन यूनाइटेड प्रोविन्स ऑफ आगरा व अवध) में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के शाखा विस्तार व हिन्दू महासभा के कार्यो से इस क्षेत्र की अधिकांश हिन्दू जनमानस पर अपना छाप छोड़ना प्रारंभ कर चुकी थी । 1947 मे भारत पाकिस्तान विभाजन और उस समय की सत्ताधारी पार्टी जो की कॉंग्रेस की थी, द्वारा किया जाने वाला मुस्लिम तुस्टिकरण जो की नेहरू के सेकुलर के आदर्श मे फल फूल रहा था ।उस समय अधिसंख्यक हिन्दू जनमानस अपने कोअसहाय महसूस कर रहा था । भारत पाकिस्तान के बटवारे से उत्पन्न हिंसा में स्वयंसेवकों द्वारा किए गए अथक परिश्रम की प्रशंसा 7 दिसंबर 1947 को दिल्ली मे माधव सदाशिव गोलवांकर ने की । 27 जनवरी 1928 को हिन्दू महासभा के नेता विष्णु घनश्याम देशपांडे के द्वारा दिल्ली में बुलाये गए सम्मेलन मेंहिन्दू जनमानस जो संख्या बल मे पर्याप्त थे, ने भाग लिया । उस समय इन संस्थाओ की वज़ह से ही तत्कालीन भारत की 84.98 प्रतिशत आबादी जो की 1951 की जनसंख्या के आधार पर थी, के अभिभावक के रूप में अपने को हिन्दू राष्ट्रवादी परिपकव्व पा रहे थे । कॉंग्रेस की धर्मनिरपेक्ष छवि व महात्मा गाँधी का मुस्लिम पक्ष मे बिना किसी तर्कके खड़ा होना तत्कालीन समय के राष्ट्रवादी वर्ग के लिए गंभीर चुनौती थी । 31 जनवरी 1948 कों महात्मा गाँधी की हत्या नाथू राम गोंडसे द्वारा कर दी जाती है । इसके बाद राष्ट्रीय स्वय सेवक संघपर मुख्य षडयंत्रकारी होने का संदेह पंडित नेहरू द्वारा सरदार पटेल से किया जाता है परंतु सरदार पटेल द्वारा उन्हे आश्वस्त किया जाता है कि इन घटनाओ के पीछे हिन्दू महासभा केएक ईकाई का हाथ है और आर.एस.एस. हत्या में लिप्त नहीं है । परंतु जवाहर लाल नेहरू को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघपर संदेह लगा रहता है । मध्य प्रांत में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघकी 579 शाखाओ से संबंधित 20000 स्वयं सेवकों को बंदी बनाने के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को प्रतिबंधित कर

[11] हांसन,थॉमस ब्लोम, द सैफ्रन वेव: डेमोक्रेसी एंड हिन्दू नेशनलइस्म इन मॉडर्न इंडिया, प्रिंस्टोन यूनिवरसिटी प्रैस,1999

दिया गया । हिन्दू महासभा को इस अभियान मे किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं लगा । अगस्त 1948 में एम.एस.गोलवांकर इस शर्त पर कि वे नागपुर मे ही रहेंगे, रिहा होकर बाहर आते हैं और तब आर.एस.एस. के विधिक अस्तित्व के लिए पंडित नेहरू से पत्र व्यवहार करते हैं कि आर.एस.एस. नवयुवकों को मार्गदर्शित करने के लिए बना है जो साम्यवाद के विरुद्ध मार्ग दर्शित करेगा जो कि इस समय देश की सीमाओ पर अति रूप ले रहा है । नेहरू ने इसका उत्तर दिया कि सरकार के पास इस बात के प्रमाण है कि आर.एस.एस. राष्ट्र विरोधी गतिविधियों मे संलिप्त रहा है, और संबंधित प्रकरण गृह मंत्री की जिम्मेदारी मे आता है । तब गोलवांकर ने सरदार पटेल को पत्र लिखा और आर.एस.एस. पर प्रतिबंध के बारे मे पूछा? उन्होने कहा कि काँग्रेस जो कि राजनीतिक क्षेत्र मे देश के लिए अच्छा कर रही है, उसी प्रकार आर.एस.एस. देश के सांस्कृतिक क्षेत्र मे ,देशभक्ति, भ्रातृत्व व परोपकार को प्रोत्साहित करती है ,अतः हमे एक दूसरे कीमदद करनी चाहिए । सरदार पटेल जो कि पहले ही यह प्रस्ताव दे चुके थे किआर.एस.एस. सदस्यों को केवल काँग्रेस को स्वीकार करने मे निष्ठावान होना चाहिए , न कि अलग रहने या विरोध करने में । पटेल ने पूर्वशर्त रूप में यह रखा । गोलवांकर को अपने विस्तृत फ़ैले संगठन की पूरी क्षमता का चरित्र परिवर्तित करना तनिक भी स्वीकार न था । गोलवांकर ने सरदार पटेल के माँग के विरुद्ध 9 दिसम्बर 1948 को सत्याग्रह किया । इस पर गतिविधि को पुनः शुरू करने का अभियोग लगाकर गोलवांकर सहित 50000 स्वयं सेवकों को जेल मे बंद कर दिया गया । जनवरी1949 मे सत्याग्रह के निलंबन के दौरान एकनाथ रानाडे , पी.बी.दानी और बालसाहेब देवरास ने संगठन के लिए एक संविधान लिखा जोकी काफी हद तक सरदार पटेल के अपेक्षावों पर खरा उतरता था अतः जून 1949 मे पटेल ने संविधान की स्वीकृति को स्वीकार कर लिया और 11 जुलाई 1949 को आर.एस.एस. पर से प्रतिबंध हटा लिया गया ।

अयोध्या मामले का पहली बार प्रगटन : रामजन्मभूमि निस्संदेह हिन्दू महासभा के लिए विशाल हिन्दू जनमानस को एकत्रित करने के लिए एक प्रतीक था । 1528 मे उस पवित्र स्थान पर स्थित मंदिर को ढहा कर मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर की आज्ञासे वहा मस्जिद का निर्माण कर दिया गया ।इस तरह का कथन कहा जाता है । पुरातत्व विभाग का एसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है कि वहा मंदिर का अस्तित्व था या यह राम की जन्म भूमि है या आज की अयोध्या रामायण काल की राजधानी वाली शहर है जहा रामायण काल मे राम का जन्म हुआ । यह पूर्णतया विश्वास का प्रश्न है ।18 वी शताब्दी के अंत मे सामान्यतया यह विश्वास किया जाता है

कि राम की जन्म भूमि छोटे से चबूतरे से चिन्हित की गई थी जों कि मस्जिद के ही समीप थी। यह हिन्दू तीर्थयात्रियों के लिए पूज्यनीय स्थल है। 1850 मे एक विवाद उभरा। 1853 मे वैरागियों द्वारा यह कहा गया कि कि राम जन्म भूमि स्थल पर स्थित मस्जिद पर हमला करना चाहिये। परंतु बाद मे एक समझौता द्वारा तय हुआ कि मस्जिद के बाहर स्थित चबूतरे पर हिन्दू श्रद्धालू पूजा पाठ करते रहेंगे। 1883 मेंब्रिटिश प्राधिकारियों से पंडित गणो ने मंदिर बनवाने का अनुरोध किया। परंतु मस्जिद की निकटता के कारण ब्रिटिश प्राधिकारियों ने मना कर दिया। यह खेल पुनः 22 व 23 दिसम्बर 1949 की रात को चला जब किसी ने मस्जिद का कुछ भाग तोड़कर वहा रामलला की मूर्ति रख दी । वहा 9 दिनों तक अखिल भारतीय रामायण सभा द्वारा जिसका प्रतिनिध्त्व बाबा राघव दास, स्वामी करपत्रिजी और हिन्दू महासभा के नेता दिग्विजय नाथ द्वारा किया जा रहा था, लगातार रामचरित मानस का पाठ किया गया। 23 दिसम्बर को 5000 से 6000 भक्त रामलला प्रगटन स्थल पर एकत्रित होकर भजन गाने लगे। 26 दिसम्बर को तत्कालीन जिलाधिकारी के.के.नायर ने मूर्ति को हटाने का आदेश गोविंद वल्लभ पंत के आदेश पर किया परंतु नेहरू द्वारा यथास्थित रखने पर आदेश से मना कर दिया ।यह अधिकतम संभव है कि यह काम हिन्दू राष्ट्रवादीयों द्वारा ही किया गया होगा परंतु इसका कोई सुराग़ मिला। आर्य समाज और हिन्दू महासभा दोनों ने इस अवसर को हथियार की तरह प्रयोग किया है। 25 दिसम्बर को आर्य समाज, फ़ैज़ाबाद ने यह माँग कर दी कि भारत मे एसे सभी धार्मिक स्थल जो विध्वंश या मस्जिद मे बदल दिये गए पुनः हिंदुओ कों सौपते हुए उसी रूप मे प्रयोग किए जाएजैसा वे मूलतः रूप मे प्रयोग होते थे। हिन्दू महासभा ने इस प्रकरण को अपने राजनीतिक फ़ायदा के लिए प्रयोग किया। शीघ्र ही उपचुनाव मे हिन्दू महासभा ने फ़ैज़ाबाद लोकसभा मे महासभा ने लाभ ले लिया ।जैसे ही मूर्ति की ख़ोज के बारे मे पता चला वी.जी.देशपांडे जों कि पार्टी के महासचिव थे , ने अयोध्या का भ्रमण तीन बार किया। एक परिपत्र निकालकर हिन्दू महासभा के सभी कार्यकर्ताओ को बुला 27 मार्च 1950 को राम जन्मभूमि दिवस मनाने का आवाहन किया गया।

विश्व हिन्दू परिषद: विश्व हिन्दू परिषद एक हिन्दूसंगठन है जो कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की अनुषांगिक शाखा है। इसका चिन्ह बरगद का पेड़ है,जो यह व्यक्त करता है कि जिस प्रकार विशाल बरगद के वृक्ष की जड़े गहराई तक समाई रहती है उसी प्रकार हिन्दू धर्म की जड़े भी गहरी अर्थात अति प्राचीन है। इसका नारा धर्मो रक्षति रक्षतः है अर्थात धर्म भी उसी की रक्षा करता है , जो धर्म की रक्षा करता है। विश्व हिन्दू परिषद

की स्थापना 1964 में हुई ।इसके संस्थापकों मेंस्वामी चिन्मयानंद.एस.एस. आपटे, मास्टर तारा हिन्द थे । इसका प्राथमिक कार्य अधिक से अधिक हिन्दू धार्मिक नायकों को एक मंच प्रदान करना था ।विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना 1964 में धर्मांतरण के विरुद्ध राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की प्रतिक्रिया का परिणाम था । ईसाईधर्म के अल्पसंख्यकों द्वारा धर्मांतरण गम्भीर चिंता का विषय तब बना जब महाराष्ट्र में 1964 में अन्तरराष्ट्रीय ईसाई सम्मेलन बॉम्बे में आयोजित किए जाने की घोसणा हुई । इस अवसर पर 250 भारतीय नागरिको को ईसाई धर्म में धर्मांतरण कराना था । इस घटना के प्रतिशोध में मुम्बई निवासी आधुनिक गुरु स्वामी चिन्मययानंद ने कहा यदि यह घटना होती है , तो मैं इसके प्रतिशोध में 500 ईसाई धर्मावलंबियों को हिन्दू धर्ममें परिवर्तित करा दूँगा । इस घोसणा से कैथॉलिक संस्था ने अपना कार्यक्रम स्थगित कर दिया । एस . एस. आप्टे जो कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुख्य प्रचारक थे, विश्व हिन्दू परिषद के मुख्य रचनाकार माने जाते हैं ।

कैथोलिक संस्थाए जो कि विश्व स्तर पर ईसाई धर्म का प्रसार करती हैं, उन्ही से प्रभावित होकर विश्व स्तर पर हिन्दू धर्म को प्रचार प्रसार हेतु इस संस्था का निर्माण हुआ । विश्व हिन्दू परिषद के सौजन्य से श्री राम शिला का पूजन करते हुए अयोध्या ले जाया गया ।

पहली बार 21 मई 1964 को मुंबई के संदीपनी साधनाशाला मेंएक सम्मेलन हुआ । सम्मेलन आर.एस.एस. सर संघचालक माधव सदाशिव गोलवालकर ने बुलाई थी । इस सम्मेलन मे हिन्दू,सिख,जैन,और बौद्ध धर्म के प्रतिनिधि उपस्थित थे । सम्मेलन मे गोलवांकर ने कहा कि भारतके सभी मतालम्बियों को एकजुट होने की ज़रूरत है । उन्होने कहा कि हिन्दू शब्द हिंदुस्तानियों के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द है और यह धर्मों से ऊपर है । सम्मेलन मे यह तय हुआ कि प्रस्तावित संगठन का नाम विश्व हिन्दू परिषद होगा और 1966 के प्रयाग के कुंभ मेले मे एकविश्व सम्मेलन के साथ ही इस संगठन का स्वरूप सामने आया । यह एक गैर राजनीतिक संगठन होगा ।संगठन के प्रमुख प्रकल्प पाठशाला, महविद्यालय,अस्पताल, गौ सेवा आरोग्य रक्षक, खेती विकास प्रकल्प , ग्राम विकास योज़ना ,रोज़गार प्रशिक्षण उपक्रम आदि ।

अयोध्या मामला 1991 के बाद की घटनाए : 1991 के लोक सभा चुनाव मे भारतीय जनता पार्टी दूसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप मे सामने आई । और उत्तर प्रदेश मे इसने सरकार भी बनाई ।राष्ट्रवादी छवि को और

मजबूत करने के लिए श्रीनगर के लाल चौक पर तत्कालीन पार्टी प्रमुख मुरलीमनोहर जोशी पर राष्ट्र ध्वज़ फहराया गया। इससे पहले पार्टी रथ यात्रा धार्मिक प्रभाव हेतु निकाल चुकी थी। कश्मीर से कन्याकुमारी तक एकता यात्रा जो कि कुल 14 राज्यों से गुजर चुकी थी, वे देश की अखंड सीमाई एकता को प्रतिबिंबित करते हुए पार्टी की छवि को राष्ट्रीय रूप प्रदान कर रहे थे। 6 दिसम्बर 1992 की अयोध्या की घटना ने समूचे राष्ट्र मे अयोध्या को केंद्र मे ला दिया। भारत की सर्वाधिक लोक सभा सीट वाला राज्य उत्तर प्रदेश इस घटना और केंद्र की काँग्रेस सरकार की सत्ता विरोधी लहर ने 1996 के लोक सभा चुनाव मे भारतीय जनतापार्टी को सबसे बड़ी पार्टी बना दिया। बहुमत न होने से पुनः चुनाव मे भी भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार बनी। पुनः 2014 के लोक सभा चुनाव मे भी 80 मे 71 सीट व 42.30 प्रतिशत वोट पाकर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकारसत्ता मे है। 2017 के उत्तर प्रदेश के विधान सभा चुनाव मे भी भारतीय जनता पार्टी अकेले ही 312 सीट जीतकर उत्तर प्रदेश मे हिंदुत्व की राजनीति कों नए आयाम प्रदान कर रही है। हिंदुत्व केप्रखर मूर्ति योगी आदित्यनाथ को उत्तर प्रदेश का मुख्य मंत्री बनाकर केंद्रीय नेतृत्व ने गुजरात के बाद उत्तर प्रदेश को हिंदुत्व की नई प्रयोगशाला बना दी है। केंद्रीय नेतृत्व ने जिस अपेक्षा से आदित्यनाथ को मुख्यमंत्री बनाया उसपर खरा उतरते हुए आदित्यनाथ ने इलाहाबाद व फ़ैज़ाबाद का नाम क्रमशः प्रयागराज व अयोध्या रख दिया है। प्रयागराज के कुंभ स्नान 2019 में सफाई व कुशल प्रबंधन से अभी तक के स्नानार्थियों की रिकार्ड संख्या प्राप्त कर ली है।

19 की लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी और अन्य छोटे दलों द्वारा बना महागठबंधन, केंद्र की भारतीय जनता पार्टी की सरकार को चुनाव में पराजित करने में असफल रही इसका भी कारण उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी और हिंदुत्ववादी संगठनों का कुशल चुनाव प्रबंधन रहा। द हिंदू नामक प्रतिष्ठित अंग्रेजी दैनिक में प्रोफेसर मिर्जा असमरबेग और प्रोफेसर शशिकांत पांडे और सुधीर खरे का हिंदुत्ववादी संस्थाओं के कुशल प्रबंधन पर प्रकाश डालता एक महत्वपूर्ण लेख उत्तर प्रदेश में हिंदुत्व की राजनीति के कुशल प्रबंधन पर मुहर लगाता है इस लेख के अनुसार भारतीय जनता पार्टी और हिंदुत्ववादी शक्तियों की कुशल चुनावी सामाजिक अभियांत्रिकी और नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता और अन्य विकल्प का ना होना महत्वपूर्ण घटक भारतीय जनता पार्टी को 2019 के लोकसभा चुनाव में ऐतिहासिक प्रचंड बहुमत से विजयश्री

हासिल करने मैं मानते हैं | इस लेख में यह भी वर्णन किया गया है कि अन्य राजनीतिक दल ने मात्र जातीय अंकगणित की ओर ध्यान दिया जबकि भारतीय जनता पार्टी ने बहुसंख्यक समुदाय के साथसाथ अन्य राजनीतिक दलों की वोट बैंक में अपनी सामाजिक अभियांत्रिकी के माध्यम से कुशलता पूर्वक अपनी हिस्सेदारी प्राप्त की | प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता ने भारतीय जनता पार्टी को लगभग 25% मत दिलाया इस लेख में आंकड़ों के माध्यम से यह सिद्ध किया गया है यदि भारतीय जनता पार्टी ने श्री नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री के रूप में प्रस्तुत नहीं किया होता तो 25% मतदाता भारतीय जनता पार्टी को वोट नहीं देती |

उत्तर प्रदेश मे हिंदुत्व की राजनीति : कुछ महान पुरुषों का योगदान

अटल बिहारी वाजपेयी : अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म तो ग्वालियर मे हुआ था परंतु उनकी कर्म भूमि उत्तर प्रदेश ही रही। सर्वप्रथम 1957 के लोक सभा चुनाव मे अटल जी बलरामपुर लोक सभाक्षेत्र से सांसद रूप मे चुनकर देश की सबसे बड़ी पंचायत मे पहुचे। पुनः 1967 से 1971 तक ग्वालियर लोक सभा,पुनः 1971 से 77 नई दिल्ली लोक सभा से , निर्वाचित हुए। 1944 से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्य रहे डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंडित दीन दयाल उपाध्याय के निर्देशन मे इन्होंने राजनीति का पाठ सीखा।अटल जी 1957 से 1977 तक जनसंघ के संसदीय दल के नेता रहे। 1984 में उन्होने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ व विश्व हिन्दू परिषद के श्री राम जन्मभूमि आंदोलन कीगतिविधियों से सहमति व्यक्त की। हिंदुत्व के बड़े नेता होते हुए भी उनकी छवि एक उदार नेता के रूप मे सर्वस्वीकार्य नेता के रूप मे रही है।13 दलों की गठबंधन की सरकार चलाने का कुशल नेतृत्व उन्ही मे था।

डॉ मुरली मनोहर जोशी : डॉ. जोशी का जन्म 5 जनवरी 1934 को नई दिल्ली मे हुआ था। मेरठ कालेज व उसके बाद इलाहाबाद विश्विद्यालय मे अध्ययन व अध्यापन के बाद वे सक्रिय राजनीति मे भी योगदान दिया। विकल्प और प्रज्ञा प्रवाह उनकी हिन्दी मे प्रकाशित दो पुस्तके हैं। डॉ जोशी बाल गंगाधर तिलक से व स्वामी विवेकानन्द से काफी प्रभावित रहे है। डॉ. जोशी आयोध्या गतिविधि से भी काफी निकट से संबंधित रहे है। उन पर बाबरी मस्जिद विध्वंस मे सीधा संलिप्त होने का आरोप है वह तर्क देते है कि मस्जिद दासता की निशानी है। उनके ऊपर भारतीय शिक्षा व्यवस्था के भगवाकरण के भी आरोप लगते है। विद्या भारती, सरस्वती शिशु मंदिर

,संस्कार केंद्र, सेवा भारती, वनवासी कल्याण आश्रम व एकलव्य विद्यालय, ब्राह्मण स्कूल 2002 मे एन.डी.ए. सरकार द्वारा, विवेकानद केंद्र विद्यालय, रामकृष्ण मिशन स्कूल , विश्विद्यालयों मे वैदिक शिक्षा, वास्तु शिक्षा , ज्योतिश शिक्षा आदि कार्यक्रम इनके मानव संसाधन विकास मंत्री रहने के दौरान ही हुए।

इस प्रकार हम देखते है कि भारत के सबसे बड़े प्रांत उत्तर प्रदेश मे अयोध्या प्रकरण अपना विशेष स्थान रखता है । उत्तर प्रदेश के प्रयाग मे प्रति वर्ष आयोजित होने वाला कुम्भ , मथुरा, काशी, आदि धार्मिक स्थल अपना पौराणिक महत्व रखते है । राज्य की वर्तमान सरकार विकास को आधार बनाकर, सबका साथ सबका विकास के नारे के साथ कार्य अवश्य कर रही है साथ ही साथ मंडल, मंदिर , मार्केटिंग की केंद्रीय विचार को ध्यान में रखते हुएअपनी सभी योजनावों को क्रियान्वित कर रही है।वास्तविकता मे यदि वर्तमान हिंदुत्ववादी सरकार को लॉगिन करना हो तो यूज़र आई डी विकास भले ही हों परंतु पासवर्ड हिंदुत्व ही होगा।उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज चुनौतियों को अवसर में बदलना उनकी आदत है अगर हालात असाधारण और चुनौतियां बेशुमार हो तब भी उनकी उर्जा लगन और निर्णय आम आदमी को हतप्रभ करने वाले होते हैं| वैश्विक संकट कोरोना में भी उन्होंने अपने तमाम फैसलों से इसे साबित भी किया|

अध्याय-चतुर्थ

गोरखपुर में हिन्दुत्व की राजनीति का उदयः एक एतिहासिक विश्लेषण व उपस्थिति संस्थानों का योगदान

पूर्वाञ्चल का गौरव "गोरखपुर" गगनचुम्बी हिमालय की तलहटी में सुशोभित एक स्वर्णिम एतिहासिक महत्व वाले स्थल के रूप मे वर्णित एक प्रमुख नगर है। राप्ती नदी के तट पर स्थित यह नगर हमारी प्राचीन कीर्ति का उद्घोषक है। भौगोलिक रूप से उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र के तराई क्षेत्र में स्थित गोरखपुर की अवस्थिति २६ डिग्री १३ मिनट उत्तर से २७ डिग्री २९ मिनट उत्तर अक्षांशीय विस्तार तथा ८३ डिग्री ५ मिनट पूर्व से ८३ डिग्री ५६ मिनट पूर्व के बीच देशांतरीय विस्तार के मध्य स्थित है। प्राचीन समय मे गोरखपुर में कुशीनगर , आजमगढ़ आदि आधुनिक ज़िले शामिल थे।विभिन्न काल खण्डों मे यह विभिन्न नामों से जाना गया, जैसे पिपलीपुरम, मूज्जमाबाद, रामगढ़ या रामग्राम जो कोलिय साम्राज्य की राजधानी थी। कालांतर मे नाथ संप्रदाय के योगी गोरक्षनाथ के नाम पर वर्तमान नाम गोरखपुर पड़ा। धार्मिक दृष्टिकोण से गोरखपुर विभिन्न धर्मों हेतु भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है यथा जैन, हिन्दू, बौद्ध, मुस्लिम सभी धर्मों हेतु प्रमुख स्थान रखता है। वर्तमान गोरखपुर का क्षेत्रफल ५४८४ वर्ग किलोमीटर है। गोरखपुर मे हिन्दू धर्म का प्रतिशत ९०.२८ होने के कारण हिन्दू धर्म की प्रधानता है।नाथ संप्रदाय के सिद्ध पीठ बाबा गोरक्षनाथ की तपस्थली होने , एक मात्र हिंदू राष्ट्र नेपाल की खुलीसीमा से जुड़े होने के कारण प्राचीन काल से ही हिंदुत्व की राजनीति के लिए गोरखपुर की भूमि उर्वर रही है।धार्मिक पुस्तक के प्रकाशक गीता प्रेस की उपस्थिति इसे विश्व पटल पर स्थान दिलाने मे सफ़ल रही है। सूर्य कुंड धाम, भीम सरोवर आदि इसके पौराणिक महत्व के साक्षी हैं। गोरखपुर में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व से ही राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ की उपस्थिति और प्रभाव था। १९५२ में प्रथम सरस्वती शिशु मन्दिर गोरखपुर में ही स्थापित हुआ। इसने बाल्य काल से ही हिंदुत्ववादी छवि विद्यार्थियों में विकसित करवाने में महती भूमिका अदा की हैं। सामाजिक समरसता के ध्वज़वाहक रूप में पीठ की भूमिका पूर्वाञ्चल ही नहीं अपितु देश के कई राज्यों में भी रही हैंपरंतु गोरखपुरस्थित मठ सबसे बड़ा है। नेपाल के राजपरिवार की भी इस मठ में गहरी आस्था हैं। इस मठ का शुरू से ही गोरखपुर में सामाजिक और सांस्कृतिक क्रियाकलाप में काफ़ी योगदान रहा है। शैक्षणिक क्षेत्र में ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज ने शिक्षा को लोक जागरण एवं राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का सशक्तमाध्यम स्वीकार करते हुए

१९३२ में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अन्तर्गत आज़ दर्जन भर से अधिक शिक्षण संस्थाए राष्ट्र निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही हैं। शैक्षणिक क्रिया कलाप के साथ ही साथ जन सेवा हेतु गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सालय परम्परागत चिकित्सा पद्धति को जीवंत बनाये रखने व उसके कुशल उपयोग हेतु महंत दिग्विजय नाथ आयुर्वेद चिकित्सालय , प्राचीन योग पद्धति को जीवंत बनाए रखने व उसका मानव जीवन के कल्याण हेतु कुशल उपयोग हेतु महायोगी गुरु गोरक्षनाथ योग संस्थान , आदि संस्थाए मानवता के कल्याण के लिए अनवरत प्रयत्नशील हैं। धार्मिक क्षेत्र में नाथ संप्रदाय की इस पीठ के प्रति गोरखपुर के आम जन में काफ़ी श्रद्धा है। १९४९ में बाबरी मस्जिद मुद्दे को , पीठ के तत्कालीन महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज ने काफ़ी प्रमुखता से उठाया तथा १९८० से राम जन्म भूमि आंदोलन को संघ परिवार से पीठ ने उसी रूप में अपना लिया। १९९१ के राम जन्म भूमि आंदोलन विवाद के बाद तत्कालीन महंत अवैद्यनाथ जी महाराज को राम मन्दिर निर्माण समिति का अध्यक्ष बनाया गया।

'हिंदू ध्यावे देहुरा, मुसलमान मसीत, जोगी ध्यावे परम पद, जहां देहुरा न मसीत

(योगी मन्दिर मस्जिद का ध्यान नहीं करता. वह तो परम पद का ध्यान करता है. यह परम पद क्या है, कहा है ? परम पद तुम्हारे भीतर है) मन्दिर के दीवारों पर लिखित यह पंक्तिया एक बार पुन नाथ पंथ की समरसता की नीति को प्रतिबिंबित करती हैं।२००२ मे स्थापित हिंदू युवा वाहिनी, युवा वर्ग को तमाम सांस्कृतिक ,रचनात्मक गतिविधिवों से ओत-प्रोतरखता है। गोरखपुर की संस्कृति में संस्कार भारतीय का योगदान भी उल्लेखनीय है। संस्कार भारतीय के द्वारा ही हिन्दू नव वर्ष पंचांग के अनुसार नव वर्ष के अवसर पर विभिन्न साँस्कृतिक क्रियाकलाप का आयोजन किया जाता है। जो युवा वर्ग विशेष कर कलाकारों व कला में रुचि लेने वाले में हिंदुत्व कोजीवंत रखता है।

गोरखपुर का संक्षिप्त इतिहास : प्राचीन काल में भारत मुख्यतया चार प्राकृतिक खंडों में विभाजित था काश्मीर,नेपाल, भूटान इत्यादि प्राकृतिक खंडों को हिमालय प्रदेश कहा जाता था।हिमालय और विंध्यपर्वतो के बीच का प्रदेश जो पश्चिम में अरब सागर एवं पूर्व में बंगाल की खाड़ी को स्पर्श करता था'आर्यावृत' कहलाता था[1] । विंध्य पर्वत व कृष्णा नदी के प्रांतों कोदक्षिणापथ कहते थे। कृष्णा नदी के

---

[1] मनुस्मृति, अध्याय २, श्लोक २२

दक्षिण का प्रदेश “द्रविड़ प्रदेश “ कहलाता था। इन खंडों में आर्यावृतकी ही भारतीय इतिहास में प्रमुखतारही है। आर्यावृत के मध्यवर्ती भाग को मध्य देश कहा जाता था।जोकि संयुक्त प्रांत व बिहार के बराबर था।[2]इसी मध्य देश के मध्य भाग में“कारुपथ” नाम का रमणीय प्रदेश था[3] जिसे आज हम गोरखपुरके नाम से जानते हैं। प्राचीन समय में गोरखपुर के भौगोलिक क्षेत्र में बस्ती, देवरिया,कुशीनगर,आजमगढ़आदि आधुनिक ज़िले शामिल थे[4]। वैदिक लेखन के अनुसार, अयोध्या के ज्ञात सम्राट इक्ष्वांकु सूर्यवंश के संस्थापक थे। इन्ही के वंश में चक्रवर्ती सम्राट दशरथ व राम उत्पन्न हुए थे।अति प्राचीन आर्य संस्कृति और सभ्यता के प्रमुख केंद्र कोशलऔर मल्ल जो सोलह महाजनपदों में दो प्रसिद्ध राज्य ईसा पूर्व छठी शताब्दी में विद्यमान थे,गोरखपुर उन्हीराज्यों का एक महत्वपूर्ण केंद्र हुआ करता था।महाकाव्यों के काल में इस क्षेत्र को कारूपथ के नाम सेजानते थे जो कि कोसल राज्य का एक अंग था[5]। जो कि आर्य सभ्यता व संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र था[6]। बौद्ध धर्म को यहा संरक्षण मिला। व्हेनसांग के विवरण से पता चलता हैकि ५०० ईसा पूर्व में बौद्ध धर्म गोरखपुर आया था। बारहवी शताब्दी के मध्य से लेकर सत्रहवी शताब्दी केअंत तक गोरखपुर का इतिहास मुख्य रूप से क्षत्रिय जाति का इतिहास रहा है। गोरखपुर नाम पड़ने केपीछे एक जनश्रुति प्रचलित है कि महाभारत युद्ध के समय राजा विराट के जिन गायों का अपहरण कौरवोंने किया था ,पांडवों ने इसी स्थान से इसे मुक्त कराया ,इसी कारण इसका नाम गोरक्षपुर पड़ा[7]। कालांतर में यह गोरखपुर हो गया।महाभारत के अश्वमेघ पर्व के अनुसार सम्राटयुधिष्ठिर द्वारा किए गए राजसूय यज्ञ में महाबली भीम द्वारा पूर्वी भारत का दिग्विजय किया गया था।उस समय अयोध्या के सम्राट सूर्यवंशी राजा वृहदमल थे तथा गोरखपुर जनपद पर गोपालक तथा मल्लराजवंश का शासन था[8]। राजा विराट के क्षेत्र मे इधर का कोई भाग नहीं था।इससे आभास होता है कि जनश्रुति के अनुसारपांडवों छद्वारा गोरक्षा एवं गोरखपुर का नाम इसमेकाल्पनिकता है । वास्तव में गोरखपुर का प्राचीन नाम “रामग्राम” था। बौद्ध साहित्य के अनुसार“रामग्राम” रोहिणी के पूर्व में

[2] मनुस्मृति, अध्याय २, श्लोक २१

[3] वाल्मीकि रामायण,उत्तर काण्ड, सर्ग- १०२

[4] पाण्डेय, डॉ. राजबली – “गोरखपुर जनपद और इसका इतिहास “ पृष्ठ–३

[5] पाण्डेय, डॉ.राजबली –“गोरखपुर जनपद और इसकाइतिहास “, पृष्ठ -४

[6] त्रिपाठी ; आर. एस.-हिस्ट्र ऑफ़ एंशिएंट इंडिया,पृष्ठ -४१

[7] महाभारत,विराट- पर्व १६-२८

[8] महाभारत, अश्वमेघ पर्व

“नागवंशी कोलिय” गणतंत्र की राजधानी थी[9] । कोलिय गणतन्त्र के विघटन से इस नगर की क्षति हुई फिर भी यह रामग्राम और रामगढ़ के नाम से प्रसिद्धरहा । मध्य युग में निरंतर अवनति के पश्चात यह एक छोटे से ग्राम के रूप में परिवर्तित हो गया ।जिससेयहइतिहास का मात्र एक अवशेष रह गया । रामग्राम के बदले गोरखपुर नाम प्रसिद्ध नाथ संप्रदाय के योगीगोरक्षनाथ के नाम पर पड़ा । १३ वी शताब्दी में बाबा गोरक्षनाथ ने समाधि ली । समाधि के आस पास केक्षेत्र को गोरक्षनाथ कहा जाने लगा । सोलहवी शताब्दी में सतासी राजवंश के आपसी विवाद के कारण कुछ श्रीनेत राजकुमारों ने अपने भौवापार राज्य को छोड़कर गोरक्षनाथ की समाधि के पास एक नगर की स्थापना की तथा उसका नाम बाबा गोरखनाथ के नाम पर गोरखपुर रखा । जो आगे चलकर सतासी राज्यकी राजधानी हुआ[10]। मध्यकालमें अवध का नवाब आशफुद्दौला शिकार खेलने के उद्देश्य से गोरखपुर आया । गोरखपुर में उसके अनुचरों ने उसे बाबा रोशन अली शाह से मिलने को आग्रह किया । रोशन अली शाह से मिलने पर उन्होने नवाब को उनके समकालीन हिन्दू धार्मिक गुरु बाबागोरक्षनाथ से भी मिलने का आदेश दिया । नवाब ने उनसे भीमुलाक़ात किया । इन दोनों धार्मिक गुरु से नवाब इतना प्रभावित हुए कि इन दोनों गुरु को पूरा गोरखपुरआधा आधा बाँट दिया । ये कहानी काफ़ी प्रभावकारी व विशिष्ट है । शहर में स्थित दो महत्वपूर्ण धार्मिक मठों के बीच संबंधों का संपूरक वृतांत है ।इमामबाड़ा दरगाह, धार्मिक गुंबद रोशन अली शाह की मज़ारऔर गोरक्षनाथ मठ दोनों शहर के दो विपरीत छोर पर स्थित हैं । दोनों शहर की मौलिक पहचान व इनकेउत्पत्ति से काफ़ी घनिष्ठता से जुड़े हुए हैं । १० हजार से भी अधिक बुनकर मन्दिर के आसपास बसे हुए हैं । संत कबीर व गोरक्षनाथ के मध्य वार्तालाप कबीर गोरक्षनाथ गोष्ठी के नाम से प्रशिद्ध है[11] । संत कबीर के दोहे मन्दिर की दीवारों पर लिपि बद्ध हैं ।

औपनिवेशिक काल में गोरखपुर : १७२१ ई. में सादात खाँ को अवध प्रांत मिला, इसमे गोरखपुर भीथा उसने स्थानीय राजाओ को दबाने की नीति अपनायी । १८०१ ई. में नवाब की भूमि जो ब्रिटिश सैनिकोंके लिए थी महँगी हो गई थी । सादात अली खाँ ने अपना ऋण चुकाने के लिए सन १८०१ में अन्य क्षेत्रों केसाथ गोरखपुर और बुटवल , ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया । इस प्रकार आगे चलकर यह ब्रिटिश सरकारके अंतर्गत आया। १८२९ गोरखपुर को मण्डल मुख्यालय का दर्ज़ा प्राप्त हुआ । १८४४ ई. में चर्च

[9] महापरिनिर्वाण,सुत्त

[10] पाण्डेय,रामआधार-हिस्ट्री ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ गोरखपुर, पृष्ठ ६

[11] ब्रिग्स १९३८

मिशनरीसोसाइटी द्वारा एक स्कूल खोला गया जो काफ़ी दिनों तकज़िले की एक मात्र शिक्षण संस्था थी। इसने शिक्षण कार्य के साथ ही ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार करने कार्य भी करना प्रारंभ कर दिया।

नाथ संप्रदाय और गोरखपुर: मान्यता है कि नाथ संप्रदाय की स्थापना आदिनाथ भगवान शिव ने की थी।उनसे मत्सयेन्द्रनाथ ने ज्ञान प्राप्त किया। मत्सयेन्द्र नाथ से ज्ञान प्राप्त कर शिष्य गोरक्षनाथ हुए, जिनके द्वाराप्रवर्तित बारहपंथी मार्ग नाथ संप्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस संप्रदाय के साधक अपने नाम के पीछेनाथ शब्द जोड़ते हैं।कान छिदवाने के कारण उन्हे कनफटा, दर्शन कुंडल धारण करने के कारण दरशन और गोरक्षनाथ के अनुयायी होने के कारण गोरख पंथी भी कहा जाता है। नाथ परम्परा मेंगुरुमत्सयेन्द्रनाथ व गुरु गोरक्षनाथ सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। ये दोनों सिद्ध पुरुष नाथ संप्रदाय के आरम्भिक चरणोंमें आविभूत हुए थे। लोक कथाओ के अनुसार मत्सयेन्द्र नाथ ने एक नि:संतान स्त्री को संतान प्राप्ति के लिएभभूति दी थी। स्त्री ने भभूति को गोबर के ढेर पर डाल दिया।१२ वर्षों बाद जब मत्सयेन्द्रनाथ वापस आएतो उन्होने स्त्री से उसकी संतान के बारे में पूछा, जिसपर उसने सारी घटना बता दी।इस पर मत्सयेन्द्रनाथ ने अलख निरंजन की आवाज लगाई तो गोबर के ढेर से १२ वर्ष का बालक सामने आया।मत्सयेन्द्रनाथ नेगोबर से रक्षित होने के कारण नाम गोरखनाथ रखा, जो नाथ संप्रदाय के सबसे प्रभावशाली संत हुए। गुरूगोरक्षनाथ का समय आठवी से ग्याहरवी शताब्दी के बीच माना जाता है। गोरक्षनाथ ने हिन्दू धर्म केब्राह्मणवाद, बौद्ध धर्म के अति भोगवाद के कारण आई सामाजिक विकृतियों के ख़िलाफ़ समाज को जागृत किया।उन्होने हिन्दू मुसलमान एकता की नीव रखी और ऊच नीच,भेदभाव, आडम्बर का पुरजोर विरोध किया।यही कारण है कि नाथ संप्रदाय में बड़ी संख्या में सनातन धर्म से अलगाव के शिकार अस्पृश्य बताई गई जातियों के लोग शामिल हुए।हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के लोग बड़ी संख्या में इसमे शामिल हुएसबदी गोरखनाथ की सबसे प्रामाणिक रचना है।इसमे योगियों के लिए उपदेश है।नाथ योगियों पर पुस्तक"गोरखनाथ एण्ड कनफटा योगीज" में जॉर्ज ब्रिग्स लिखते हैं कि १९१४ में गोरखपुर जो मन्दिर देखा था वह१८०० के आस-पास निर्मित हुआ था। अयोध्या स्थित श्री रामजन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन में गोरक्षपीठ के योगदान 1885 से ही देखने को मिलता है, जब यह राजनीतिक मंच तक नहीं पहुचा था। गोरक्षपीठ के तत्कालीन महंतगोपालनाथ , योगिराज बाबा गंभीरनाथ और महंत ब्रह्मनाथ के समय में हिन्दू व मुसलमानों में आपसी सामंजस्यस्थापित हुआ था और इस विवाद का हल निकालने की कोशिश हुई थी। वर्ष 1885 में बनी सहमति में विवादित ढ़ाचा को हिन्दू समुदाय को सौपने पर अमल होने ही वाला था कि ब्रिटिश सरकार ने हिन्दू का पक्ष रखने वाले रामचरण दास व मुस्लिम

पक्ष के अमीर अली को बाग़ी घोषित कर उन्हे फाँसी की सजा दे दी गई। राम मन्दिर आन्दोलन के लंबे दौर में श्री राम मन्दिर मुक्ति आन्दोलन के शीर्ष नेताओ का गोरक्षपीठ रणनीतिक केंद्र रहा है ।श्री राम मन्दिर आन्दोलन से गोरक्षपीठ का संबंध पीढ़ियों का है ।गोरक्षपीठ ने ब्रिटिश काल में ही मुसलमानों को साथ लेकर श्री राम मन्दिर आन्दोलन का शंखनाद कर दिया था[12] ।

नाथ संप्रदाय और राजनीति : गोरक्षनाथ मठ की राजनीति में प्रवेश का काल १९२० ई. से प्रारम्भ होता है।दिग्गविजय नाथ जी महाराज जिनके बचपन का नाम राणा नानन्हु सिंह था। उनका जन्म बाप्पा रावल केइतिहास प्रसिद्ध वंश में हुआ था,जिसमे उत्पन्न होकर राणा सांगा और महाराणा प्रताप जैसे स्वदेशाभिमानीवीरों ने देश और धर्म की रक्षा के लिए आजीवन संघर्ष किया। राणा नानन्हु सिंह का जन्म उदयपुर के राणावंशी परिवार में सन१८९४ ई. में वैशाखी पूर्णिमा को हुआ था। बचपन से ही माता पिता के स्वर्गवासी होजाने के कारण उनके पालन पोषण का दायित्व उनके चाचा पर आ पड़ा ।उस समय उदयपुर के निकटएक पंथी योगी महात्मा फूलनाथ साधनारत थे।वे गोरखपुर स्थित गोरक्षनाथ मंदिर के तत्कालीन महंत महात्मा वलभद्रनाथ जी के शिष्य और महंत सुंदरनाथ जी के गुरूभाई थे ।उनके चाचा सम्पति के लोभ में उनसे छुटकारा पाना चाहते थे, उन्होने फूलनाथ जी से प्रार्थना की कि हम इस बालक को गुरु गोरक्षनाथ जीके चरणों में अर्पित करना चाहतेहैं। फूलनाथ जी ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली ।फूलनाथ जी बालक को गोरक्षनाथ मन्दिर लाए। बालक नानन्हु सिंह को मन्दिर में योगी गंभीरनाथ जी की अहैतुकी कृपा प्राप्तहुई। यही बालक गोरखपुर में शिक्षा प्राप्त करने हेतु जुबली कालेज़ में अध्ययन करनेलगे परन्तु राष्ट्रवादके मुद्दे पर प्रधानाचार्य अघोर नाथ चट्टोपाध्याय से विवाद हो गया जिसके बाद आज़ के महात्मा गांधी इंटरकालेज़ में अध्ययन किया ।१९२० के राष्ट्रीय असहयोग आन्दोलन से प्रेरित होकर विद्यालय छोड़ दिया ।अध्ययन के दौरान ये औसत छात्र रहे ।पाठ्येतर कृयाकलापों में ये अधिक ध्यान देते थे। सभा, व्याख्यान,क्रीड़ा पर विशेष बल देते थे। हाँकी और घुड़सवारी इनके प्रिय खेल थे। दिग्गविजयनाथ जी प्रारम्भ मेंभारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के सदस्य रहे। १९२२ में चौरी चौरा कांड में हिंसा भड़काने के आरोप में इन्हेगिरफ़्तारकर लिया गया । १९३७ में उन्होने हिन्दू महासभा की सदस्यता स्वीकार कर ली ।महात्मा गाँधी की जिस बंदूक से हत्या की गई थी उसे उपलब्ध कराने का आरोप उनके ऊपर लगा था जिसमे इन्हे ९माह का कारावास की भी सजा हुई

[12] (राव ,प्रदीप: राष्ट्रीयता के अनन्य साधक महंतअवैधनाथ,प्रभात प्रकाशन ,2011) खंड-१

थी[13]। १९४९ ई. से ही उन्होने ही बाबरी मस्जिद मुद्दे कों मज़बूती से उठाते हुए उसे राम मन्दिर आन्दोलन में बदलवा दिया[14]। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि दिग्गविजय नाथ जी ने मठ की पहचान को बदल दिया। १९३४ में इन्हे महंत पद प्राप्त किया । १९३० ई. से मठ का स्वरूप बदलने लगा । मठ हिन्दू व मुस्लिम सामान्य आधार को दरकिनार करते हुए मुस्लिम विरोधी स्वरूप का प्रतीक बनने लगा । मठ में जहा एक यौगिक पगचिन्ह आराधना का मुख्य बिन्दु होता था ।वहीं आज़ सभी हिन्दू देवी देवतावों की मूर्तियाबलवान हिंदूवाद के देवता हनुमान जी सहित सभी की मूर्तिया स्थापित हों चुकीहैं । इस तरह हम देखते हैं कि गुरु गोरक्षनाथ का पवित्र अहाता समय-समय पर भिन्न- भिन्न रूप में इस नगर को इस जगत का मार्ग दर्शन करता रहा । सर्वप्रथम पीठ के रूप में तांत्रिक क्रियाओ का शक्ति केंद्र रहा । पुनः इसने मठ के रूप में साधु सन्यासियों का निवास स्थल या आश्रम की छवि रही । आज़ आम जनमानस के मन मस्तिष्क में मन्दिर की छवि प्राप्त कर चुका है ।आम जन मन्दिर से ज़्यादा प्रभावित होता है । दिग्गविजय नाथ जी महाराज ने इसी कों ध्यान में रखते हुए मठ के स्वरूप से मन्दिर के स्वरूप में परिवर्तन करा अपनी राजनीतिक परिपक्कवता का सजीव प्रमाण दिया हैं । आज़ादी के मिलने के बाद प्रथम बार १९६२ में अवैद्यनाथ जी को विधान सभा के चुनाव में विजय मानीराम विधान सभा से मिली । महंत दिग्गविजय नाथजी महाराज को १९६७ के लोक सभा चुनाव में विजय हिन्दू महासभा के टिकिट पर मिला । १९६९ में महंत दिग्गविजय नाथ जी ब्रह्मलीन हों गए । इसके बाद उनकी राजनीतिक और धार्मिक विरासत को उनके शिष्य महंत अवैद्यनाथ जी महाराज ने संभाला । प्रदेश में ही नहीं अपितु पूरे देश में बहुत कम ऐसे राजनेताहोंगे जो पाँच बार विधान सभा व चार बार लोक सभा में विजयी हुये हों । मानीराम विधान सभा से महंत अवैद्यनाथ १९६२,१९६७,१९६९,१९७४,१९७७ में विधायक चुने गए और १९६९, १९८९, १९९१, १९९६ में चार बार वे लोक सभा सदस्य चुने गए । महंत अवैद्यनाथ ने अपने जीवित रहते हुए ही अपनी विरासत अपने शिष्य योगी आदित्यनाथ को सौप दिया । अपने गुरु द्वारा दी गई राजनीतिक विरासत को इस तरह विस्तार दिया कि आज़ वों अपराजेय हों चुके हैं ।

गुरु गोरखनाथ और संत कबीर : संत कबीर को निर्वाण की प्राप्ति तत्कालीन गोरखपुर ज़िलेके मगहर नामक स्थान में ही प्राप्त हुई थी । संत कबीर और गुरु गोरखनाथ के मध्य तत्कालीन समाज़ के कुरीतिओ ,जाति व्यवस्था आदि के मुददे पर व्यापक चर्चा होती थी । मगहर में स्थित कबीर धूनी और गोरख

[13] पाई एंड कुमार २०१८,११९-१२०

[14] वान डेर वीर१९८७

तलैया इस बात के साक्षी हैं यही पर संत कबीर साहब, बाबा गोरक्षनाथ ,रविदास, नानकदेव और वैष्णव मत के संत केशर दास के मिलन पर चर्चा हुई थी। संत कबीरव्यवसाय से जुलाहा (बुनकर) थे। संत कबीर और गुरु गोरक्षनाथ के मध्य वार्तालाप गोरखवाणी में दर्ज है। उनके आपसी मित्रवत संबंधो के कारण बुनकरवर्ग काफ़ी मात्रा में मंदिर के आस पास निवास करते हैं और मंदिर को मतदान करते हैं और हिंदुत्व केसमर्थक हैं[15]। संत कबीर एकमात्र महापुरुष हैं जिनकी समाधि के साथ साथ मज़ार भी बना है अर्थात उन्हे हिन्दू और मुस्लिम धर्मावलम्बी दोनों ही मानते हैं। एक किवदंती के अनुसार संत कबीर की मृत्यु होने पर उनके मृत शरीर को लेकर विवाद हो गया। हिन्दू धर्मावलम्बी उन्हे हिन्दू धर्मके अनुसार अंतिम संस्कार करना चाहते थे , जबकि मुस्लिम धर्मावलम्बी मुस्लिम धर्म के अनुसार। विवाद चल ही रहा था कि उसी बीच उनका मृत शरीर गायब हो गया और उसके स्थान पर दो गुलाब के फ़ूल मिलेजिसे दोनों धर्मावलंबियों ने आपस में बाँट लिया और अपने अपने धार्मिक रीति रिवाजों के अनुसार उनका अंतिम संस्कार कर दिया। इस तरह हिन्दू व मुस्लिम दोनों ही धर्म के लिए पूज्यनीय व संत कबीर के जुलाहा व्यवसाय से संबंधित होने के कारण संत कबीर के 620वे प्राकट्य महोत्सव में 28 जून 2018 कोप्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भाग लिया। मगहर में संत कबीर एकादमी का शिलान्यास किया। 24 करोड़रुपये की लागत से बनने वाले इस एकादमी में संत कबीर पर शोध करने वाले शोधार्थी को व्यापक सुविधाए प्रदान की जाएँगी ।

स्वतन्त्रता के बाद गोरखपुर में हिंदुत्व का प्रसार :

1925 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना के बाद ही गोरखपुर मेंनाथ संप्रदाय के सबसे बड़े पीठ होने व तत्कालीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज के राजनीति में रुचि के कारण क्षेत्रीय स्तर परराष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को एकमंच मिल गया। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की व्यापक गतिविधि का प्रमाणयह रहा कि गोरखपुर राष्ट्रीय स्वयं सेवकसंघ के लिए इतना महत्वपूर्ण हो गया कि 1939 में नाना जी देशमुख जैसे राष्ट्र संत , राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक के रूप में गोरखपुर भेजे गए। नाना जीदेशमुख जिस समय गोरखपुर आए उस समय होली का वातावरण गोरखपुर में छाया हुआ था। उस समय होली गोरखपुर में काफ़ी भद्दे तरीक़े से लोग मनाते थे। लोग काले या हरे रंग का इस्तेमाल करते थे नाना जी को ये बात काफ़ी ख़राब लगी। उन्होने होली के दिन शहर के बीच से नरसिंघ यात्रा निकालने की शुरुवात की तथा साथ में एक

---

[15] महंत विचार दास जी महाराज: संत कबीर समाधि स्थल , मगहर , संत कबीर नगर

हाथी की भी व्यवस्था कर दी तथा महावत को निर्देश दिया कि जहा भी काले या हरे रंग का ड्रम दिखे उसे हाथी को दिखाकरके ड्रम गिरा दें। इसतरह उन्होने एक भद्दी प्रथा को गोरखपुर से दूर कराया। आज़ भी गोरखपुर में होली के दिन नरसिंघ यात्रा गोरक्षपीठ के प्रतिनिधिकीअगुवाई में निकलती है। इस तरह हिन्दू के प्रमुख त्योहार होली के द्वारा पूरा गोरखपुर हिंदुत्व के रंगमें सराबोर हो जाता है। 1952 में पूरे भारत में सबसे पहले सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना गोरखपुरमें ही हुई थी।

सामाजिक संगठन : ब्रह्मलीन महंत दिग्गविजय नाथ जी महाराज ने १९३२ में ही महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना कर दी थी परन्तु इसके सफ़ल क्रियान्वयन को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हीप्राप्त किया जा सका। मन्दिर के महंत योगी आदित्य नाथ के कुशल निर्देशन में आज़ निम्नलिखित संस्थाए मानवता के कल्याण में दिन रात कार्यरत महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, गोरखपुर,दिग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय,गोरखपुर, गोरखपीठाधीश्वर महंत अवैद्यनाथ महाविद्यालय,चौक बाज़ार ,महाराजगंज, दिग्विजयनाथ कालेज ऑफ़ टीचर्स एजुकेशन ,सिविल लाइंस,गोरखपुर ,महाराणा प्रताप महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,रामदत्तपुर, गोरखपुर, गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ, गोरखपुर गोरखनाथ संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ,गोरखनाथ ,गोरखपुर, महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज , गोरखपुर, दिग्विजयनाथ इंटर कालेज ,चौक बाज़ार , महाराजगंज, महाराणा प्रताप सीनियर सेकेंड्री स्कूल,बेतियाहाता,गोरखपुर, महाराणा प्रताप बालिका इंटर कालेज, सिविल लाइंस, गोरखपुर, दिग्विजयनाथ बालिका इंटर कालेज ,चौक बाज़ार,महाराजगंज ,योगिराज बाबा गंभीरनाथ सेवाश्रम समिति,जंगल धूसड़, गोरखपुर, महाराणा प्रताप कृषक इंटर कालेज़, जंगल धूसड़, गोरखपुर, महायोगी गुरु गोरक्षनाथ योग संस्थान, गोरखनाथ,गोरखपुर, महाराणा प्रताप बालिका माध्यमिक विद्यालय ,रामदत्तपुर,गोरखपुर, महाराणा प्रताप पूर्व माध्यमिक विद्यालय ,रामदत्तपुर गोरखपुर, महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा बिहार,रामदत्तपुर , गोरखपुर, महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार ,लालडिग्गी,गोरखपुर, श्री गुरु गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यालय ,काशी,गोरक्षटिल्ला मैदागिन,वाराणसी, धर्मस्थल रक्षा समिति , श्री गोरखनाथ मन्दिर परिसर, गोरखनाथ,गोरखपुर, अखिल भारत वर्षीय अवधूतभेष बारह पंथी योगी महासभा ,हरिद्वार, गुरु श्री गोरक्षनाथ दरिद्रनारायण स्वास्थ्य सेवा कोष समिति , गुरुश्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय गोरखपुर गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान , श्री गोरक्षनाथ मन्दिर गोरखपुर, दिग्विजयनाथ स्वाध्याय केंद्र एवं विचार मंच,गोरखपुर, विश्व हिन्दू महासंघ,भारत महाराणा प्रताप स्नातकोतर महाविद्यालय जंगल धूसड़ ,गोरखपुर, महाराणा प्रताप पॉलीटेकनिक ,गोरखपुर ,दिग्गविजय नाथ इंटर कालेज़ ,चौक

माफ़ी,पीपीगंज,गोरखपुर, किसान इंटर कालेज़, बेर्गोनिया,देवरिया ,आदि शक्ति माँ पाटेश्वरीपब्लिक स्कूल, देवीपाटन,तुलसीपुर,बलरामपुर माँ पाटेश्वरी सेवाश्रम चिकित्सालय,देवीपाटन, तुलसीपुर, बलरामपुरगुरु श्री गोरक्षनाथ धर्मार्थ चिकित्सालय समिति, गोरखनाथ मन्दिर,गोरखपुर महंत दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक चिकित्सालय, गोरखनाथ मन्दिर गोरखपुर गुरु श्री गोरक्षनाथ स्कूल ऑफ़ नर्सिंग , गोरखनाथ,गोरखपुर गुरु गोरक्षनाथ विद्यापीठ ,भरोहिया, पीपीगंज, गोरखपुर गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडीकल साइन्स,ग्राम सोनबरसा, गोरखपुर

इन तीन दर्जन से अधिक संस्थानों में अधिकांश शिक्षण संस्थान हैं जिसमे तरुण मन मस्तिष्कहिंदुत्व से ओत प्रोत वातावरण में शिक्षा प्राप्त करता हैं , जिससे न सिर्फ़ ये अपितु उनके अभिभावक गण , संस्थानों के चारो तरफ़ का परिवेश प्रभावित होता है। योगीराज बाबा गंभीर नाथ सेवाश्रम समिति जो कि जंगल धूसड़ गोरखपुर में पिपराईच विधान सभा के अंतर्गत आता हैं। इस सेवाश्रम के द्वारा ग्रामीण अंचल में मन्दिर की सक्रिय गतिविधि बनी रहती हैं। सेवाश्रम द्वारा समय –समय पर स्वास्थय शिविर , योग शिविर का आयोजन किया जाता रहा है। ये संस्थान बिना किसी भेदभाव के ''मन में रहिणाम, भेद न कहिणाम '' के भावना के अनुरूप समाज के सभी धर्म के लोगों की सेवा करते हैं। नाथ पंथ से दलित और मुस्लिम शुरुआत से ही जुड़े रहे हैं। गोरखनाथ मंदिर का जुड़ाव समाज़ के कमजोर वर्ग से हमेशा ही रहा है। इसमे जाति औरधर्म का भेदभाव कभी भी नहीं रहा। "जाति-पाति पुछे नहिं कोई-हरि को भजै सो हरि का होई" की मूलभावना गोरक्षपीठ का मूल मन्त्र रहा है। गोरक्षनाथ ने जातिवादी-रूढ़िवादिता के विरुद्ध जो उद्घोष किया, उसे इस पीठ ने अनवरत जारी। मन्दिर द्वारा स्थापित विभिन्न प्रकल्पों में नियुक्ति, निर्देशन , उनके अवस्थिति, क्षेत्र विशेष की आवश्यकता वहा पर हिंदुत्व के प्रभाव, दूरदर्शी प्रभाव को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।

गोरखपुर में उपस्थित व्यापारिक समूह वमन्दिर:

गोरखपुर में सिंधी समाज़ की उपस्थिति व प्रभाव उल्लेखनीय मात्रा में हैं। ये समाज़ धर्मभीरु वव्यापारिक गतिविधियों से जुड़ा होता है। इस समाज़ द्वारा निकाले जाने वाले झूलेलाल महोत्सवमें यात्रा निकाली जाती है। जिसमे मन्दिर के महंत स्थानीय गणमान्य नागरिक व समाज़ के लोग भाग लेते हैं। इस समाज़ की मन्दिर से हमेशा से ही निकटता रही है। गोरखपुर के व्यापारिक गतिविधिवों का केंद्र गोलघर यहा लगभग सभी प्रतिष्ठित प्रतिष्ठानों में गुरु गोरक्षनाथ के साथ ही साथ महंत जी का चित्र सुसज्जित व पूजा

जाता है। महाराणा प्रताप भवन, जो बहुमंजिला वाणिज्यिक भवन है यह मन्दिर की ही संपत्ति है। पूर्वाञ्चल का प्रसिद्ध उद्योगपति परिवार जालान परिवार, रुंगटा परिवार, सकसेरिया परिवार सभी के मन्दिर से निकट संबंध हैं। गोरखपुर के सीताराम जयसवाल जोव्यापारी वर्ग से आते हैं मन्दिर के आशीर्वाद से ही महापौर पद प्राप्त कर सके।

सामाजिक समरसता का केंद्र : गोरखनाथ मन्दिर-

गोरखपुर में मन्दिर और इमामबाड़ा के बीच सौहार्द का एक अद्भुत रिश्ता है।मन्दिर और इमामबाड़ा दोनों ही जगहों पर अखंड धूनी जलती है। कहा जाता है कि जब मन्दिर की धूनी की आग बुझजाती थी तो इमामबाड़ा की धूनी से आग जाती थी और जब इमाम बाड़े की धूनी की आग बुझ जातीतो मन्दिर की धूनी से आग लाई जाती थी। मिया साहब अदनान फारुख अली शाह के अनुसार उनके होश में धूनी की आग कभी बुझी नहीं परंतु यह परंपरा काफ़ी पुरानी है।२००२ में मेरे वालिद के इंतक़ाल पर महंत अवैद्यनाथ जी लगातार तीन दिन तक परिवार को सत्तावना दी थी।उन्होने कहा था अदनान तुम्हारे पिता का इंतक़ाल जरूर हुआ है, परंतु मैं हू न; दु:खी मत हों। अदनान फ़ारुख अली शाह से प्राप्त जानकारी के अनुसार उनके दादा यानि चौथे मिया साहब सय्यद जव्वाद अली शाह व गोरखनाथ मन्दिर के तत्कालीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज के बीच संबंध अत्यंत घनिष्ठ थे।महंत जी का हमारे घर आना जाना होता था।घर में दादा के साथ वे टेबल टेनिस खेलते थे। उनके बाद महंत अवैद्यनाथ जी महाराज और मेरे वालिद पाचवे मिया साहब सैयद मज्जहर अली शाह ने भी इस रिश्ते को बख़ूबी निभाया। मोहर्रम के अवसर पर निकलने वाले ताज़िया को बेनीगंज में स्वयं अवैद्यनाथ जी महाराज स्वागत करते थे। वही इमामबाड़े की सामने की भूमि पर राम लीला का कुशल संचालन करवाया जाता है। २००७ में गोरखपुर में हिंसा फ़ैलने परमिया साहब ने तीन दिन का कार्यक्रम निरस्त कर दिया था। तथा शहर में शांति पुनर्स्थापित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।मियाँ साहब की वंशावली अपने को सक्रिय राजनीति से दूर रखी हुई है। इनके द्वारा भी गोरखपुर मेंशिक्षण संस्थाए जैसे मियाँ साहब इस्लामिया इंटर कालेज और मियाँ साहब इस्लामियाँ कालेज़ आफ कॉमर्स एंड साइन्स का संचालन किया जाता है।[16]

[16] सामाजिक समरसता का ध्वज वाहक गोरखनाथ मन्दिर'' दैनिक जागरण गोरखपुर संस्करण 27 मार्च 2017

गोरखपुर और संस्कार भारती: गोरखपुर में साँस्कृतिक क्रिया कलाप में संस्कार भारती का योगदान उल्लेखनीय है। संस्कार भारती कलाकारों को एक मंच प्रदान करने वाला संगठन है कलाकार किसी भी संस्कृति और सभ्यता के पोषक व संवाहक होते हैं। गोरखपुर की संस्कृतिऔर सभ्यता के सन्दर्भ में भी ये बात पूर्णतया सही सिद्ध होती हैं। संस्कार भारती की स्थापना १९८१ मेंपद्म श्री हरि भाऊ वाकणकर के सहयोग से योगेन्द्र जी द्वारा लखनऊ में हुई थी । इसकी पृष्ठभूमि में भाउराव देवरस, हरिभाऊ वाकणकर , नानाजी देशमुख, माधव राव देवले, और योगेन्द्र जी जैस मनीषियों का चिन्तन तथा अथक परिश्रम था। १९५४ से संस्कार भारती की परिकल्पना विकसित होती गई और अंततः १९८१ में लखनऊ में इसकी विधिवत स्थापना हुई। "सा कला या विमुक्तये" अर्थात कला वह है जो बुराईयों के बंधन काटकर मुक्ति प्रदान करती है के उद्घोष वाक्य के साथ आज़ देश भर में संस्कार भारती की १२०० से अधिक इकाईया कार्य कर रही हैं। समाज के विभिन्न वर्गों में कला के द्वारा राष्ट्र भक्ति एवं संस्कार जगाने , विभिन्न कलाओ का प्रशिक्षण देकर नए कलाकार तैयार रखना ताकि भविष्य में संस्कृति व सभ्यता का लोप न होने पाये भविष्य की आने वाली पीढ़िया अपने संस्कृति और सभ्यता को जान सकें इस दिशा में संस्कार भारती गोरखपुर समेत पूरे देश में कार्य कर रही हैं।संस्कार भारती की गोरखपुर ईकाई " संस्कार भारती गोरक्षप्रांत" के नाम से जानी जाती है। संस्कार भारती के गोरक्षप्रांत के अंतर्गत हिन्दू पंचाङ्ग के अनुसारनव वर्ष का आयोजन सांस्कृतिक क्रिया-कलाप आदि द्वारा किया जाता है। हिन्दू पंचाङ्ग के अनुसार ही पूरे वर्ष भर होली, दीपावली मनाई जाती है। गोरखपुर स्थित सूर्यकुंडधाम में२००२ से शुरु किया गया सार्वजनिक दीपोत्सव अब शहर की पहचान बन चुका है । संपूर्ण समाज को एक सूत्र में बाधते हुए यह दीपोत्सव पिछले१४ वर्षों से अखंड समाज निर्माण में संलग्न है। सभी धर्म व वर्ग के लोग इसमें शामिल होते हैं और अंधकार से प्रकाश की ओर चलने का संकल्प लेते हैं। २५ हजार दीपों व तेल-बाती का इंतजाम संस्कार भारती द्वारा किया जाता है। इसके अलावा लोग अपने घरों से भी दीपक लेकर आते हैं और पोखरे पर जलाते हैं । यह उत्सव दीपावली के दूसरे दिन होता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार, वनवास के समय भगवान राम, लक्ष्मण व माता सीता ने यहा पर दीप जलाकर भगवान सूर्य की उपासना की थी। एक अन्य कथा के अनुसार अनादि काल से नरक चतुर्दशी व दीपावली के दिन लोग इस पोखरे पर दीप दान करते आ रहे हैं। इस दीप दान को संस्कार भारती ने २००२ से व्यवस्थित रूप दिया। संस्कार भारती के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. मंगलेश , पूर्व अध्यक्ष रविशंकर खरे, महामंत्री जितेंद्र श्रीवास्तव व कोषाध्यक्ष वीरेंद्र कुमार गुप्तासहित पूरी कार्यकरणी ने यह

मिलकर तय किया कि दीपावली के दूसरे दिन यहा दीपोत्सव की परंपरा शुरु की जाय। पहले वर्षइस उत्सव में केवल संस्कार भारती के लोग ही शामिल हुए और कुल लगभग ५०० दीप ही जलाये गए। दूसरे वर्ष से स्थानीय लोग भी इसमें शामिल होने लगे उत्साह देखकर संस्कार भारती ने पाचवे वर्ष से इसे वृहद रूप दिया, व २५ हजार दीपों व तेल बाती का इंतजाम स्वयं किया व लोगोंसे केवल उत्सव में शामिल होकर दीप जलाने का अनुरोध किया। आज़ के समय में पूरा शहर इस दीपोत्सव के कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी निभाता है। युवा वर्ग ख़ासकर युवतिया इस अवसर पर रंगोली आदि बनाकर धरा को सुसज्जित करती हैं तब दीपजलाती हैं। संस्कार भारती के २५ हजार दीपों के अलावा लोग अपने घरों से भी दीप लाकर के इस अवसर पर दीप दान करके स्वय कों इस पर्व में शामिल कर गर्व का अनुभव करते हैं। इस प्रकार संस्कार भारती के द्वारा पौराणिक महत्व का पोखरा पुनः अपने खोए हुए अस्तित्व कों पुनः प्राप्त करसका। हाल ही में संस्कार भारती द्वारा निर्णय लिया गया हैं कि नदियों के संरक्षण के लिए सांस्कृतिक एवं कलात्मक अभिव्यक्तियों से अभियान चलाएगी। संस्था के कलाकार नदियों के किनारे गायन, वादन के अलावा चित्रकला की प्रदर्शनी भी आयोजित करेंगे। ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों कों नदियों के संरक्षण के प्रति जागरूक कर सकें। संस्कार भारती, गोरक्षप्रांत के अध्यक्ष डॉ. शरद मणि त्रिपाठी के अनुसार गोरक्षप्रांत में संस्कार भारती ने, न केवल कलाकारों कों एक मंच प्रदान किया हैं अपितु नवोदित कलाकारों कों पारंपरिक प्रशिक्षण, साँस्कृतिक पृष्ठभूमि प्रदान करने व हिन्दू संस्कृति वसभ्यता के अनुसार ही अपने पारंपरिक पर्व मनाने हेतु दृढ़ आधार प्रदान किया है। गुरु शिष्य परंपराको जीवंत बनाए रखने में भी इसकी महती भूमिका रही है। साँस्कृतिक सभ्यता के साथ ही साथ स्वस्थ मनोरंजन, समस्या विशेष के प्रति जन जागरुकता व उसके निवारण आदि को भी संस्कार भारती के मंच से कला की विभिन्न विधाओ में पीरों करके जन सामान्य के समक्ष प्रस्तुत करने में संस्कार भारतीय की भूमिका उल्लेखनीय है।

अवैद्यनाथ जी महाराज व गोरखपुर में हिंदुत्व:

दिग्विजय नाथ जी महाराज के ब्रह्मलीन होने पर उनके सुयोग्य शिष्य, योगदर्शन के मनीषीआत्मविद श्री अवैद्यनाथ जी महाराज ने उत्तराधिकारी के रूप में गोरक्षपीठ के महंत का पद प्राप्त किया। उन्होने अपने गुरुदेव की पुण्य स्मृति को अपने हृदय में सजोए रखते हुए उनके कार्यों वअनुष्ठानों को अग्रसर करते हुए गोरक्षनाथ मंदिर के भव्य पुनर्निर्माण कार्य में जो निष्ठा व्यक्त की वहउनके पवित्र गुरु

भक्ति व हिंदुत्व के प्रति समर्पण को व्यक्त करता है। अवैद्यनाथ जी महाराज ने श्री दिग्विजयनाथ धर्मार्थ आयुर्वेदिक चिकित्सालय की स्थापना कर महान पुण्यार्जन तो किया ही साथ ही साथ गुरुदेव के प्रति समर्पण को व्यक्त किया है। गुरु शिष्य परंपरा भारतीय समाज़ की संपूर्ण विश्व को देन रही है। नाथ संप्रदाय की परंपरा भी गुरु शिष्य परम्परा को पोषित करती है इस तरहयह हिंदुत्व दर्शन की परंपरा को पोषित करती है। महंत जी अत्यन्त उदार और देश काल की आवश्यकता के अनुसार सुधारों को स्वीकार करने वाले प्रगतिशील संत थे। भारतीय संतों के आकाशमें द्वैदीप्यमान नक्षत्र के रूप में विद्यमान महंत जी अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथी नाथयोगी महासभा तथा श्री रामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष , विश्व हिन्दू परिषद के केंद्रीयमार्गदर्शक मंडल एवं धर्म संसद के स्तम्भ के रूप में निरन्तर सक्रिय पूरे संत समाज़ में अग्रणी स्थानरखते हैं। महंत जी के कथनानुसार प्रत्येक व्यक्ति अपने अन्दर की प्रेरणा से प्रेरित होकर कार्य करता है, वैराग्य उत्पन्न होने पर मनुष्य स्वतः ही इस ओर प्रेरित होकर अपनाना चाहता है। मोक्ष प्राप्ति का एक मात्र साधन वैराग्य को माना गया है। मनुष्य शरीर प्राप्ति के बाद व्यक्ति को मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयासरत होना चाहिए। महंत जी का प्रारम्भिक जीवन दिव्य संस्कारों और सहज़ आध्यात्मिक मनोवृतियों से सर्वथा सम्पन्न है। उन्होने हिमालय की पवित्र गोद में स्थित पौढ़ी गढ़वाल जनपद के कान्डी ग्राम में एतिहासिक सूर्यवंशी क्षत्रिय कुल में१८ मई १९२१ को जन्म लिया था। उनका परिवार समृद्ध पवित्र निष्ठाओ और संस्कारोंका धनी था। विधि के विधान में योग लिखा था तो भोग के प्रति वैराग्य उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था। अवैद्यनाथ जी महाराज प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करके वाराणसी में संस्कृत के अध्यन में तत्परता दिखायी व योगी जीवन के प्रति श्रद्धा व आस्था बढ़ने लगी। आरंभ में आध्यात्मिक पिपासा की तृप्ति हेतु ऋषिकेश की यात्रा की। उस पुण्य क्षेत्र में उन्होंने अनेक साधु सन्यासिवों से मिलकर अपने अनेक जिज्ञासायों के यथार्थ समाधान का प्रयास किया। उन्होने मानसरोवर, कैलाश, तिब्बत, तथा उतराखंड के अनेक तीर्थ स्थलों की यात्रा करके अनेक महात्मावों का सत्संग प्राप्त करते हुए और पूर्व जन्म के संस्कारों के अनुरूप योग दर्शन और विशेषतया नाथ संप्रदाय के सिद्धांतों के अनुशीलन में समय का सदुपयोग किया। इस दिव्य कार्य में उन्हेयोगिराज बाबा गंभीरनाथ जी के दार्शनिक विद्वान शिष्य शान्तिनाथ जी और उनके अनुवर्ती गुरु बंधु निवृतिनाथजी का साथ प्राप्त हुआ। महंत दिग्विजय नाथ जी को एक शिष्य की ख़ोज थी। दैवी प्रारब्ध के अनुरूप योगी शांतिनाथ जी ने अवैद्यनाथ जी महाराज का ध्यान गोरखनाथ मंदिर ,गोरखपुर की ओर आकृष्ट कराया

और वे उन्ही के साथ गोरखमठ में सन १९४० में उपस्थित हुए। श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज ने उन्हे शिष्य केरूप में स्वीकार करके ८ फरवरी १९४२ को योग दीक्षा प्रदान कर विधिवत अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। बनारस के डोम राजा का आतिथ्य स्वीकार करना और उनके यहा भोजन करना दक्षिणभारत के रामनाथपुरम व और मीनाक्षीपुरम में हरिजनों को मुस्लिम धर्म स्वीकार करनेको बाध्य करने पर महंत जी वहा जाकर धर्मांतरण रोकने का सफ़ल अभियान चलाया।

योगी आदित्य नाथ जी महाराज एवं गोरखपुर में हिंदुत्व

नाथ योग सिद्धपीठ गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर के योग तपोमय पावन परिसर में महायोगी गोरखनाथ जी के अनुग्रह स्वरूप बसंत पंचमी माघ शुक्ल5 संवत 2050 विक्रमी तदनुसार 15फ़रवरी सन 1994 शुभ तिथि पर गोरक्षपीठाधीश्वर महंत अवैद्यनाथ जी महाराज द्वारा मांगलिक वैदिक रीतिरिवाज़ से आदित्यनाथ जी महाराज का दीक्षाभिषेक सम्पन्न हुआ। देवभूमि पौढ़ी गढ़वाल जनपद के पंचूर ग्राम में 5 जून 1972 को जन्मे एवं माता पिता द्वारा अजय प्रताप सिंह विष्ट नाम दिया गया। इनके पिता आनंद सिंह विष्ट एक फोरेस्ट रेंजर थे तथा माता का नाम सावित्री देवी है। अपनी माता पिता के सात संतानों में तीन बड़ी बहनों व एक बड़े भाई के बाद ये पाचवे संतान थे। इन्होने 1977 में टिहरी के गजा के स्थानीय स्कूल में शिक्षा प्रारंभ की व 1987 में यही से दसवीं की परीक्षा उतीर्ण की 1989 में ऋषिकेश के श्री भरत मंदिर इंटर कालेज से इन्होने इंटरमीडियट की परीक्षा पास की। 1990 में स्नातक अध्ययन के दौरान ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़े। 1992 में श्री नगर के हेमवती नन्दन बहुगुणा गढवाल विश्वविद्यालय से गणित में बी. एस. सी. की उपाधि प्राप्त की। कोटद्वार में रहने के दौरान इनके कमरे से सामान चोरी हो गया था जिनमे इनके सनद प्रमाण पत्र आदि भी थे इस कारण से गोरखपुर विश्वविद्यालय से विज्ञान स्नातकोत्तर करने का प्रयास असफल हो गया। इसके बाद ऋषिकेश में विज्ञान स्नातकोतर में प्रवेश तो ले लिया परन्तु राम मंदिर आंदोलन का प्रभाव से ध्यान अन्य ओर बंट गया। 1993 में अध्ययन के दौरान गोरखपुर आए उस दौरान महंत अवैद्यनाथ के संपर्क में आए जो इनके पड़ोस के गाँव के निवासी और पुराने परिचित थे। अंततः ये महंत जी के शरण मेंचले गए और दीक्षा ली। 12 सितंबर 2014 को गोरखनाथ मंदिर के पूर्व महंत अवैद्यनाथ के निधन केबाद इन्हे महंत बनाया गया । दो दिनों के बाद इन्हे नाथ संप्रदाय के पारंपरिक अनुष्ठान के अनुसारमंदिर का पीठाधीश्वर घोषित किया गया।

राजनैतिक जीवन : आध्यात्मिक विरासत के साथ ही साथ आदित्यनाथ महाराज को 1998 से राजनैतिक विरासत भी मिली । 1998 के लोक सभा चुनाव में विजयी हुए ,ये उस समय की अर्थात12 वी लोक सभा के सबसे युवा सांसद थे। 1999 में गोरखपुर से पुनः सांसद चुने गए । इस बाइनके जीत का अन्तर मात्र सात हजार के लगभग था। यही से इनके असली राजनीतिक जीवन की शुरूवात होती है | योगी आदित्यनाथ ने पहले गोरक्षा मंच की स्थापना की लेकिन बाद में हिन्दू के बीच विशेषकर हिन्दू युवा वर्ग में अपनी पहचान मुजबूत करने हेतु वराजनीति में युवाओ की भूमिका को समझते हुए आदित्यनाथ ने अपनी युवा वाहिनी गठित किया जिसका नाम "हिन्दू युवा वाहिनी' रखा। अपने आधिकारिक वैबसाइट पर हिन्दू युवावाहिनी अपने को " हिन्दू युवाओ का सामाजिक, साँस्कृतिक और राष्ट्रवादी समूह" घोषित करता है[17]। इसने गाँव –गाँव स्तर पर युवाओ को आदित्यनाथ जी महाराज से सीधे जोड़े रखा। इस संघटन ने अपने को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघऔर बजरंग दल से भिन्न रखा। हिन्दू युवा वाहिनी के सदस्य केवल और केवल योगी आदित्यनाथ की ही सुनते थे। इसकी लगातार चलने वाली साँस्कृतिक गतिविधिया , सामाजिक गतिविधिया गतिविधिया ,लीग से हटकर न सिर्फ़ चुनाव में अपितु चुनाव के बाद भी वर्ष भर चलती रहती थी। इसका सीधा लाभ योगी आदित्यनाथ को 2004 के लोक सभा चुनाव में मिला।पुनः 2009 के लोक सभा चुनाव में दो लाख से अधिक वोटों के अन्तर से विजय श्री प्राप्त की । 2014 के लोक सभा चुनाव में तीन लाख से अधिक वोटों के अन्तर से विजय श्री मिली। " हिंदुत्व राष्ट्र की संचेतना है, इस पर प्रहार महा प्रलय को आमन्त्रण है। " एसे वक्तव्यों की घोसणा करने वाले हिन्दू पुनर्जागरण के महानायक साँस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रतीक एवं हिंदुत्व वविकास के स्वप्नद्रष्टा योगी आदित्यनाथ जी महाराज आज़ गोरखपुर ही नहीं अपितु पूरे भारत वर्ष में हिंदुत्व केपर्याय हो चुके हैं। 19 मार्च 2017 को उत्तर प्रदेश के भारतीय जनता पार्टी के विधायक दल के नेता चुने जाने के बाद मुख्य मंत्री का पद सौपा गया।"मुख्य मंत्री पद पर आसीन होने के बाद उन्होने संकल्प लिया" भारतीय जनता पार्टी, एकात्म मानववाद के प्रणेता दीन दयाल उपाध्याय को नमन करते हुए उनके स्वप्न को साकार करेगी।

हिन्दू युवा वाहिनी और गोरखपुर: हिन्दू युवा वाहिनी का आधिकारिक मुख्यालय भले ही नई दिल्ली में हो , परंतु व्यावहारिक रूप से उसके समस्त गतिविधियों का केंद्र गोरखपुर ही रहता है। गोरखपुर

[17] hinduyuvavahini.co.in

और उसके आस पास के समस्त ज़िले में हिन्दू युवा वाहिनी का सघन प्रभाव है। गाँव– गाँव तक फ़ैला यह संगठन जोशीला, ऊर्जावान, तरुण युवाओ का संगठन है । 2002 में इसकी स्थापना के बाद से ही यह पूर्वाञ्चल में प्रासंगिक रहा है। धर्मांतरण के विरुद्ध अभियान, गाँव – गाँव में अशिक्षा , गरीबी के कारण धर्म परिवर्तन कराने वाले मिशनरी संस्थावों को पहचान कर उनके विरुद्ध कठोर कार्यवाही करने के लिए , भले ही वह अवैधानिक तरीक़े से किया जाय , इसके लिए हिन्दू युवा वाहिनी को जानाजाता है। गौ रक्षा व गौ पालन पर युवाओ को ज़ोर देकर इनकी रक्षा करने व स्वरोज़गार प्राप्त करने को कहा जाता है। एंटि रोमिओ स्क्वाड के रूप में हिन्दू युवा वाहिनी के युवा माताओ, बहनों की घर से बाहर निकलने पर उनकी मानसिक परेशानी से बचाने का कार्य मानते हैं परंतु वास्तविकता में, मुस्लिम पुरुष व हिन्दू महिला के किसी भी प्रकार के संबंध को रोकने हेतु हिन्दू युवा वर्ग को प्रेरित किया जाता है। हिन्दू युवा वाहिनी के कार्यकर्ता हमेशा से उग्र स्वभाव के रहे हैं। आक्रामक, उग्र स्वभाव का वृहद इस्तेमाल गोरखपुर और उसके सीमावर्ती ज़िलों में योगी आदित्यनाथ ने किया। गोरखपुर को अधिशासित करने की भूमिका में उन्हे लाने का श्रेय हिन्दू युवावाहिनी को ही जाता है। गोरखपुर में रहना है , तो योगी – योगी कहना है। जैसे वाक्य हिन्दू युवावाहिनी के कार्य कर्तावों के नारा हुआ करता था। कुशीनगर ज़िले में पड़रौना में धर्मांतरण की सूचना मिलने पर आक्रामक नारे के साथ "यूपी गुजरात बनेगा, पड़रौना शुरुवात करेगा" व्यापक विरोध किया। 2005 में हिन्दू युवा वाहिनी के कार्यकर्तावों के द्वारा एटा ज़िला में सही रणनीति बनाकर कुल 1800 ईसाईयों का शुद्धिकरण कर वापस हिन्दू धर्ममें लाने का श्रेय योगी जी को जाता है।

योगी आदित्यनाथ और भारतीय जनता पार्टी :

गोरखपुर के संदर्भमें हिंदुत्व की राजनीति की बात करे तो योगी आदित्यनाथ प्रथम पक्ति मेंआएंगे। 1999 में जब मात्र 7 हजार वोटों के अन्तर से विजय श्री मिली तो आदित्यनाथ ने क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी की कमजोरियों को भाप लिया। स्थानीय स्तर पर होने वाली तमाम गुटबाजी से तंग आकर हिन्दू युवा वाहिनी नामक अघोषित राजनीतिक पार्टी बनाई। 2002 में इसके स्थापना के बाद से ही इसने सक्रिय भूमिका शुरू कर दी। इसका सीधा असर 2002 के गोरखपुर विधानसभा चुनाव में देखने को मिला। योगी आदित्यनाथ ने भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी शिव प्रताप शुक्ला के विरुद्ध मंदिर के प्रत्याशी के रूप में अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के टिकिट पर डॉ. राधा मोहन अग्रवाल को चुनाव के मैदान में उतार दिया।

इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी की हार हुई व योगी आदित्यनाथ समर्थित अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के प्रत्याशी डॉ राधामोहन अग्रवाल ने विजय श्री अर्जित की। ये घटना योगी आदित्यनाथ की पहली रणनीतिक विजय मानी जाती है। इस घटना के बाद भारतीय जनता पार्टी गोरखपुर इकाई व योगी आदित्यनाथ में दूरिया आंतरिक रूप से बढ़ने लगती हैं। इसके बाद योगी जी ने क्षेत्रीय स्तर परसिर्फ़ भारतीय जनता पार्टी के चिन्ह पर चुनाव लड़ा। चुनाव की रणनीति स्वयम बनायी। 2007 में गोरखपुर में कर्फ्यु की घोसणा होने पर योगी जी को गिरफ़्तार करके लगभग 15 दिनों तक जेल में रखा जाता है। वहा उन्हे सांसद होते हुए भी कोइ विशेष सुविधा नहीं दी जाती है, इस स्थिति पर भी भारतीय जनता पार्टी की स्थानीय इकाई कोई विशेष प्रयास नहीं करती इससे योगी जी काफ़ी दु:खी व विचलित हो जाते हैं व मुक्त होने पर सदन में जाते ही रो पड़ते हैं। तत्कालीन लोक सभा अध्यक्ष श्री सोम नाथ चटर्जी से प्रश्न वाचक लहजे में पूछते हैं? मैं सदन का सदस्य हू कि नहीं।इस घटना के बाद एक बार तो इस तरह माहौल बन गया कि लगा कि योगी जी भारतीय जनता पार्टी छोड़ देंगे। योगी जी ने भारतीय जनता पार्टी से त्याग पत्र नहीं दिया परंतु इसका सिर्फ़ राजनीतिकइस्तेमाल चुनाव लड़ने हेतु करते थे। और चुनाव मे विजय श्री के बाद अघोषित रूप सेअपना क्षेत्र हिन्दू युवा वाहिनी के माध्यम से क्षेत्र के बाहर भी बढ़ाते जा रहे थे। दूसरे ज़िले में भीहिंदुत्व से ओत प्रोत कार्यक्रमों में जाते थे। इस तरह ये क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी को भी अधिशासित करने कि भूमिका में आ गए। गोरखपुर के आस पास की संसदीय सीट के लिए भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी चयनमें इनकी उल्लेखनीय भूमिका हो गई।

योगी आदित्यनाथ : मुख्यमंत्री और गोरखपुर

योगी आदित्यनाथ की भूमिका सांसद के रूप में गोरखपुर में एक संघर्ष शील् नेता के रूप में रही है। एक मुख्यमंत्री के रूप में उनकी नियुक्ति हिंदुत्व की राजनीति करने वाले संगठनो के लिएनया प्रयोग है। मुख्यमंत्री के रूप में गोरखपुर में विकास परियोजनावों का जालबिछा दिया। 15हजार करोड़ रुपये से अधिक की परियोजना का उपहार गोरखपुर को मिल चुका है। गोरखपुर में चिड़ियाघर निर्माण , राम गढताल का सौंदर्य करण , बन्द पड़े खाद कारखाने को पुनः शुरू करवाना गोरखपुर में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की स्थापना , गोरखपुर में मेट्रो के द्वारा परिवहन सुविधा की योजना पर क्रियान्वयन मुख्य मंत्री के रूप में कुशल राजनेता होने का प्रमाण है। मुख्यमंत्रीहोने के बाद गोरखपुर शहर के हर चौराहों पर स्थित मूर्तिवों

का सुन्दरीकरण , सड़कों का चौड़ीकरण व पूरे शहर की खाली पड़ी हुई दीवारों पर जिसपर पहले फिल्मों के अश्लील पोस्टर चिपके होते थे उनके स्थान पर गोरखपुर के गौरवशाली इतिहास से जुड़े भित्ति चित्रों , कुंभ स्नान को प्रेरित करने वाले चित्रों , व महायोगी गुरु गोरक्षनाथ के चित्र, शहर के निकटवर्ती अन्य तीर्थ स्थल जैसे कुशीनगर के बौद्ध स्तूप, भगवान बुद्ध की प्रतिमा का भित्त चित्र बनवाकर पूरे शहर का सांस्कृतिकरण कर दिया हैं। वनटंगिया जनजाति के लोगों के क्षेत्र को राजस्व गाँव का दर्ज़ा भी आदित्यनाथ जी महाराज ने दिलाया है।

गोरखपुर में स्थित हिंदुत्व की संस्थावों का समन्वय व कार्य प्रणाली:

गोरखपुर में स्थित हिंदुत्ववादी संस्थाएसामान्य परिस्थितियों में तो अपने स्वतंत्र कार्य क्षेत्र के अनुसार अपना कार्य करती हैं। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के विभिन्न प्रकल्पों में नियोजित कर्मचारी गण सामान्यतया राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता हैं और ये मंदिर के हर कार्य में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। विश्व प्रसिद्ध मकरसंक्रांति मेला में कुशलता पूर्वक प्रबंधन हो या मंदिर में होने वाले समारोह इन सभी में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के कर्मचारीगण पूरे उत्साह से भागीदारी निभाते हैं। सरस्वती शिशु मंदिर के माध्यम से शिशु अवस्था से ही छात्र वर्ग हिंदुत्ववादी परिवेश में विकास करते हैं। विद्यालय केकार्यक्रमों से अभिभावकगण भी प्रभावित होते हैं , और हिंदुत्व की ओर उनका झुकाव होता है। इसी प्रकार गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सालय में शहर के लगभग सभी प्रतिष्ठित चिकित्सक अपना योगदान देते हैं इस तरह चिकित्सक वर्ग से भी जुड़ाव हो जाता है । युवा वर्ग योगी आदित्यनाथ को अपना आदर्शमानकर उन्हे मत दान करता है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद पूर्वाञ्चल के शैक्षणिक जगत में एक बड़ा नाम है । इन संस्थावों में दस हज़ार से अधिक विद्यार्थीगण अध्ययन करते हैं वे तथा उनके अभिभावकगण इन राष्ट्रीयता से ओत प्रोत संस्थाओ से सीधे प्रभावित होते हैं। महाराणा प्रताप शिक्षा समुदाय द्वारा प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला महाराणा प्रताप सप्ताह में संस्थान के प्रकल्पों के मध्य विभिन्न प्रति योगितावों से उनमें आपस में स्वस्थ स्पर्धा की भावना व आस पास के परिवेश को हिंदुत्व के रंग में रंगने का अवसर मिलता है। कट्टर हिंदुत्व के लिए प्रसिद्ध हिन्दू युवा वाहिनी के कार्यकर्ता गोरखपुर व आस पास के ज़िले में सांस्कृतिक कार्यक्रम , शुद्धिकरण, धर्मांतरण को रोकने में हर परिस्थिति में तैयार मिलते हैं। संस्थाए अपने छात्रों को अपने यहा के अग्रिम पाठ्यक्रम में अध्ययन को उत्सुक होने पर प्रवेश में वरीयता प्रदान करते हैं । संस्थाए अपने विवरणिका में संस्था हित में

मेधा सूची से अन्यथा भी छात्र को प्रवेश देने का अधिकार सुरक्षित रखती हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सभी कार्यक्रमों का क्रियान्वयन मंदिर परिसर से ही होता है।

उपसंहार : इस प्रकार हम देखते हैं कि गोरखपुर में हिंदुत्व की राजनीति के अंकुर प्राचीन काल से ही मौजूद हैं। संत कबीर, गुरु गोरक्षनाथ, महात्मा बुद्ध व भगवान महावीर जैसे महापुरुषों की चरण रज़ में बसा गोरखपुर हमेशा से ही हिंदुत्व की राजनीति के लिए उर्वर रहाहै।विश्व में धार्मिक पुस्तकों के लिए प्रसिद्ध गीता प्रेस गोरखपुर में ही स्थित है पड़ोसी देश नेपाल जो हिन्दू राष्ट्र के रूप में काफ़ी समय तक अपने को राजतन्त्र के अधीन शासित रखा उनके राजमुकुट में गुरु गोरखनाथ का चित्र राजतन्त्र की गुरु गोरखनाथ के प्रति आस्था व श्रद्धा को प्रगट करता है। इस तरह हम देखते हैं कि गोरखपुर का इतिहास व भूगोल उसकी साँस्कृतिक, राजनीतिक व जननांकीय परिस्थितिया गोरखपुर को हिंदुत्व की राजनीति के लिए हमेशा ही जीवंत रखता है।

अध्याय-पंचम्

हिन्दुत्व की राजनीति एवं उसका क्षेत्रीय मतदाताओं पर प्रभाव

पूर्वांचल का गौरव "गोरखपुर" गगनचुंबी हिमालय की तलहटी में सुशोभित एक स्वर्णिम ऐतिहासिक महत्व वाले स्थल के रूप में वर्णित एक प्रमुख नगर है।राप्ती नदी के तट पर स्थित यह नगर हमारी प्राचीन कीर्ति का उद्घोषक है।भौगोलिक रूप से उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र के तराई क्षेत्र में स्थित गोरखपुर की अवस्थिति २६ डिग्री 13 मिनट उत्तर से 27 डिग्री २९ मिनट उत्तर अक्षांशीय विस्तार तथा 83 डिग्री 5 मिनट पूर्व से 83 डिग्री 56 मिनट पूर्व के बीच देशांतरीय विस्तार के मध्य स्थित है। प्राचीन समय में गोरखपुर में कुशीनगर, आजमगढ़ आदि आधुनिक जिले शामिल थे। विभिन्न काल खंडों में विभिन्न नामों से जाना गया, जैसे पिपली पुरम,मुज्जमाबाद ,रामगढ़ या राम ग्राम जो कोलीय साम्राज्य की राजधानी थी। कालांतर में नाथ संप्रदाय के योगी गोरक्षनाथ के नाम पर वर्तमान नाम गोरखपुर पड़ा। धार्मिक दृष्टिकोण से गोरखपुर विभिन्न धर्मों हेतु भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है यथा जैन, हिंदू,बौद्ध, मुस्लिम सभी धर्मों हेतु प्रमुख स्थान रखता है।

वर्तमान गोरखपुर का क्षेत्रफल 5484 वर्ग किलोमीटर है।गोरखपुर में हिंदू धर्म का प्रतिशत90.28 होने के कारण हिंदू धर्म की प्रधानता है। नाथ संप्रदाय के सिद्ध पीठ बाबा गोरक्षनाथ की तपस्थली होने, एकमात्र हिंदू राष्ट्र नेपाल की खुली सीमा से जुड़े होने के कारण प्राचीन काल से ही हिंदुत्व की राजनीति के लिए गोरखपुर की भूमि उर्वर रही है। धार्मिक पुस्तक के प्रकाशक गीता प्रेस की उपस्थिति इसे विश्व पटल पर स्थान दिलाने में सफल रही है ।सूर्य कुंड धाम, भीम सरोवर आदि इसके पौराणिक महत्व के साक्षी हैं। गोरखपुर में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की उपस्थिति और प्रभाव था। 1952 में प्रथम सरस्वती शिशु मंदिर गोरखपुर में ही स्थापित हुआ। जिसने बाल्यकाल से ही हिंदुत्ववादी छवि विद्यार्थियों में विकसित करवाने में महती भूमिका अदा की है। सामाजिक समरसता के ध्वजवाहक के रूप में पीठ की भूमिका पूर्वांचल ही नहीं अपितु देश के कई राज्यों में भी रही है, परंतु गोरखपुर स्थित मठ सबसे बड़ा है ।नेपाल के राजपरिवार की भी इस मठ में गहरी आस्था है। इस मठ का शुरू से ही गोरखपुर में सामाजिक और सांस्कृतिक क्रियाकलाप में काफी योगदान योगदान रहा है। क्षेत्र में ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज ने शिक्षा को लोक जागरण एवं राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का सशक्त माध्यम स्वीकार करते हुए 1932 में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की ।महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अंतर्गत आज दर्जन भर से अधिक

शिक्षण संस्थाएं राष्ट्र निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही हैं इसके साथ ही साथ, जन सेवा हेतु गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सालय, परंपरागत चिकित्सा पद्धति को जीवंत बनाए रखने व उसके उपयोग हेतु महंत दिग्विजय नाथ आयुर्वेद चिकित्सालय, प्राचीन योग पद्धति को जीवंत बनाए रखने व उसका मानव जीवन के कल्याण हेतु कुशल उपयोग हेतु महायोगी गुरु गोरखनाथ योग संस्थान आदि संस्थाएं मानवता के कल्याण के लिए प्रयत्नशील हैं ।धार्मिक क्षेत्र में नाथ संप्रदाय की पीठ के प्रति गोरखपुर के आमजन में काफी श्रद्धा है। १९४९ में बाबरी मस्जिद मुद्दे को तत्कालीन महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज ने काफी प्रमुखता से उठाया तथा 1980 से राम जन्मभूमि आंदोलन को संघ परिवार से पीठने उसी रूप में अपना लिया। १९९१ के राम जन्म भूमि विवाद के बाद तत्कालीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज को राम मंदिर निर्माण समिति का अध्यक्ष बनाया गया।

हिंदुत्व राजनीति का गोरखपुर में चुनाव रुझान का अध्ययन करने के लिए, रेंडम सेंपलिंग मेथड वह इसके अंतर्गत स्पेसिफिक और इसी ग्रुप डिस्कस के माध्यम से चुनाव रुझान का अध्ययन करने का प्रयास किया गया। गोरखपुर शहरी और गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र की 100 मतदाताओं से बातचीत के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचा गया कि गोरखपुर की अधिकांश जनसंख्या का मठ के प्रति गहरी आस्था है,गोरखपुर की जनसंख्या में, हिंदू धर्म का प्रतिशत90.28 होने के कारण हिंदू धर्म के प्रति जनसंख्या में भारी झुकाव आता है ।हिंदू वाहिनी जैसे, युवा हिंदू पुरुषों का समूह,विभिन्न कार्यक्रमों व अपने सांस्कृतिक गतिविधियों द्वारा जनसमूह के बीच अपनी गहरी पकड़ के कारण हमेशा ही अपने को आमजन के बीच सुसंगत रखता है।हर वर्ष नवरात्र पर्व से लेकर विजयदशमी व दीपावली , गोरखपुर महोत्सव जैसी गतिविधियां गोरखपुर में हिंदुत्व की राजनीति को हमेशा जीवंत रखती हैं। गीता प्रेस जैसी विश्व प्रसिद्ध धार्मिक पुस्तकों प्रकाशक की गोरखपुर में उपस्थिति इसे हिंदुत्व के लिए हमेशा ही सुसंगत बनाए रखती हैं गोरखपुर के नाथ संप्रदाय की सिद्धपीठ के राजनीति में प्रवेश का काल 1920 से प्रारंभ होता है। दिग्विजय नाथ जी महाराज ने सर्वप्रथम पीठ से इस क्षेत्र में कदम रखा । राष्ट्रीय असहयोग आंदोलन से प्रेरित होकर उन्होने विद्यालय छोड़ दिए। महात्मा गांधी की हत्या जिस बंदूक से की गई थी उसे उपलब्ध कराने का उनपर आरोप था जिसके लिए इन्हे 9 माह के कारावास की सजा भी हुई थी[1] । १९४९ से ही उन्होंने बाबरी मस्जिद मुद्दे को मजबूती से उठाते हुए उसे राम

[1] पाई एंड कुमार २०१८,११९-१२०

मंदिर आंदोलनमे बदलवा दिया[2] । संक्षेप में हम कह सकते हैं कि दिग्विजय नाथ जी ने मठकी पहचान बदल दिया। १९३४ में उन्होंने महंत पद प्राप्त किया । १९३० ई से मठ का स्वरूप बदलने लगा । मठ हिंदू मुस्लिम सामान्य आधार को दरकिनार कर मुस्लिम विरोधी स्वरूप का प्रतीक बनने लगा । मठ में जहाँ एक यौगिक पगचिन्ह आराधना का मुख्य बिन्दु होता था । वही आज़ सभी हिंदू देवी देवताओं की मूर्तियां,बलवान हिंदूवाद के देवता हनुमान जी सहित सभी की मूर्तियां स्थापित हो चुकी हैं।इस तरह हम देखते हैं कि गुरु गोरखनाथ का पवित्र अहाता समय-समय पर भिन्न भिन्न रूप में इस नगर को, इस जगत का मार्गदर्शन करता रहा । आजादी के मिलने के बाद प्रथम बार 1962 में अवैध नाथ जी को विधानसभा के चुनाव में विजय मानी राम विधानसभा से मिली। महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज को १९६७ के लोक सभा चुनाव में विजय हिंदू महासभा के टिकट पर मिला । 1969 में महंत दिग्विजय नाथ जी ब्रह्मलीन हो गए इसके बाद उनकी राजनीतिक और धार्मिक विरासत को उनके शिष्य महंत अवैद्यनाथ जी महाराज ने संभाला ।प्रदेश में नहीं अपितु पूरे देश में बहुत कम ऐसे राजनेता होंगे जो5 बार विधानसभा में, चार बार लोकसभा में विजयी हुए हो।

महंत अवैद्यनाथ जी महाराज ने अपने जीवित रहते हुए ही अपनी विरासत अपने शिष्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज को सौंप दी, अपने गुरु द्वारा दी गई राजनीतिक विरासत को उन्होंने इस तरह विस्तार दियाकि वह आज गोरखपुर में अपराजेय हो चुके हैं ।आध्यात्मिक विरासत के साथ ही साथ आदित्यनाथ जी महाराज को 1998 से राजनीतिक विरासत भी मिली । 1998 के लोकसभा चुनाव में विजयश्री के दौरान, उस समय की अर्थात 12 वीं लोकसभा के सबसे युवा सांसदचुने गए थे ।

1999 में ,गोरखपुर से तेरहवी लोकसभा के लिए पुनः चुने गए। इनकी जीत का अंतर मात्र 7322 मत रहा । यही से इनके अपनी राजनीतिक जीवन की शुरुआत होती है ,राजनीति में युवाओं की भूमिका को समझते हुए आदित्य नाथ जी महाराज ने अपनी युवा वाहिनी गठित की इसका नाम "हिंदू युवा वाहिनी रखा जो कि अपने को हिंदू युवाओं का सामाजिक और राष्ट्रवादीसमूह घोषित करता है । इसने गांव स्तर पर युवाओं को आदित्यनाथ जी महाराज से जोड़े रखा।

इस संगठन ने अपने को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और बजरंग दल से भिन्न रखा इसके लगातार चलने वाले सांस्कृतिक गतिविधियां, सामाजिक गतिविधियां लीग से हटकर न सिर्फ चुनाव अपितु चुनाव के बाद भी

[2] वान डेर वीर १९८७

वर्षभर चलती रहती थी इसका सीधा लाभ योगी आदित्यनाथ को 2004 के लोकसभा चुनाव में मिला। पुनः 2009 के लोकसभा चुनाव में दो लाख से अधिक वोटों के अंतर से विजयश्री प्राप्त की । 2014 के लोकसभा चुनाव में 300000 से अधिक वोटों के अंतर से विजयश्री मिली। हिंदुत्व राष्ट्र की संचेतना है इस पर प्रहार महाप्रलय को आमंत्रण है ऐसे वक्तव्य की घोषणा करने वाले हिंदू पुनर्जागरण के महानायक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रतीक एवं हिंदुत्व विकास के स्वप्न द्रष्टा योगी आदित्यनाथ जी महाराज आज गोरखपुर ही नहीं अपितु पूरे भारतवर्ष में हिंदुत्व के पर्याय हो चुके हैं।19 मार्च 2017 को उत्तर प्रदेश के भारतीय जनता पार्टी के विधायक दल के नेता चुने जाने के बाद मुख्यमंत्री का पद सौंपा गया ।मुख्यमंत्री पद पर आसीन होने के बाद उन्होंने संकल्प लिया भारतीय जनता पार्टी एकात्म मानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्याय को नमन करते हुए उनके स्वप्न को साकार करेगी।

गोरखपुर में लोक सभा निर्वाचन के दौरान 12 वी लोक सभा से लेकर 17 वी लोक सभा तक भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी द्वारा प्राप्त मतों का प्रतिशत :

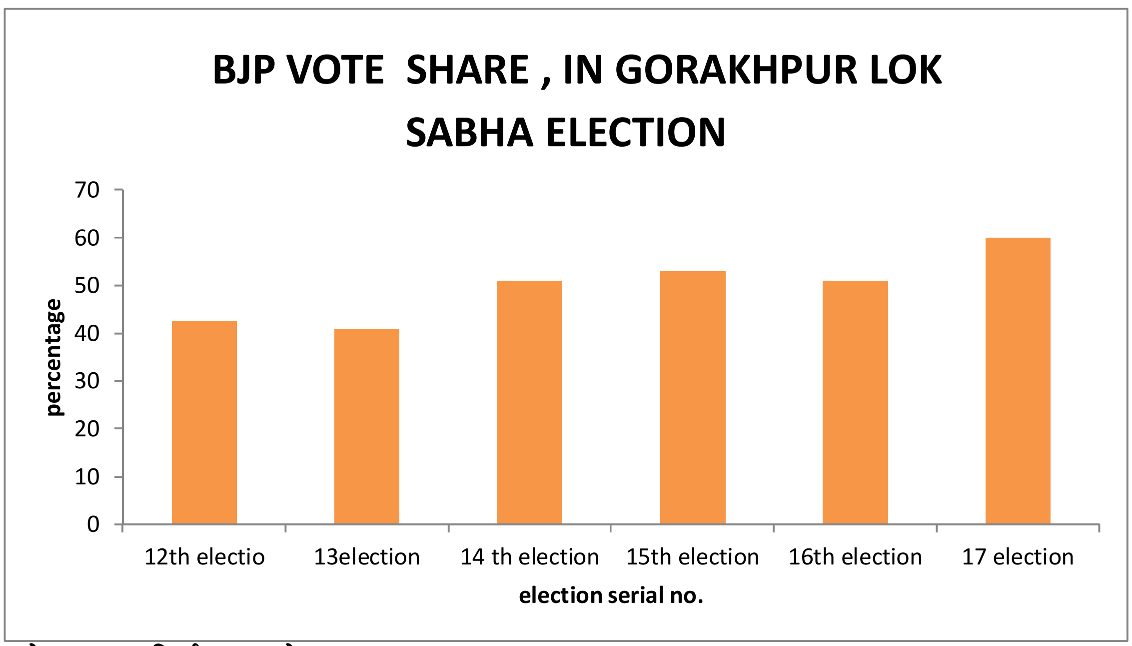

स्रोत- (भारत निर्वाचन आयोग)

उपर्युक्त रेखा चित्र के माध्यम से गोरखपुर में 12 वीं लोकसभा से लेकर सत्रहवी लोकसभा तक की भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी द्वारा प्राप्त मतों को दर्शाया गया है। 1998 की 12 वीं लोकसभा चुनाव में 42.6 2 % मत भारतीय जनता पार्टी को प्राप्त हुआ। पुनः आगे 1999 में तेरहवीं लोकसभा में भारतीय जनता

पार्टी प्रत्याशी को 41.10 प्रतिशत मत ,2004 में 14 वी लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी को 51.31%, 2009 की पंद्रहवीं लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी को53.85 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। पुनः 2014 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी को 51.83 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। पुनः 2019 की 17 में लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी को 60.54 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ ।उपर्युक्त आकड़े सिद्ध करते हैं और दर्शित करते हैं कि 12 वी से लेकर 17वी लोकसभा चुनाव के दौरान, भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी का मत प्रतिशत लगातार बढ़ा है ,इसमें योगी आदित्यनाथ जी कुशल राजनीतिक भूमिका है ।12 वीं लोकसभा से लेकर 16वीं लोकसभा तक भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी के रूप में आदित्य नाथ जी महाराज ने गोरखपुर की जन आकांक्षाओं को मतके रूप में प्राप्त कर विजयश्री प्राप्त करते रहें हैं।

विभिन्न मतदाताओं का साक्षात्कार:

गोरखनाथ मन्दिर को आमजन केवल हिंदुत्व के केंद्र के रूप में ही देखता हैं। लेकिन हिंदुत्व के केंद्र होने के साथ ही साथ मन्दिर परिसर सांप्रदायिक सदभावना का केंद्र भी है। परिसर में कई मुस्लिम परिवार पीढ़ियों से रहते हैं और मन्दिर परिसर मे ही विभिन्न व्यवसायों कर जीविकोपार्जन करते हैं। वे मन्दिर की व्यवस्था में इतने रच बस गए हैं कि वे मन्दिर की उतनी ही फिक्र करते जितना की एक हिन्दू धर्मावलंबी। गोरखनाथ मन्दिर के सबसे पुराने कर्मचारी व वर्तमान सचिव श्री द्वारिका तिवारी से प्राप्त जानकारी के अनुसार " मन्दिर की उदार परम्परा का यह जीवंत उदाहरण है"। " वे कहते हैं जो लोग गोरक्षपीठ को अपने ढंग से समझने का प्रयास करते हैं उन्हे सामाजिक समरसता के प्रति योगदान को अवश्य देखना चाहिए। परिसर में कर्मचारी श्री मोहम्मद यासीन बताते हैं कि उनके ससुर स्वर्गीय जग्गन भी यही रहते थे। परिसर में होने वाले हर निर्माण कार्य की जिम्मेदारी इन्ही की होती है। यासीन कहते हैं कि हम १९७७ से मन्दिर में रह रहे हैं हमे कभी भी किसी प्रकार का भय या दूसरे समुदाय का होने का अहसास न हुआ। अकसर निर्माण कार्य आदि हेतु मन्दिर के गर्भ गृह तक आना जाना बेरोकटोक होता रहता है इन्नायतुल्लाह व नसीर मन्दिर में राजगीर का कार्य करते हैं। मन्दिर की गोंशाला में योगी जी जहाँ गौ सेवा करते हैं वहा की व्यवस्था सभालने में मुहम्मद मान की भूमिका महत्वपूर्ण है। मुस्तकीम, मुल्ला जी,नूरजहा, सोनू, हज़रत अली, अमानुल्लाह, मुस्तफ़ा तीन दशक से शृंगार सामग्री चूड़ी इत्यादि बेचने के साथ ही साथमन्दिर की व्यवस्था भी सभालने में योगदान

देते हैं। मन्दिर का भंडारा सामाजिक समरसता का जीवंत उदाहरण है। यहा ऊपर और नीचे की मंजिल पर दो भंडारे हैं। इनमे हर रोज़ औसतन ४०० लोगों का भोजन बनता है। सबके लिए समान भोजन बनता है। भंडारे में भोजन बनाने के लिए क़रीब एक दर्जन भण्डारी हैं। इनमे कैलाश प्रजापति मुख्य हैं। इनके सहित अधिकांश पिछड़ी जाति के हैं। श्रवण धोबी जाति से ताल्लुक रखते हैं। बेचन गौड़, शंकर गौड़, बाबूलाल निषाद, पिंटू गौड़, रामनरेश वर्मा, विजय निषाद , और श्याम बदन राजभर आदि। महंत अवैद्यनाथ के समय उनके कार चालक रामदेव दलित हैं। योगी जी के व्यक्तिगत वाहन चालक प्रकाश राजभर हैं।

हिंदुत्व के गढ़ , गोरखपुर में, मंदिर के निकट रहने वाले राष्ट्रवादी मुस्लिम परिवार के मुखिया डॉ इकबाल अहमद दानी के दिए गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी के अनुसार गोरखपुर में, मात्र हिंदू समुदाय की नहीं अपितु मुस्लिम वर्ग का एक बड़ा हिस्सा पीठ के प्रति आस्था रखता है। मंदिर के निकट ही इनका आवास होने के कारण ,मंदिर की गतिविधियों को लगातार देखते रहते हैं, ब्रह्मलीन दिग्विजय नाथ जी महाराज के समय से इनका परिवार मंदिर के प्रति निष्ठावान रहा है। मंदिर के पीठाधीश्वर जब- जब चुनाव के मैदान में उतरा है इनका परिवार ने खुला समर्थन किया है और मंदिर ने भी समय समय पर काफ़ी मदद की है। उन्होने हिंदुत्व को काफी करीब से देखा है, इन्होंने मंदिर की सारी गतिविधियों में कुछ इस तरह भाग लिया है कि इनका परिवार अधिकांश हिंदू रीतिरिवाजों को मानने लगा है, इनके घर में मंगलवार को हनुमान जी के दिन के रूप में व्रत का पालन करते हैं। घर में मांस मदिरा का सेवन नहीं होता। मठ के राजनीतिक जीवन की शुरुआत से ही इनका परिवार मठ को ही वोट देता है चाहे चुनाव परिणाम कुछ भी हो।।

डॉ . यू. पी. सिंह , महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यू. पी. सिंह के अनुसारब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज द्वारा स्थापित यह परिषद , पूर्वाञ्चल के एक बड़े भाग में ज्ञान का प्रकाश फैलाता रहता है। 1932 में इसकी स्थापना के बाद से ही शैक्षणिक जगत में ये संस्था ससक्त हस्ताक्षर रूप में उभरा है। अपनी साँस्कृतिक और राष्ट्रवादी गतिविधियों से अभिभावकों, छात्रों , अध्यापक गण में , साँस्कृतिक जुड़ाव, रचनात्मक गतिविधियों हेतु ये परिषद प्रमुख स्थान रखता है।

महाराणा प्रताप डिग्री कालेज के प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव, जो कि नाथ संप्रदाय के विषय जानकार माने जाते हैं ने अपने संपादन में "राष्ट्रीयता के अनन्य साधक महंत अवैद्यनाथ" नामक पुस्तक में , नाथ संप्रदाय के गौरवशाली और हिन्दू मुस्लिम को साथ लेकर चलने की परंपरा का वर्णन किया है। श्री राम मंदिर आन्दोलन

के शीर्ष नेता गण के लिए गोरक्षपीठ रणनीतिक केंद्र रहा। श्री राम मंदिर आन्दोलन का गोरक्षपीठ से संबंध पीढ़ियों का है। गोरक्षपीठ ने ब्रिटिश काल से ही आन्दोलन का शंखनाद कर दिया है।

श्री चन्द्रशेखर सिंह, पार्षद एवं पूर्व उपसभापति, नगर निगम, गोरखपुर, के अनुसार गोरखपुर में हिंदुत्व की राजनीति के फलने फूलने में युवा वर्ग की महती भूमिका रही है। युवा अपने धर्म,संस्कृति पर गर्व करते हुए विकास की गंगा में स्नान करना चाहता है। अपने बीच योगी आदित्यनाथ जैसा नेतृत्व पाकर वह पूरी ऊर्जा से उनके साथ उनका अनुगामी बन जाताहै।

योगी आदित्यनाथ और आदिवासी प्रेम

गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में बसे वनटांगिया समुदाय जो अनुसूचित जनजाति में आते हैं उनका आदित्यनाथ जी से गहरा लगाव है। वे दीपावली का उत्सव उन्ही के साथ मनाते हैं। गोरखपुर स्थित कुसमी जंगल के पाँच क्षेत्र को, जंगल तिनकोनिया संख्या 3, रज़हीं खाले टोला, रज़हीं नर्सरी, आमबाग नर्सरी व चिलबिलवा में इनकी पाँच बस्तिया वर्ष 1918 में बस गई थीं। 1947 में देश स्वतंत्र होने के बाद भी इनका जीवन नहीं पराधीन भारत में जैसा था उसी तरह रह गया। गोरखपुर से सांसद रहने के दौरान योगी आदित्यनाथ ने अपने संस्थान के माध्यम से इनके बालको हेतु अस्थाई विद्यालय, चिकित्सा हेतु मोबाइल वेन आदि सुविधाओ उन्हे उपलब्ध कराया। जंगल तीनकोनिया के रामगणेश जी कहते हैं " महाराज जी (योगी आदित्यनाथ) हमारे लिए राम की तरह आए जिन्होने अहिल्या का उद्धार किया था। सन 2009 से लगातार हमारे साथ दिपावली का पर्व मनाते हैं, मुख्य मंत्री बनने के बाद पहली दीपावली में वनटाँगिया गाँवों को राजस्व गाँव की प्रास्थिति प्रदान की। पिछले तीन वर्षो में आवास, सड़क, बिज़ली, पानी,स्कूल,आंगनबाड़ी केंद्र, आर. ओ. पानी की मशीने, सभी के पास मुख्यमंत्री आवास योज़ना का पक्का मकान, कृषि योग्य भूमि, आधार कार्ड,रसोई कार्ड, रसोई गैस की सुविधा उपलब्ध है। योगी आदित्यनाथ ने 2019 की दिपावली पर्व पर जंगल तिनकोनिया नंबर 3 में कई घरों में गृह प्रवेश कराया, उनके घरों में दीपक जलवाया और खीर हलवा भी खाया। 2019 की दीपावली तक वनटाँगिया गाँव में 85.876 हेकटेयर कृषि योग्य भूमि, 9.654 हेक्टेयर आवासीय भूमि, 788 मुख्यमंत्री आवास योज़ना के आवास, 895 शौचालय, 49

को निराश्रित पेंशन, 38 को दिव्यांग पेंशन,125 को वृद्धा पेंशन, 647 को सौभाग्य योज़ना का लाभ, 895 को अंत्योदय राशन कार्ड और 600 को उज्ज्वला योज़ना का रसोई गैस कनैक्शन मिल चुका हैं ।

निषाद समुदाय एवं गोरखपुर की राजनीति

हिन्दू धर्म में प्रचलित मान्यता के अनुसार केवट ने प्रभु श्री राम सीता माता लक्ष्मण को अपनी नाव में बैठाकर गंगा नदी को बनवास जाते समय पार कराई थी । केवट जिन्हें निषाद राज केवट कहते हैं ।मंडल राजनीति के उदय के बाद गोरखपुर से दो बड़े निषाद नेता उभर कर क्षेत्र के निषाद समुदाय को अपने जनप्रतिनिधि चुनने का विकल्प दिया । ये नेता स्वर्गीय श्री जमुना निषाद और श्री रामभुआल निषाद हैं । 2016 में निषाद समुदाय को एक बड़ा मंच तब प्राप्त हो गया जब इलेक्ट्रोहोमिओपथी की क्लिनिक चलाने वाले डॉ.संजय निषाद ने अपनी पार्टी 'निर्बल इंडियन शोषित हमारा आम दल' अंग्रेजी में जिसका संक्षिप्त नाम 'निषाद पार्टी' दिया । एक अलग पार्टी और एक अलग झंडे के बैनर तले उन्होने निषादों की राजनीतिक चेतना को एक स्वतंत्र रूप देने की कोशिश की और इसका प्रसार बिंद, धीमर, मल्लाह, और साहनी उपनाम वाली जातियों तक किया । स्थानीय पत्रकार मनोज़ सिंह के अनुसार "उन्होने निषादों के बीच पुस्तिकाए बटवाई ,उनसे कहा कि ये इलाक़ा निषादों का रहा है, वे यहा के राजा रहे हैं और उनका एक गौरौवशाली इतिहास रहा है । निषाद एक संस्कृति है, एक सभ्यता है । "गोरखपुर के मठ पर भी निषादों का अधिकार बताने लगे । मनोज़ सिंह बताते हैं कि उन्होने यह भी प्रचारित किया कि गोरक्षनाथ के गुरु मत्स्येन्द्रनाथ मछली के पेट में रहे थे इस दौरान उनका लालन-पालन निषादों ने किया, इसलिए वे निषाद विरासत के प्रतिनिधि थे और इस तरह यहाँ के गोरखनाथ मठ पर क्षत्रियों का नहीं, निषादों का हक है । हालाकि इसका एतिहासिक परीक्षण होना बाक़ी है लेकिन निषाद मतदातावों के मन-मस्तिस्क पर इसका गहरा असर पड़ा । इस तरह निषादों में एक इस तरह की चेतना बनी जो यहाँ के मौजूदा मठ प्रबंधन के ख़िलाफ़ थी । वह मठ जिसके पिछले तीन महंत क्षत्रिय रहें हों और जिनके कार्यकाल में मठ का स्वरूप नाथ संप्रदाय की समावेशी धारा से निकलकर सनातन हिंदुत्व की ओर होने लगा था । संजय निषाद ने इस जातिके मतदातावों को सीधे प्रभावित करने वाला मुद्दा उठाया, उन्होने माँग की कि निषाद समाज की सभी उपजातियों को अनुसूचित जाति में शामिल किया जाय । वर्तमान में कुछ ही निषाद उपजातियों को अनुसूचित जाति में शामिल किया गया है । यह माँग

[3] क्षेत्र कार्य के दौरान प्राप्त जानकारी

निषाद समुदाय की मुख्य माँग बनगई। मनोज़ सिंह के अनुसार, जो संजय निषाद भारतीय जनता पार्टी को मनुवादी और ब्राह्मणवादी पार्टी कहा था। 2019 के लोक सभा निर्वाचन के दौरान यही संजय निषाद के भारतीय जनता पार्टी को मत देने पर उन्ही के समुदाय के लोग प्रश्नचिन्ह लगा रहे हैं? आज़ के समय में संजय निषाद का कथन है कि " वे थल क्षत्रिय हैं, और हम जल क्षत्रिय हैं, दोनों साथ-साथ हैं। हम तो मठ का धन्यबाद करते हैं कि उनके साहित्य के द्वारा ही हमे मत्सयेन्द्र नाथ जी के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ। हमारी विरासत को मठ ने बड़े सुंदर तरीक़ा से सुरक्षित रखा है।

गोरखपुर के निषाद बहुल रुस्तमपुरमिर्जापुर क्षेत्र में निषाद मंदिर है। यहाँ निषाद समुदाय के बड़े नेता संजय निषाद और रामभुवाल निषाद दोनों ही आते हैं। दोनों नेता में राजनीतिक विरोध है। यहाँ पर 20 से अधिक निषाद मतदातावों से बातचीत में उन्होने 2019 के लोक सभा चुनाव में असमंजस के कारण मतों के बटवारा होने की बात स्वीकार की। इस मंदिर के पुजारी श्री राम दयाल निषाद जी से बात करने पर पता चला कि आज़ कल यहाँ आने वाला हर निषाद समुदाय सदस्य इस दुविधा में पड़ा है कि अपने समुदाय के प्रत्याशी श्री राम भुवाल निषाद को मत दे कि भारतीय जनता पार्टी को। उन्होने बताया कि निषाद समुदाय में आज़ भी काफ़ी अशिक्षा है अतः भारतीय जनता पार्टी जिसने आरक्षण की हमारी माँग पूरा करने का वादा किया है, उन्हे एक अवसर देना चाहिये।

निषाद और हिंदुत्व :

गोरखपुर में निषाद समुदाय काफ़ी धार्मिक भी है, इसलिए उनकी चेतना पूरी तरह सनातन ब्राह्मणवादी व्यवस्था के ख़िलाफ़ विकसित नहीं हुई है। अभी वह विकसित होने की प्रक्रिया में है। इसलिए यह समुदाय अभी हिंदुत्व से पूरी तरह अलग नहीं हो पाया है। इसीलिये भारतीय जनता पार्टी निषादराज केवट के उस रूप को स्थापित करना चाहती है जिसमे वों प्रभु श्रीराम के चरणों की सेवा कर रहे हैं।

गोरखपुर में हिंदुस्तान समाचारपत्र के पत्रकार विवेकानन्द जी कहते हैं कि" जातिया अब केवल अपनी धार्मिक और पौराणिक पहचान ही नहीं चाहती बल्कि वे सामाजिक पहचान और प्रस्थिति भी चाहती हैं। इस समय निषाद पार्टी भारतीय जनता पार्टी से जुड़कर, निषाद पार्टी अपनी अस्मिता भी बढ़ाने का कार्य कर रही है। निषाद संघर्षशील समुदाय है उनकी राजनीतिक चेतना काफ़ी मजबूत है। मात्र तर्क देकर उन्हे

दबाना आसान नहीं। इसलिए निषादों का एक अलग दल के रूप में उभरना बड़े राजनीतिक दलों के लिए ख़तरा प्रतीत हो रहा है ,अपने दलों में प्रतिनिध्त्व देकर नियंत्रित रखना आसान होता है। निषाद मंदिर में भजन गाने वाले नौजवान दिलीप निषाद से बात करते हुए उन्होने कहा, "भगवान राम गंगा पार जाने के लिए केवट की नाव चढ़े थे, लेकिन भारतीय जनता पार्टी को कौन सी नैया पार करनी है, सब जानते हैं। वे प्रश्न वाचक लहजे में पूछते हैं ? हम सब कब तक अपनी नाव में सबको पार ही कराते रहेंगे। गोरखपुर के वार्ड संख्या 1 के मलिन बस्ती के गाँव निषाद बहुल आबादी के हैं। ये 1700 एकड़ में फ़ैले, रामगढ़ ताल के किनारे बसे हैं। बरगद पेड़ के नीचे काफ़ी विचार विमर्श चलता रहता है। यहाँ के निवासी सुनील निषाद , कभी भारतीय जनता पार्टी के बूथ स्तर के कार्यकर्ता थे परंतु अब निषाद समुदाय के प्रत्याशीको ही मत देने की बात करते हैं।

गोरखपुर में निषाद समुदाय,गोरखपुर सदर सीट के निर्णायक भूमिका के रूप में: गोरखपुर में, 12 वीं लोक सभा की चुनाव के नए परिसीमन के अनुसार, निषाद समुदाय एक निर्णायक भूमिका अदा करता है, गोरखपुर सदर सीट पर मंदिर के प्रत्याशी के विरुद्ध जब-जब निषाद समुदाय का प्रत्याशी किसी अन्य राजनीतिक दल ने उतारा है, उसको एक कड़े मुकाबले का सामना करना पड़ा है, इसका जीवंत उदाहरण 1999 के लोकसभा चुनाव में देखने को मिलता है। 1999 के लोकसभा चुनाव में योगी आदित्यनाथ जी महाराज गोरखपुर सदर सीट पर मात्र 7322 वोट से विजयी हुए थे क्योंकि इस वर्ष समाजवादी पार्टी ने जमुना निषाद नामक प्रत्याशी को उनके विरुद्ध उतारा था। निषाद समुदाय के प्रत्याशी होने के कारण उन्हें काफी संघर्ष का सामना करना पड़ा।इस लोक सभा सीट पर निषाद समुदाय की निर्णायक भूमिका को व्यक्त करता है। 2004 के लोक सभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी द्वारा प्रदीप कुमार निषाद व समाजवादी पार्टी द्वारा जमुना प्रसाद निषाद को प्रत्याशी बनाए जाने से निषाद वोटों का विभाजन हुआ और हिन्दू युवा वाहिनी की सक्रिय उपस्थिति के कारण पूज्य महाराज जी लगभग डेढ़ लाख मतों से विजयी रहे। निषाद पार्टी के महत्व को समझते हुए 2016 में निषाद पार्टी जिसका पूरा नाम" निर्बल इंडियन शोषित हमारा आम दल " नाम से पार्टी बनायी। निषाद पार्टी के अध्यक्ष संजय निषाद हैं। 2018 के मध्यावधि लोक सभा चुनाव में प्रत्याशी को जो उनके पुत्र भी है, प्रवीण निषाद ,को 2018 के मध्यावधि चुनाव में गोरखपुर से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी के विरुद्ध चुनाव में उतारा , अन्य सभी दलों अर्थात समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के द्वारा समर्थित होने के कारण भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी उपेंद्र को लगभग 20000 वोटों से पराजित

किया। इस चुनाव में मंदिर से प्रत्याशी न होना भी पराजय का कारण बना। अन्य मुख्य कारण मतदान प्रतिशत कम और निषाद प्रत्याशी का मैदान में होना रहा। योगी आदित्यनाथ जी द्वारा 2017 में मुख्य मंत्री पद ग्रहण करने के बाद हिन्दू युवा वाहिनी की सुप्तावस्था व बिखराव सेहिन्दू युवा वाहिनी,भारत नामक नए पार्टी की उत्पत्ति सुनील सिंह द्वारा की गई।इस चुनाव के बाद भारतीय जनता पार्टी को निषाद पार्टी के बारे में सोचना पड़ा और उन्हें राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में शामिल किया गया। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में 2019 के लोकसभा चुनाव के पूर्व निषाद पार्टी के आ जाने से निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय निषाद जी ने अपना अलग दृष्टिकोण जाहिर किया उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की केंद्र और राज्य दोनों ही सरकारों में होने के कारण राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन मेंशामिल होकर हमारे समुदाय को अपने विकास के अधिक अवसर मिल सकते हैं , इसके विपरीत निषाद समुदाय की गोरखपुर शहर के निकट भरवालिया गांव में रहने वाले महेंद्र निषाद ने कहा संजय निषाद हमारे समुदाय के प्रत्याशी राम भुवाल निषाद जो समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी हैं उनके विरुद्ध भारतीय जनता पार्टी को वोट देने को कैसे कह सकते हैं , मैं निषाद पार्टी का कार्यकर्ता होते हुए भी समाजवादी पार्टी को मतदान करूंगा। इसका कारण यह है कि समाजवादी पार्टी ने हमारे समुदाय के प्रत्याशी राम भुवाल निषाद जी को निर्वाचन में प्रत्याशी बनाया है, समाजवादी पार्टी के राज्यसभा सदस्य श्री विशंभर निषाद लोकसभा का प्रचार करते हुए कहते हैं कि श्री संजय निषाद ने निषाद समुदाय से छल किया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गोरखपुर में प्रभाव :

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद में अध्ययन करने वाले अधिकांश छात्र नव युवा वस्था में राष्ट्र भावना से ओत- प्रोत शिक्षण संस्था में अध्ययन के कारण , संघ के सदस्य बन जाते हैं। इन्हे संस्था में, प्रवेश में वरीयता, छात्र वृति की सुविधा प्राप्त होती है। मंदिर में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमो को संचालित करने का भार भी इन्हे दिया जाता है। नवयुवक होने के कारण उसे पूरी ईमानदारी व स्फूर्ति से करते हैं।अधिकांश हिन्दू परिवार में छत पर भगवा ध्वज़ भी लहराता है। भले ही परिवार में किसी अन्य दल के प्रति आस्था हो|

गोरखपुर में हिन्दुत्व की राजनीति और उसका क्षेत्रीय मतदाताओं पर प्रभाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन, गोरखपुर में हिंदुत्व की राजनीति और उसके क्षेत्रीय मतदातावों पर प्रभाव की प्रवृति के संबंध में, अध्ययन करने हेतु , गोरखपुर सदर लोकसभा को ग्रामीण क्षेत्र और शहरी क्षेत्र में बाँटते हुए उनके जीवन पर निम्नलिखित प्रश्नों के प्रभाव का अध्ययन करते हैं

1) गोरखपुर में स्थित महाराणा प्रताप शिक्षण संस्थानों का प्रभाव
2) सांस्कृतिक संगठनो का प्रभाव, संस्कार भारती आदि का
3) विभिन्न राजनीतिक दलों को प्रदान की जाने वाली वरीयता
4) स्वयं के हिन्दू या मुस्लिम होने का प्रभाव मतदान पर
5) हिंदुत्व के प्रचार,हवन ,धार्मिक गतिविधियों का प्रभाव
6) भारतीय जनता पार्टी और योगी आदित्यनाथ का प्रभाव
7) विभिन्न पीठाधीश्वर के काल में भिन्न भिन्न प्रभाव
8) राम मंदिर आन्दोलन से जुड़ाव का प्रभाव
9) हिन्दू युवा वाहिनीऔर उसके आनुषंगिक संगठनो का प्रभाव
10) निषाद जाति के मत का प्रभाव विशेषकर निषाद पार्टी के गठन के बाद
11) योगी और भारतीय जनता पार्टी के विकल्प पर किस ओर दृष्टिकोण
12) योगी के मुख्यमंत्री बनने के बाद और पहले के दृष्टिकोण में अन्तर(विकास की दृष्टि से)
13) मोदी का प्रभाव या योगी या अन्य क्षेत्रीय नेता से प्रभावित
14) हिंदुत्व के माध्यम से विकास के प्रति कहा तक संतुष्ट हैं ?

तालिक नं0 5.1. गोरखपुर में स्थित महाराणा प्रताप शिक्षण संस्थान का प्रभाव शहरी 100 परिवारों पर

संस्थान का प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
पूर्णतया प्रभावित	25	25
आंशिक प्रभावित	67	67
कोई प्रभाव नहीं	8	8
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

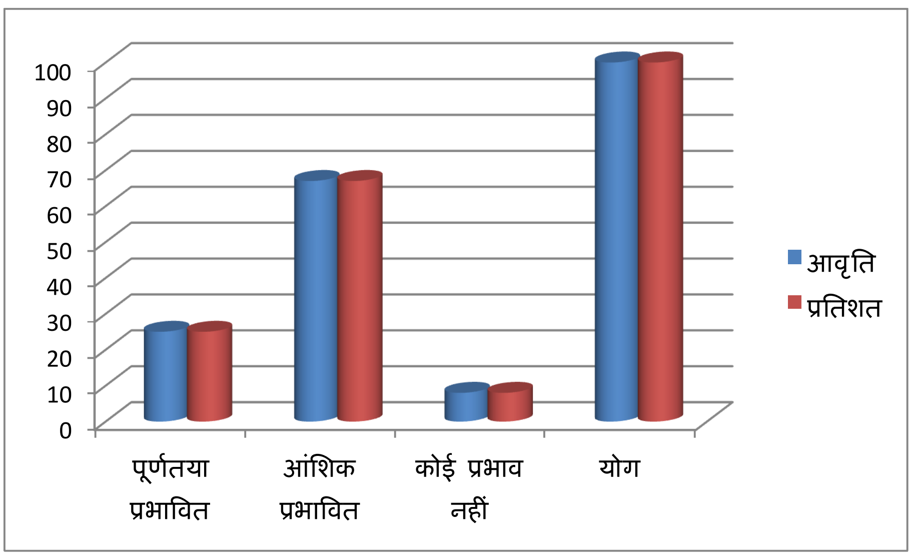

ग्राफ नं05.1 गोरखपुर में स्थित महाराणा प्रताप शिक्षण संस्थान का प्रभाव शहरी 100 परिवारों पर

तालिक नं0 5.1.2. गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षण संस्थान का प्रभाव 100 ग्रामीण परिवार पर

संस्थानों का प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
पूर्ण रूप से	7	7
आंशिक रूप से	15	15
कोई प्रभाव नहीं	78	78
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

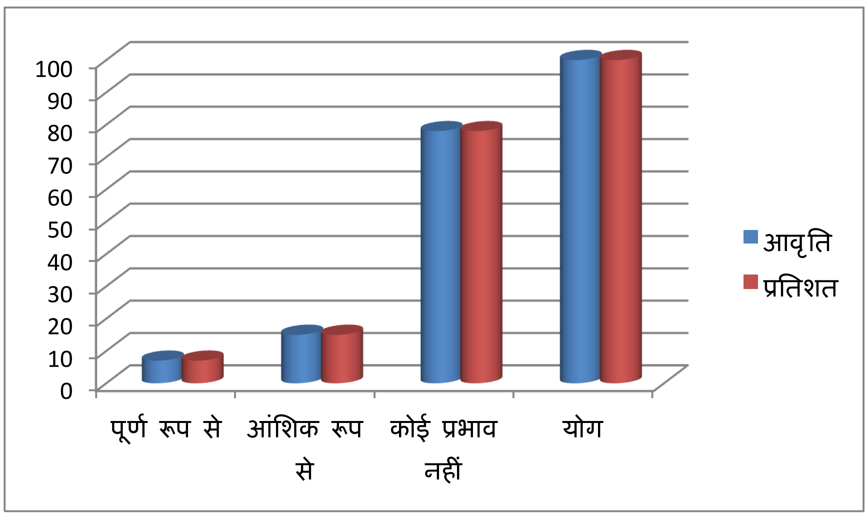

ग्राफ नं0 5.1.2 गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षण संस्थान का प्रभाव 100 ग्रामीण परिवार पर

प्रस्तुत तालिका से यह दर्शित होता है कि गोरखपुर में स्थित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद का शहरी क्षेत्र में ज्यादा प्रभाव है , शहरी क्षेत्र में 25 प्रतिशत परिवार पूर्णतया प्रभावित होता है जबकि 67 प्रतिशत परिवार आंशिक रूप से प्रभावित होता है। अतः कुल 92 प्रतिशत परिवार शहरी क्षेत्र में महाराणा प्रताप शिक्षण संस्थान से प्रभावित होता है और मात्र 8 प्रतिशत परिवार यह मानता है कि हमारे परिवार पर महाराणा प्रताप शिक्षण संस्थान का कोई प्रभाव नहीं पड़ता हैं। वही ग्रामीण क्षेत्र में मात्र 7 प्रतिशत परिवार अपने को महाराणा प्रताप शिक्षण संस्थान से प्रभावित मानता है। 15 प्रतिशत परिवार आंशिक रूप से प्रभावित मानता हैं और 78 प्रतिशत परिवार अपने पर महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद का कोई प्रभाव नहीं मानता है।

तालिक नं0 5.2.. साँस्कृतिक संगठन का प्रभाव जैसे संस्कार भारती आदि का गोरखपुर शहरी क्षेत्र में 100 परिवारों पर साँस्कृतिक संगठन का प्रभाव

साँस्कृतिक संगठन का प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
हाँ	68	68
नहीं	22	22
कह नहीं सकते	10	10

(स्रोत-फ़ील्ड वर्क)

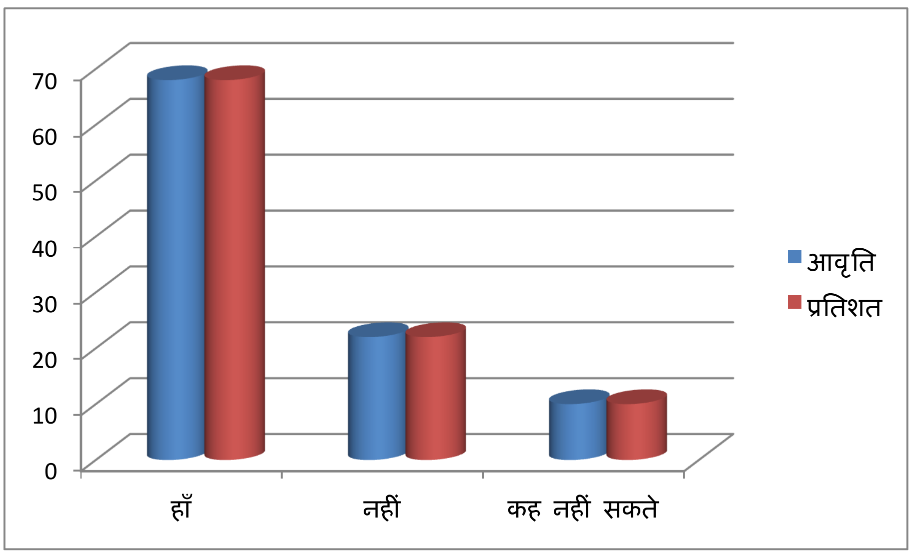

ग्राफ नं05.2 साँस्कृतिक संगठन का प्रभाव जैसे संस्कार भारती आदि का गोरखपुर शहरी क्षेत्र में 100 परिवारों पर साँस्कृतिक संगठन का प्रभाव

तालिक नं0 5.2.1 गोरखपुर शहर के पुरुष व महिला पर प्रभाव

साँस्कृतिक संगठन का प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
पुरुष	14	14
महिला	74	74
कह नहीं सकते	12	12

(स्रोत-फ़ील्ड वर्क)

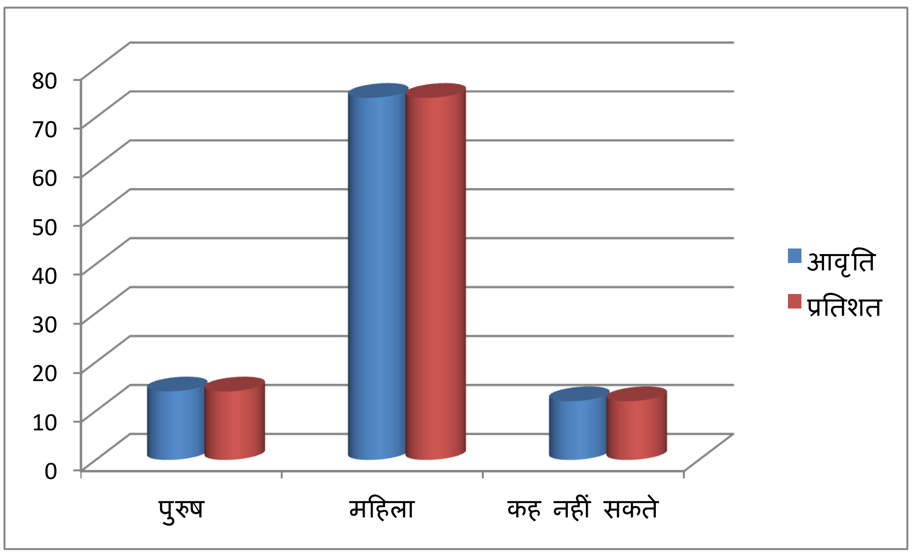

ग्राफ नं0 5.2.1 गोरखपुर शहर के पुरुष व महिला पर प्रभाव

तालिक नं0 5.2.2 गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवार पर साँस्कृतिक संगठन का प्रभाव

साँस्कृतिक प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
हाँ	40	40
नहीं	58	58
कह नहीं सकते	2	2

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

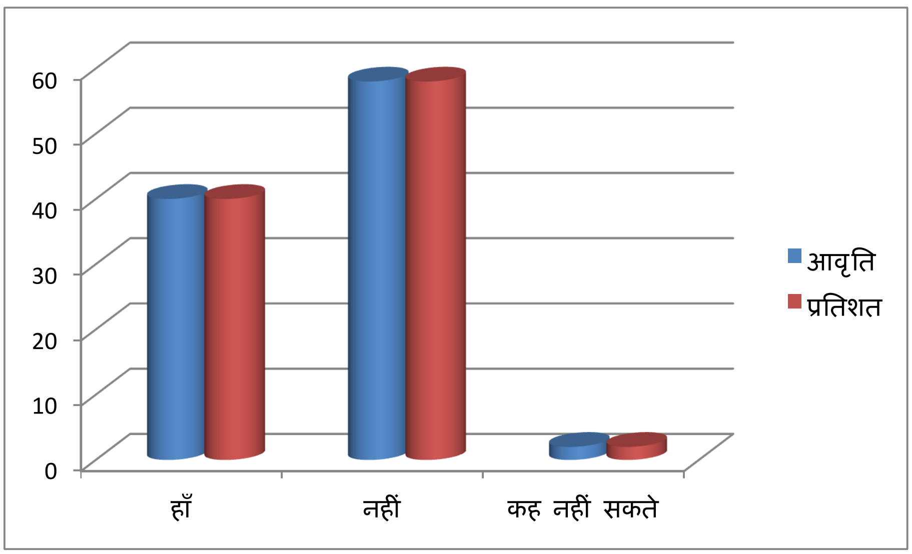

ग्राफ नं0 5.2.2 गोरखपुर शहर के पुरुष व महिला पर प्रभाव

तालिक नं0 5.2.3 गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र में महिला व पुरुष पर साँस्कृतिक संगठन का प्रभाव

साँस्कृतिक प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
पुरुष	15	15
महिला	27	27
कह नहीं सकते	58	58

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

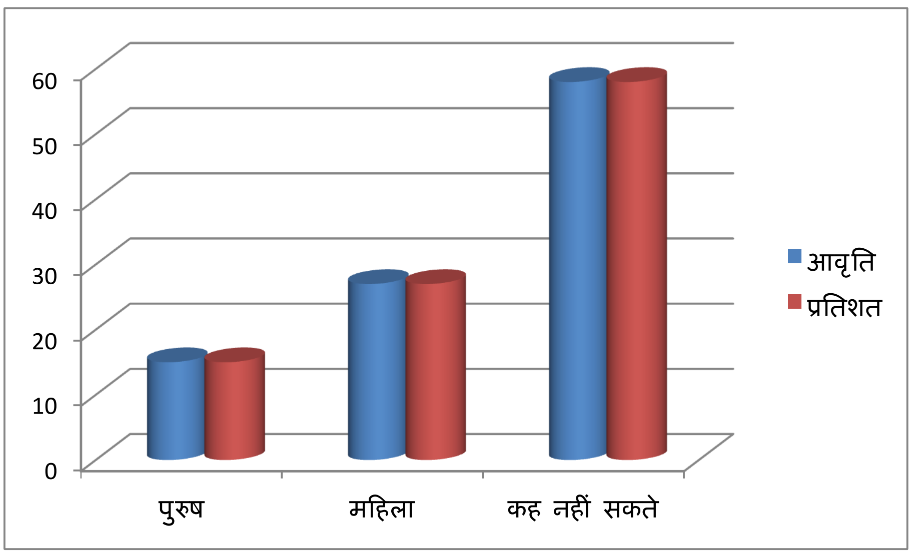

ग्राफ नं0 5.2.3 गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र में महिला व पुरुष पर साँस्कृतिक संगठन का प्रभाव

प्रस्तुत तालिका से यह दर्शित होता है कि गोरखपुरमें शहर क्षेत्र में संस्कार भारती आदि साँस्कृतिक संगठनो का प्रभाव ज्यादा है। शहरी क्षेत्रों में जहाँ 68 प्रतिशत परिवार साँस्कृतिक संगठन से किसी न किसी रूप में प्रभावित होते हैं वहीं ग्रामीण क्षेत्र में मात्र 40 प्रतिशत परिवार ही प्रभावित होते हैं। वहीं महिला व पुरुषों के अलग अलग प्रभावित होने का भी अध्ययन किया गया। शहरी क्षेत्र में जहाँ 14 प्रतिशत पुरुष व 74 प्रतिशत महिलाए संस्कार भारती जैसे साँस्कृतिक संगठन से प्रभावित होते हैं वही ग्रामीण क्षेत्र में 15 प्रतिशत पुरुष व 27 प्रतिशत महिला सांस्कृतिक गतिविधियों से प्रभावित होते हैं।

तालिक नं0 5.3 विभिन्न राजनीतिक दलो को प्रदान की जाने वाली वरीयता पर हिंदुत्व या मठ का प्रभाव

गोरखपुर में 100 शहरी परिवार पर राजनीतिक दल पर वरीयता में हिंदुत्व का प्रभाव का अध्ययन

दलो को वरीयता पर हिंदुत्व का प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
हाँ	62	62
नहीं	25	25
कह नहीं सकते	13	13

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

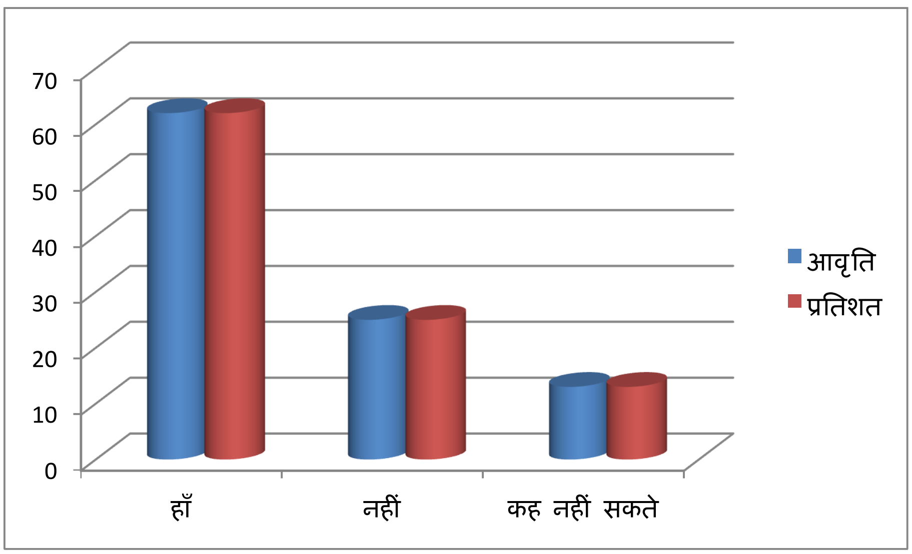

ग्राफ नं0 5.3 विभिन्न राजनीतिक दलो को प्रदान की जाने वाली वरीयता पर हिंदुत्व या मठ का प्रभाव

गोरखपुर में 100 शहरी परिवार पर राजनीतिक दल पर वरीयता में हिंदुत्व का प्रभाव का अध्ययन

तालिक नं0 5.3.1 गोरखपुर में पुरुषों व महिलावों में दल की वरीयता में हिंदुत्व का प्रभाव (शहरी क्षेत्र में)

दल वरीयता पर हिंदुत्व प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
महिला	54	54
पुरुष	44	44
कह नहीं सकते	2	2
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

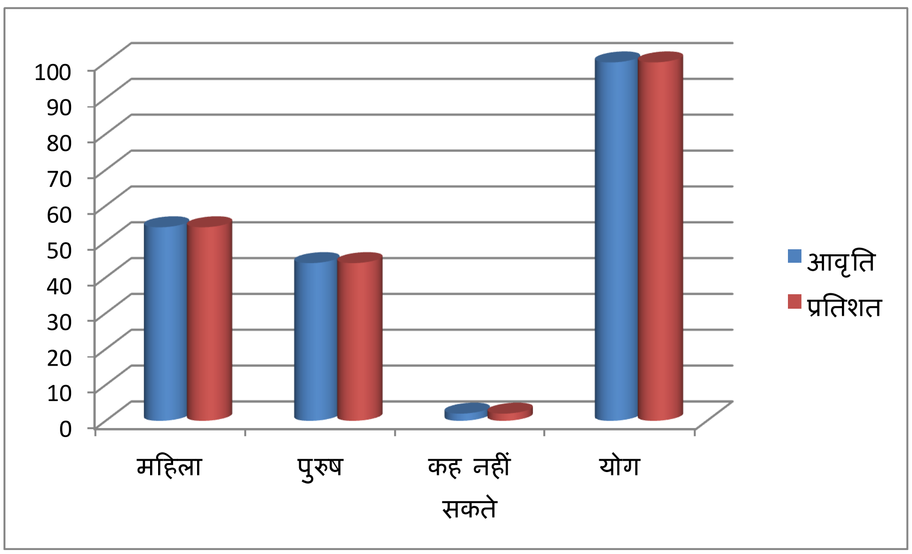

ग्राफ नं0 5.3.1 गोरखपुर में पुरुषों व महिलावों में दल की वरीयता में हिंदुत्व का प्रभाव (शहरी क्षेत्र में)

तालिक नं0 5.3.2 गोरखपुर में ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर राजनीतिक दल वरीयता में हिंदुत्व का प्रभाव

दल वरीयता पर हिंदुत्व प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
हाँ	39	39
नहीं	59	59
कह नहीं सकते	2	2
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

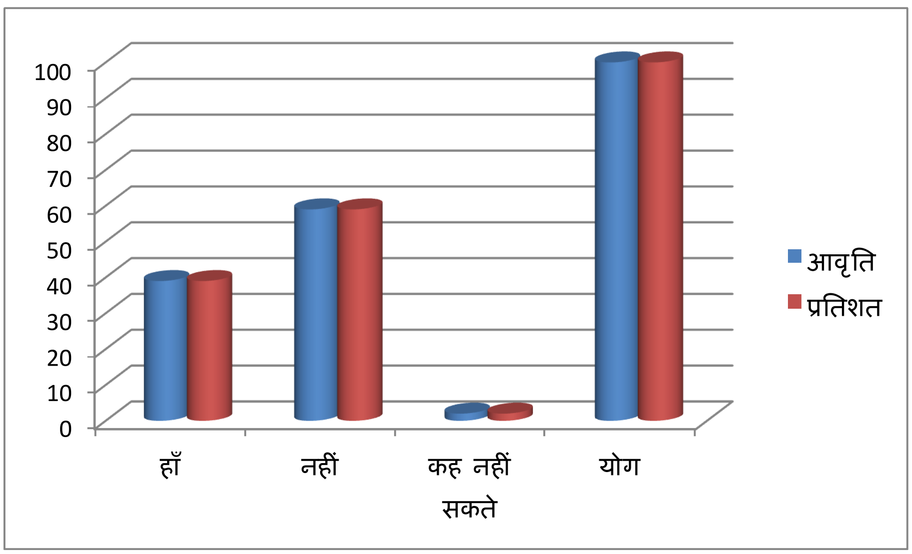

ग्राफ नं0 5.3.2 गोरखपुर में ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर राजनीतिक दल वरीयता में हिंदुत्व का प्रभाव

तालिक नं0 5.3.3 ग्रामीण क्षेत्र में पुरुषों व महिलावों में दल की वरीयता में हिंदुत्व का प्रभाव

दल वरीयता पर हिंदुत्व प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
पुरुष	43	43
महिला	35	35
कह नही सकते	22	22
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

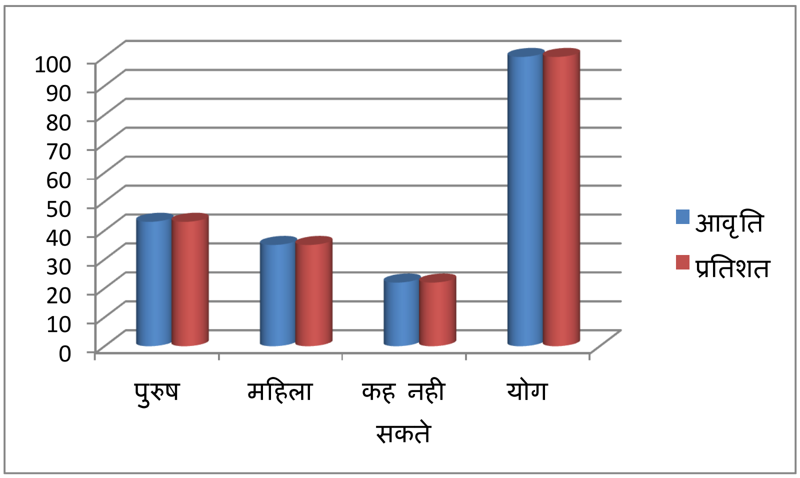

ग्राफ नं0 5.3.3 ग्रामीण क्षेत्र में पुरुषों व महिलावों में दल की वरीयता में हिंदुत्व का प्रभाव

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह दर्शित होता है कि गोरखपुर में जनता शहरी क्षेत्रों में राजनीतिक दलों को मत प्रदान करने की वरीयता में हिंदुत्व की गतिविधियों से ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा अधिक प्रभावित होती है। तालिका के अध्ययन से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र में 62 परिवार हिंदुत्व की गतिविधियों से प्रभावित होता हैं वही ग्रामीण क्षेत्र में मात्र 39 परिवार हिंदुत्व की गतिविधिवों से प्रभावित होता है। पुरुषों व स्त्रियों पर हिंदुत्व की गतिविधियों का प्रभाव के अध्ययन में यह दर्शित होता है कि शहरी क्षेत्र में महिलाओ पर हिंदुत्व की गतविधियों का प्रभाव ज़्यादा है , ग्रामीण क्षेत्र की महिलावों की तुलना में। शहरी क्षेत्र में 54 प्रतिशत महिलाए हिंदुत्व की गतिविधिवों से प्रभावित होती हैं वही ग्रामीण क्षेत्र की मात्र 35 प्रतिशत महिलाए हिंदुत्व की गतिविधियों से प्रभावित होती हैं। शहरी क्षेत्र में 44 प्रतिशत पुरुष हिंदुत्वकी गतिविधियों से प्रभावित होते हैं वही ग्रामीण क्षेत्र में 43 प्रतिशत पुरुष ही प्रभावित होते हैं। इस प्रकार से यह स्पष्ट होता है किगोरखपुर के शहरी परिवारों में हिंदुत्व की गतिविधिया ज़्यादा प्रभावित करती हैं।

तालिक नं0 5.4. स्वयं के हिन्दू या मुस्लिमहोने का गोरखपुर में प्रभाव मतदान पर गोरखपुर के शहरी क्षेत्र में 100 परिवारों पर हिन्दू या मुस्लिम का प्रभाव

हिन्दू या मुस्लिम प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
हाँ	83	83
नहीं	15	15
कह नहीं सकते	2	2
योग	100	100

(स्रोत-फ़ील्ड वर्क)

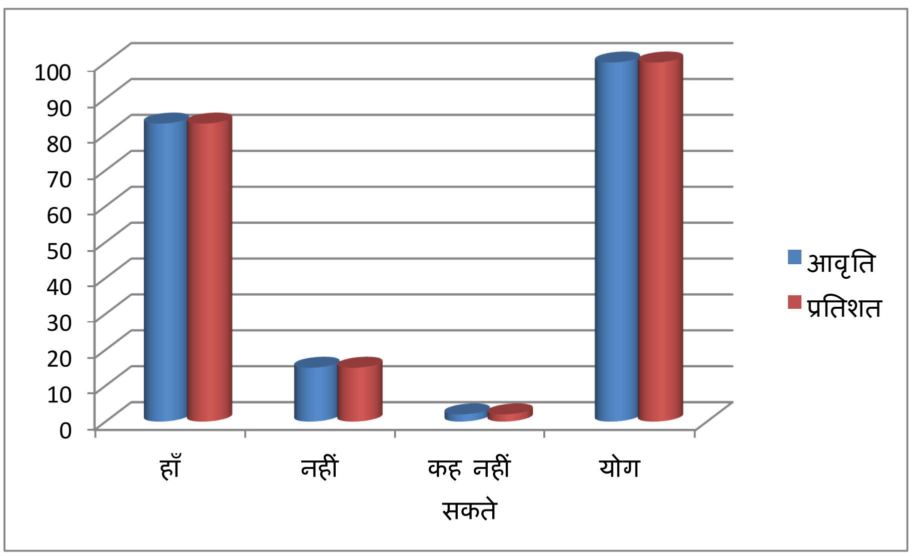

ग्राफ नं0 5.4. स्वयं के हिन्दू या मुस्लिम होने का गोरखपुर में प्रभाव मतदान पर गोरखपुर के शहरी क्षेत्र में 100 परिवारों पर हिन्दू या मुस्लिम का प्रभाव

तालिक नं0 5.4.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर हिन्दू या मुस्लिम का प्रभाव

हिन्दू या मुस्लिम प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
हाँ	78	78
नहीं	19	19
कह नहीं सकते	3	3
योग	100	100

(स्रोत-फ़ील्ड वर्क)

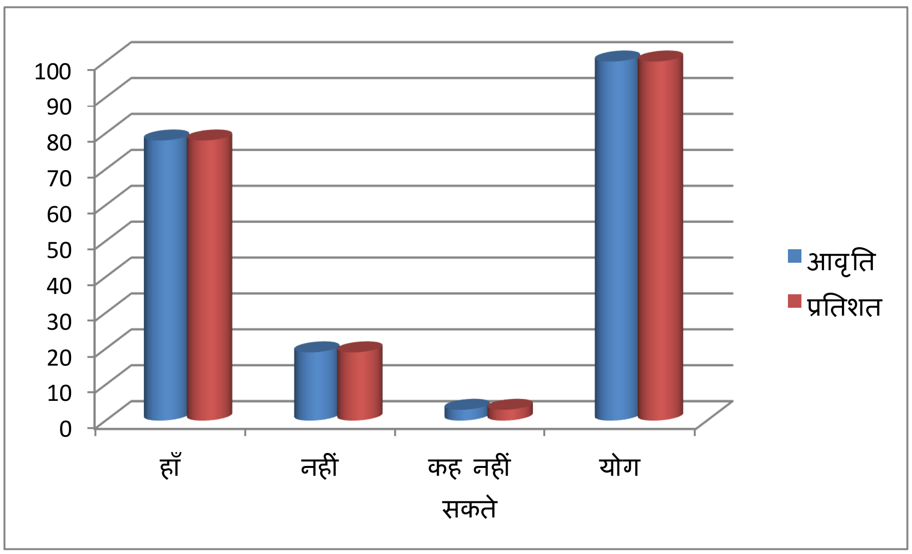

ग्राफ नं0 5.4.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर हिन्दू या मुस्लिम का प्रभाव

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से स्पष्ट हैं कि गोरखपुर के शहरी क्षेत्र में हिन्दू होने का प्रभाव मतदान पर ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में अधिक हैं। शहरी क्षेत्र में 83 प्रतिशत परिवार हिन्दू होने के कारण मतदान में प्रभावित होता हैं ,वही ग्रामीण क्षेत्र में मात्र 78 प्रतिशत परिवार हिन्दू होने के कारण मतदान में प्रभावित होता हैं शहरी क्षेत्र में 15 प्रतिशत परिवार हिन्दू या मुस्लिम होने से प्रभावित नहीं होता है जबकि ग्रामीण क्षेत्र में 19 प्रतिशत परिवार हिन्दू या मुस्लिम होने का प्रभाव नहीं पड़ता है। इस तालिका से स्पष्ट है कि शहर हो या ग्रामीण एक बड़ी मात्रा में परिवार हिन्दू होने से प्रभावित होते हैं।

तालिक नं0 5.5.हिंदुत्व के प्रचार जैसे हवन आदि का प्रभाव गोरखपुर शहर के 100 परिवारों पर प्रभाव

धार्मिक गतिविधिया	आवृति	प्रतिशत
हाँ	77	77
नहीं	15	15
कोई प्रभाव नहीं	8	8
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

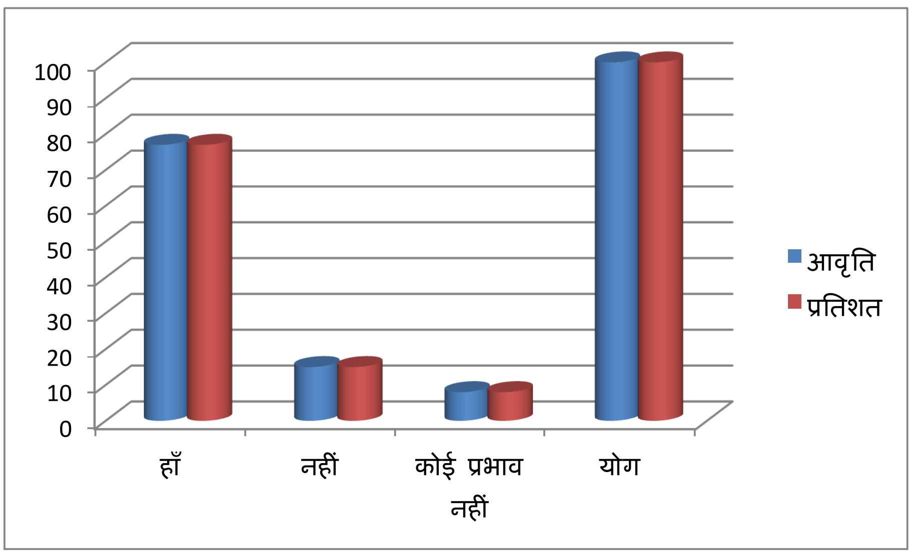

ग्राफ नं0 5. हिंदुत्व के प्रचार जैसे हवन आदि का प्रभाव गोरखपुर शहर के 100 परिवारों पर प्रभाव

तालिक नं0 5.5.1 ग्रामीण 100 परिवार पर प्रभाव

धार्मिक गतिविधिया	आवृति	प्रतिशत
हाँ	79	79
नहीं	14	14
कोई प्रभाव नहीं	7	7
योग	100	100

(स्रोत-फ़ील्ड वर्क)

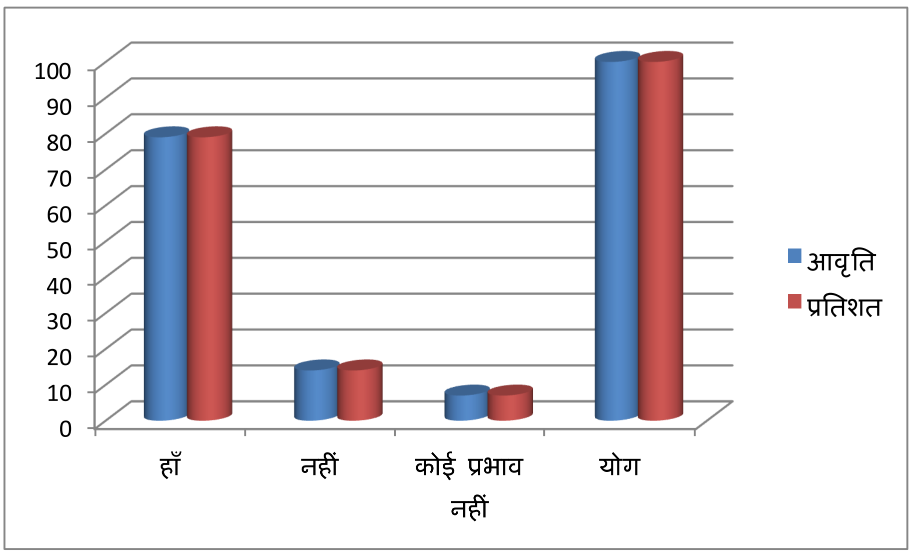

ग्राफ नं0 5.5.1 ग्रामीण 100 परिवार पर प्रभाव

तालिक नं0 5.5.2 हिंदुत्व के प्रचार का महिलावों व पुरुषों पर प्रभाव (शहरी क्षेत्र में)

हिंदुत्व के प्रचार का प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
पुरुष	24	24
महिला	74	74
अन्य	2	2
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

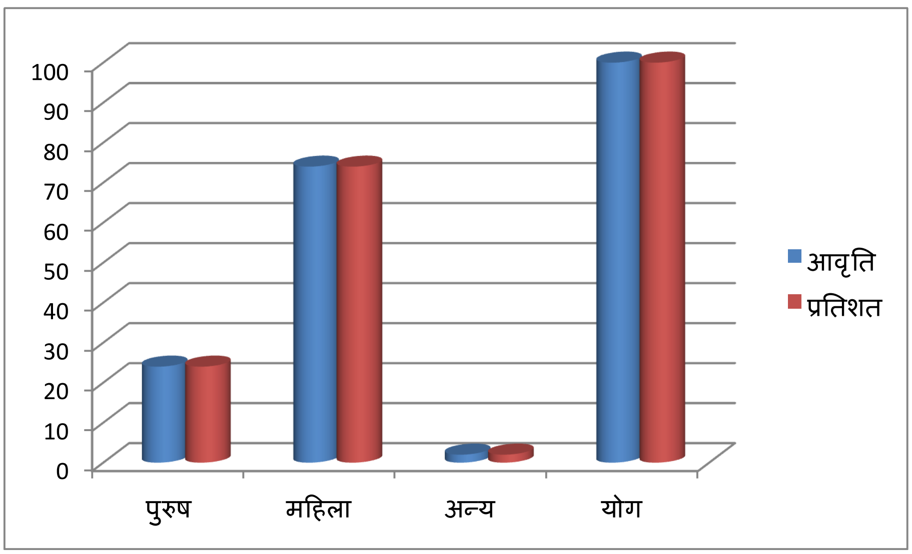

ग्राफ नं0 5.5.2 हिंदुत्व के प्रचार का महिलावों व पुरुषों पर प्रभाव (शहरी क्षेत्र में)

तालिक नं0 5.5.3 हिंदुत्व का प्रचार का महिलावों और पुरुषों पर प्रभाव (ग्रामीण क्षेत्र में)

हिंदुत्व के प्रचार का प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
पुरुष	43	43
महिला	55	55
अन्य	2	2
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

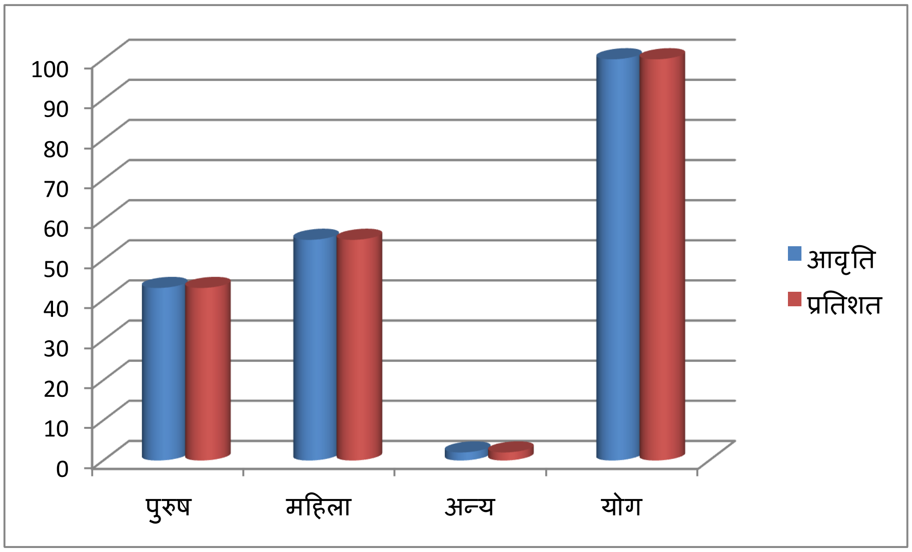

ग्राफ नं0 5.5.3 हिंदुत्व का प्रचार का महिलावों और पुरुषों पर प्रभाव (ग्रामीण क्षेत्र में)

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से दर्शित होता है कि गोखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में धार्मिक गतिविधियों का प्रभाव शहरी क्षेत्र के मुकाबले अधिक है, शहरी क्षेत्र में , 77 प्रतिशत परिवार धार्मिक गतिविधियों से प्रभावित होता है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में 79 प्रतिशत परिवार धार्मिक गतिविधियों से प्रभावित होता है। शहरी क्षेत्र में 15 प्रतिशत परिवार धार्मिक गतिविधियों से प्रभावित नहीं होता है जबकि ग्रामीण क्षेत्र में 14 प्रतिशत परिवार धार्मिक गतिविधियों से प्रभावित नहीं होता है। वही पर यदि महिला और पुरुष पर हिंदुत्व के धार्मिक गतिविधियों को देखा गया तो शहरी महिलाए धार्मिक गतिविधियों से प्रभावित होकर परिवार से अधिक स्वतंत्र होकर मतदान कर सकी। शहरी क्षेत्र में 74 प्रतिशत महिलाए इस से प्रभावित हो मतदान कर पाई वही ग्रामीण क्षेत्र में धार्मिक प्रभाव के साथ साथ पारिवारिक प्रभाव के कारण 55 प्रतिशत महिलाए ही हिंदुत्व प्रचार से प्रभावित हो मतदान किया।

तालिक नं0 5. 6 भारतीय जनता पार्टी और योगी आदित्यनाथ का प्रभाव गोरखपुर के शहरी क्षेत्र पर 100 परिवारों पर प्रभाव

प्रभाव	आवृ ति	प्रतिशत
भारतीय जनता पार्टी	23	23
योगी आदित्यनाथ	41	41
दोनों	36	36
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

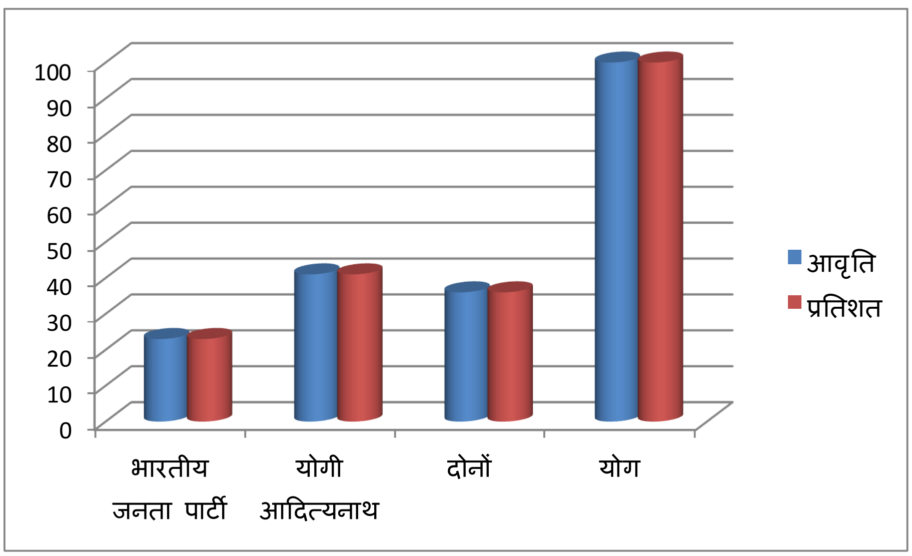

ग्राफ नं0 5.6. भारतीय जनता पार्टी और योगी आदित्यनाथ का प्रभाव गोरखपुर के शहरी क्षेत्र पर 100 परिवारों पर प्रभाव

तालिक नं0 5. 6.1 गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर प्रभाव

प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
भारतीय जनता पार्टी	20	20
योगी आदित्यनाथ	39	39
दोनों	41	41
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

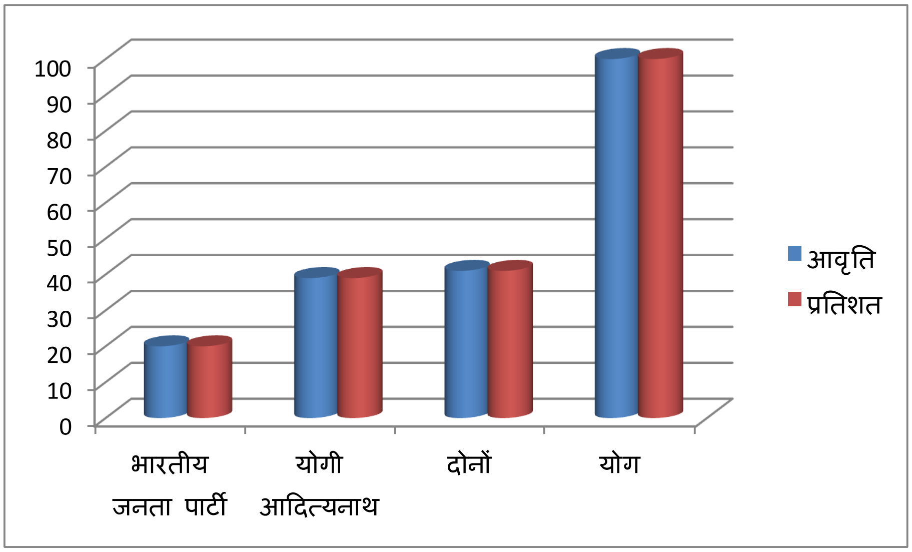

ग्राफ नं0 5.6.11 गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर प्रभाव

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि योगी आदित्यनाथ का प्रभाव शहरी परिवारों पर ग्रामीण परिवारों की अपेक्षा अधिक देखा गया। गोरखपुर के शहरी क्षेत्र में 41 प्रतिशत परिवार योगी आदित्यनाथ से प्रभावित रहा ,वही ग्रामीण क्षेत्र में मात्र 39 प्रतिशत परिवार ही आदित्यनाथ से प्रभावित रहा ।भारतीय जनता पार्टी का प्रभाव शहरी क्षेत्र में 23 प्रतिशत परिवारों पर रहा , ग्रामीण क्षेत्र के 20 प्रतिशत परिवारों पर केवल प्रभाव रहा । आदित्यनाथ और भारतीय जनता पार्टी दोनों से प्रभावित होने वाले परिवार का प्रतिशत शहरी क्षेत्र में 39 प्रतिशत रहा वही ग्रामीण क्षेत्र में 41 प्रतिशत रहा ।अतः स्पष्ट है कि भारतीय जनता पार्टी और योगी आदित्यनाथ दोनों से प्रभावित होने वाले में ग्रामीण परिवारों का प्रतिशत अधिक है।

तालिक नं0 5.7 विभिन्न पीठाधीश्वर काल में भिन्न भिन्न प्रभाव गोरखपुर शहर के 100 परिवारों पर विभिन्न पीठाधीश्वरों का प्रभाव

पीठाधीश्वर के प्रभाव	आवृ ति	प्रतिशत
दिग्विजयनाथ जी	15	15
अवैद्यनाथ जी	19	19
योगी आदित्यनाथ जी	66	66
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

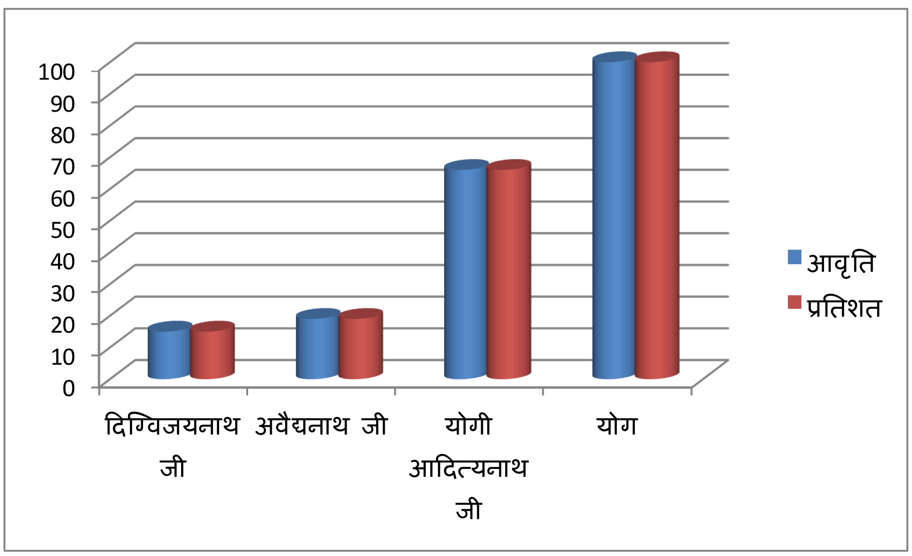

ग्राफ नं0 5.7 विभिन्न पीठाधीश्वर काल में भिन्न भिन्न प्रभाव गोरखपुर शहर के 100 परिवारों पर विभिन्न पीठाधीश्वरों का प्रभाव

तालिक नं0 5. 7.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर विभिन्न पीठाधीश्वरों का प्रभाव

पीठाधीश्वर के प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
दिग्विजयनाथ जी	7	7
अवैद्यनाथ जी	15	15
योगी आदित्यनाथ जी	78	78
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

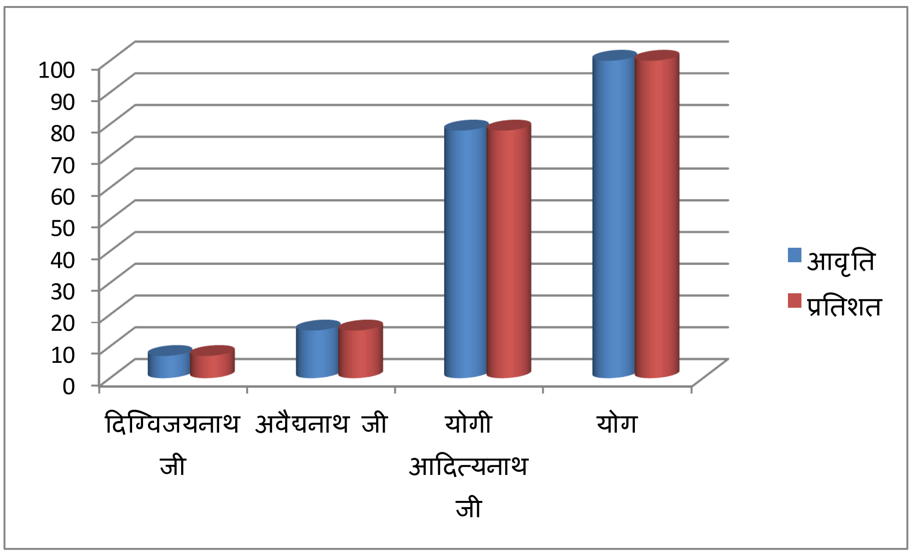

ग्राफ नं0 5.7.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर विभिन्न पीठाधीश्वरों का प्रभाव

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीनों पीठाधीश्वरों में योगी आदित्यनाथ जी ही सर्वाधिक लोक प्रिय हुए हैं। गोरखपुर के शहरी क्षेत्र के 100 परिवारों पर तीनों पीठाधीश्वर के कार्य काल के दौरान उनकी लोकप्रियता का प्रभाव दिग्विजयनाथ जी का मात्र 15 प्रतिशत परिवार पर , अवैद्यनाथ जी का 19 प्रतिशत परिवार पर प्रभाव था ,वहीं आदित्यनाथ जी का 66 प्रतिशत परिवारों पर प्रभाव था। गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर अध्ययन के दौरान यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण क्षेत्र में भी योगी आदित्यनाथ जी का प्रभाव ही सर्वाधिक है। दिग्विजयनाथ जी का प्रभाव 7 प्रतिशत , अवैद्यनाथ जी का प्रभाव 15 प्रतिशत और आदित्यनाथ जी का प्रभाव 78 प्रतिशत परिवारों पर रहा।

तालिक नं0 5.8 राम मंदिर आन्दोलन से जुड़ाव का प्रभाव मठ के प्रति गोरखपुर के शहर क्षेत्र के 100 परिवारों का मत, राम मंदिर आंदोलन से जुड़ाव कारण मठ के प्रति झुकाव

प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
हाँ	62	62
नहीं	13	13
कह नहीं सकते	25	25
योग	100	100

(स्रोत-फ़ील्ड वर्क)

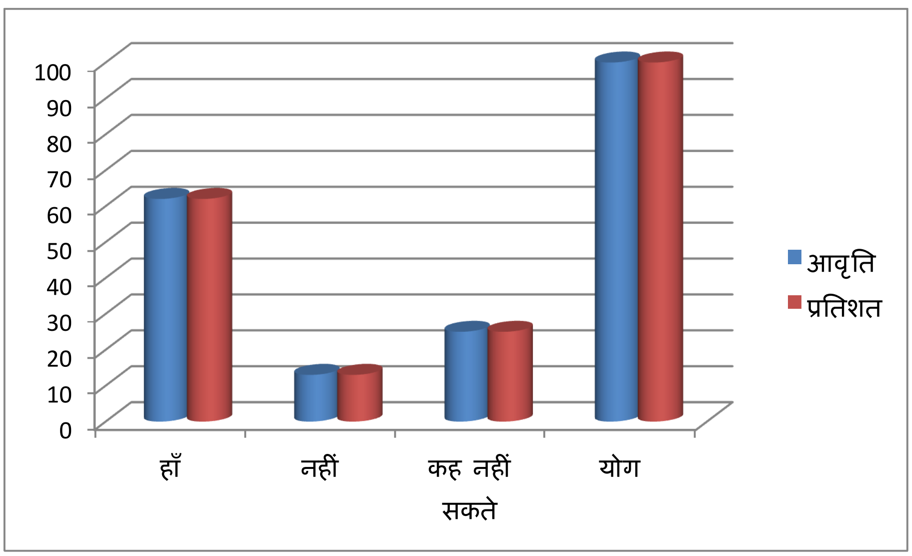

ग्राफ नं0 5.8 राम मंदिर आन्दोलन से जुड़ाव का प्रभाव मठ के प्रतिगोरखपुर के शहर क्षेत्र के 100 परिवारों का मत, राम मंदिर आंदोलन से जुड़ाव कारण मठ के प्रति झुकाव

तालिक नं0 5.8 .1 गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र के 100 परिवारों का राममंदिर आंदोलन से जुड़ाव के कारण मठ के प्रति झुकाव

प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
हाँ	71	71
नहीं	24	24
कह नहीं सकते	5	5
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

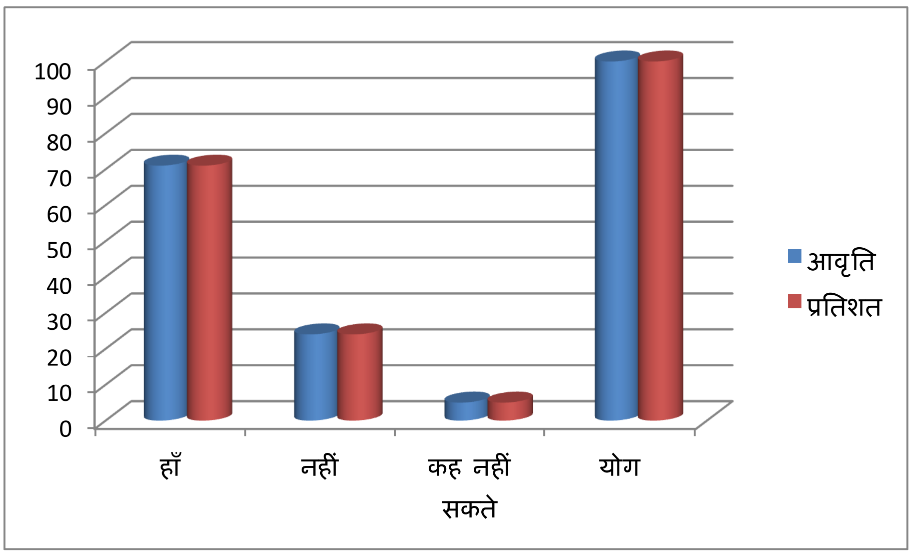

ग्राफ नं0 5.8.1 गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र के 100 परिवारों का राममंदिर आंदोलन से जुड़ाव के कारण मठ के प्रति झुकाव

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र में राम मंदिर आन्दोलन के कारण मठ के प्रति परिवारों का झुकाव ज़्यादा है ।ग्रामीण क्षेत्र में जहाँ 71प्रतिशत परिवार का झुकाव राम मंदिर आंदोलन के कारण मठ की तरफ़ है वहीं शहरी क्षेत्र में, 62 प्रतिशत परिवार का झुकावराम मन्दिर आन्दोलन के कारण मठ की तरफ़ हैं। ग्रामीण क्षेत्र में 24 प्रतिशत परिवार का राम मन्दिर आन्दोलन के कारण झुकाव नहीं है। वही शहरी क्षेत्र में 13 प्रतिशत परिवार का राम मन्दिर आन्दोलन के कारण मठ के प्रति झुकाव का आधार नहीं हैं।

तालिक नं0 5.9 हिन्दू युवा वाहिनी का प्रभाव गोरखपुर के शहरी क्षेत्र के 100 परिवारों पर हिन्दू युवा वाहिनी का प्रभाव

प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
हाँ	28	28
नहीं	22	22
कह नहीं सकते	50	50
योग	100	100

(स्रोत-फ़ील्ड वर्क)

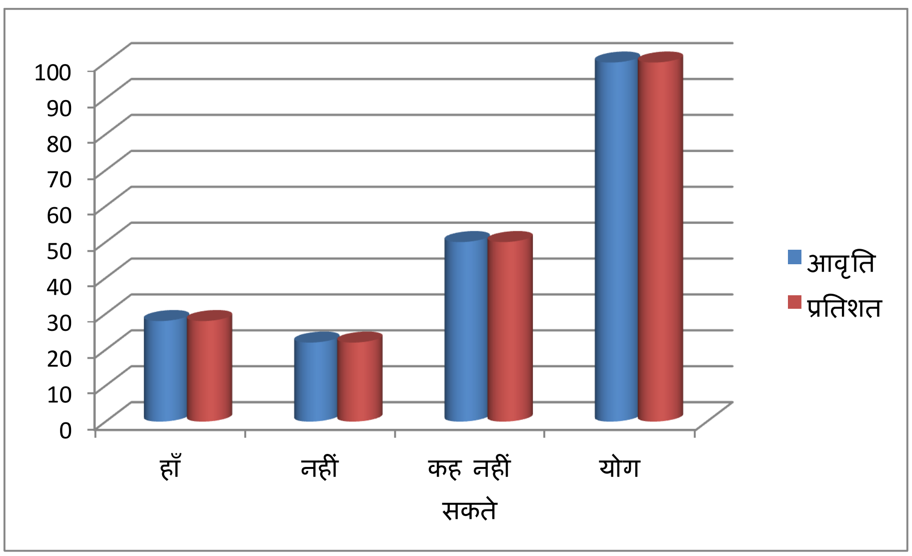

ग्राफ नं0 5.9 हिन्दू युवा वाहिनी का प्रभाव गोरखपुर के शहरी क्षेत्र के 100 परिवारों पर हिन्दू युवा वाहिनी का प्रभाव

तालिक नं0 5.9 .1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर हिन्दू युवा वाहिनी का प्रभाव

प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
हाँ	58	58
नहीं	20	20
कह नहीं सकते	22	22
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

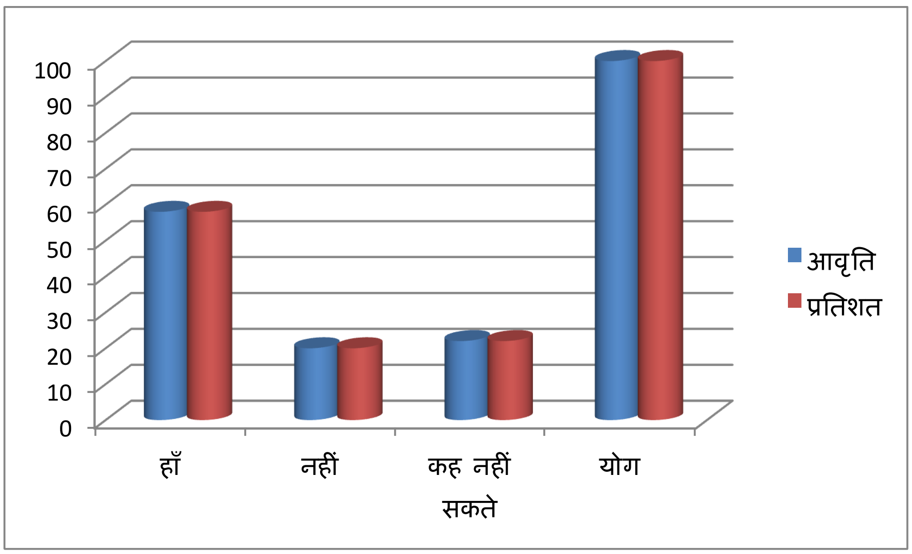

ग्राफ नं0 5.9.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवारों पर हिन्दू युवा वाहिनी का प्रभाव

उपरोक्त तालिका से दर्शित होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में हिन्दू युवा वाहिनी का प्रभाव ज़्यादा है, गोरखपुर के शहरी क्षेत्र के परिवारों में मात्र 28 प्रतिशत परिवार ही हिन्दू युवा वाहिनी से प्रभावित पाये गए जबकि ग्रामीण क्षेत्र में 58 प्रतिशत परिवार हिन्दू युवा वाहिनी से प्रभावित पाए गए। ग्रामीण क्षेत्र में20 प्रतिशत परिवार पर हिन्दू युवा वाहिनी का कोईप्रभाव दर्शित नहीं होता है जबकि शहरी क्षेत्र में 22 प्रतिशत परिवार पर हिन्दू युवा वाहिनी का कोई प्रभाव दर्शित नहीं होता हैं।

तालिक नं0 5. 10. निषाद जाति द्वारा मठ के प्रति दृष्टिकोण गोरखपुर के शहरी क्षेत्र के 100 निषाद परिवारों का मठ के प्रति दृष्टिकोण

निषाद जाति का दृष्टिकोण	आवृति	प्रतिशत
मठ को मत	33	33
अपनी जाति के उम्मीदवार को	65	65
कह नहीं सकते	2	2
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

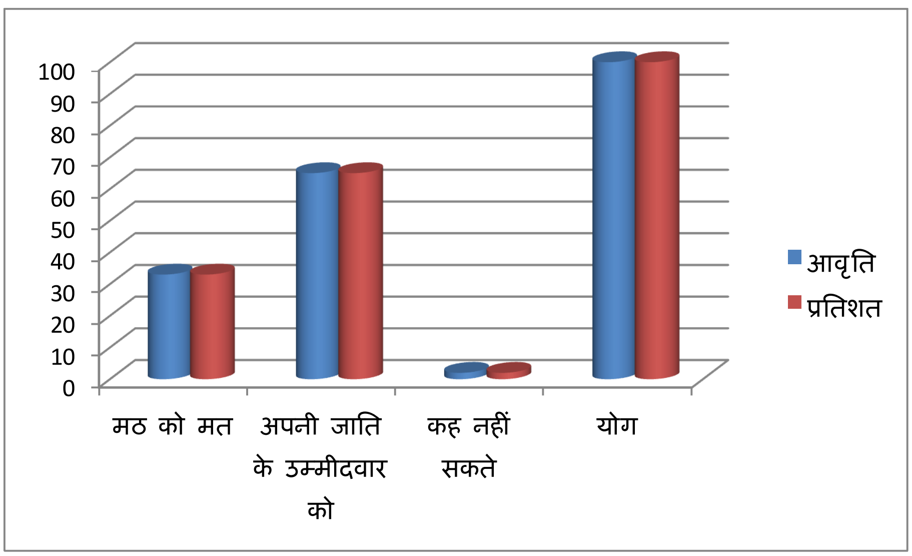

ग्राफ नं0 5.10 निषाद जाति द्वारा मठ के प्रति दृष्टिकोण गोरखपुर के शहरी क्षेत्र के 100 निषाद परिवारों का मठ के प्रति दृष्टिकोण

तालिक नं0 5. 10.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र के 100 निषाद परिवारों का मठ के प्रति दृष्टिकोण

निषाद जाति का दृष्टिकोण	आवृति	प्रतिशत
मठ को मत	31	31
अपनी जाति के उम्मीदवार को	68	68
कह नहीं सकते	1	1
योग	100	100

(स्रोत-फ़ील्ड वर्क)

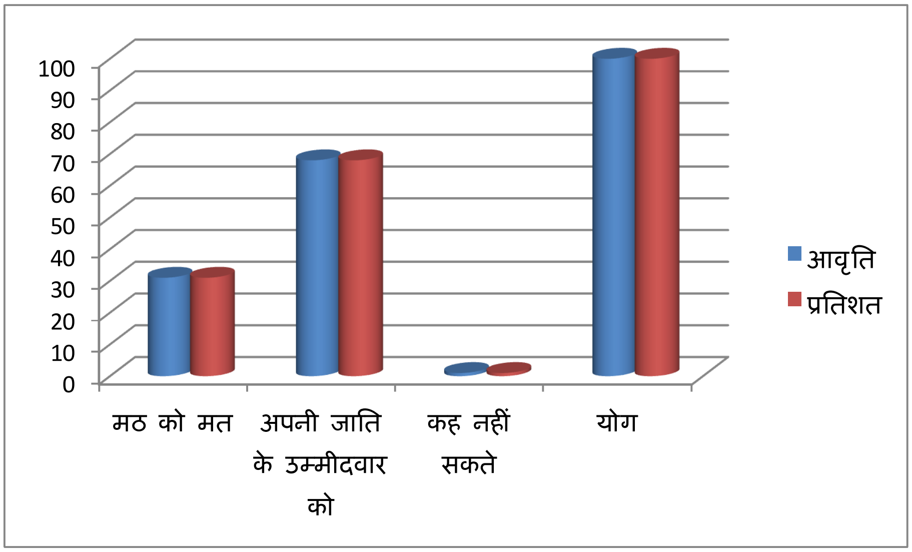

ग्राफ नं0 5.10.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र के 100 निषाद परिवारों का मठ के प्रति दृष्टिकोण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि गोरखपुर में स्थित मठ को निषाद समुदाय शहर में 33 प्रतिशत परिवार मठ को मत देने के प्रति रजामंदी दिखाई वहीं ग्रामीण क्षेत्र में मात्र 31 प्रतिशत परिवार ही मठ को मत देने के पक्ष में दिखे। निषाद समुदाय के अपने जाति के उम्मीदवार होने पर गोरखपुर शहर में 65 प्रतिशत परिवार अपने जाति के उम्मीदवार को वोट देने के पक्ष में दिखे वहीं ग्रामीण क्षेत्र में अपने जाति के उम्मीदवार होने पर 68 प्रतिशत परिवार अपने जाति को वोट देने के पक्ष में दिखे। वहीं शहरी क्षेत्र में मात्र 2 प्रतिशत परिवार ने “कह नहीं सकते” तथा ग्रामीण क्षेत्र में मात्र 1 प्रतिशत ने” कह नहीं सकते “ विकल्प का प्रयोग किया। अतः हम कह सकते हैं कि निषाद समुदाय राजनीतिक दृष्टि से काफ़ी जागरूक है।

तालिक नं0 5.11 योगी और भारतीय जनता पार्टी के विकल्प पर किस ओर झुकाव गोरखपुर के शहर क्षेत्र के 100 परिवार पर प्रेक्षण

झुकाव	आवृति	प्रतिशत
भारतीय जनता पार्टी	15	15
योगी आदित्यनाथ	68	68
कह नही सकते	17	17
योग	100	100

(स्रोत-फ़ील्ड वर्क)

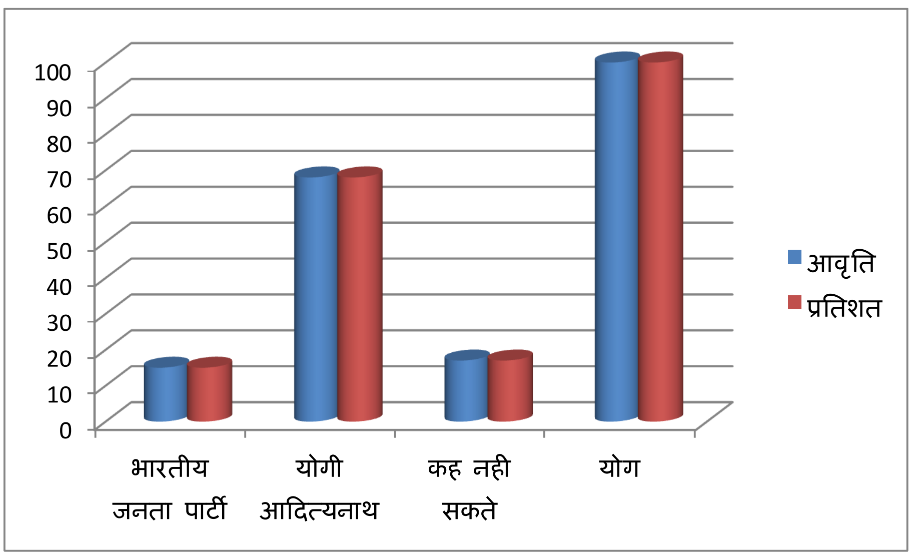

ग्राफ नं0 5.11 योगी और भारतीय जनता पार्टी के विकल्प पर किस ओर झुकाव गोरखपुर के शहर क्षेत्र के 100 परिवार पर प्रेक्षण

तालिक नं0 5.11.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवार पर प्रेक्षण

झुकाव	आवृति	प्रतिशत
भारतीय जनता पार्टी	12	12
योगी आदित्यनाथ	45	45
कह नहीं सकते	25	25
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

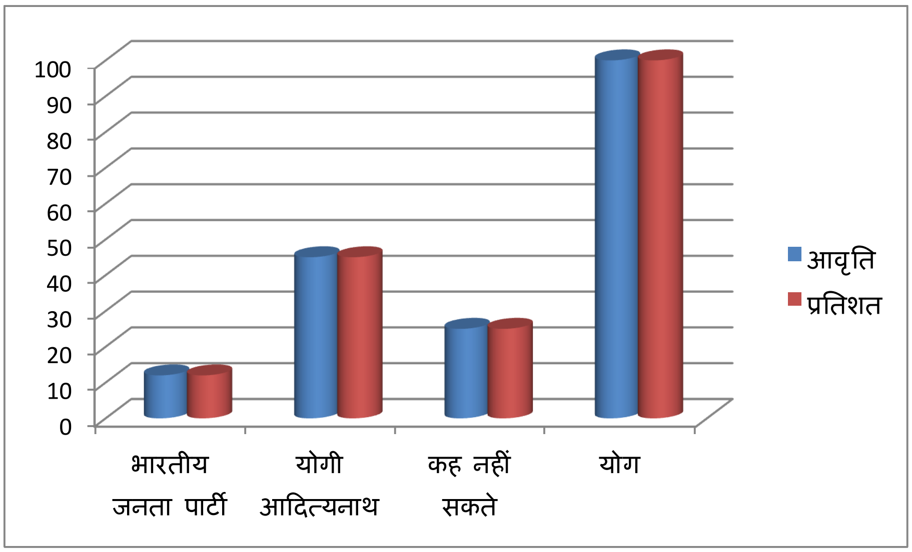

ग्राफ नं0 5.11.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में 100 परिवार पर प्रेक्षण

उपरोक्त तालिका से यह दर्शित होता है कि गोरखपुर के शहरी क्षेत्र में आदित्यनाथ की लोकप्रियता भारतीय जनता पार्टी की तुलना में काफ़ी अधिक है गोरखपुर के शहरी क्षेत्र में 68 प्रतिशत परिवार ने भारतीय जनता पार्टी और योगी आदित्यनाथ के विकल्प पर योगी आदित्यनाथ के प्रति झुकाव व्यक्त किया मात्र15 प्रतिशत परिवार भारतीय जनता पार्टी के प्रति झुकाव व्यक्त किया जबकि गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में 45 प्रतिशत परिवार ने भारतीय जनता पार्टी और योगी आदित्यनाथ के विकल्प पर योगी आदित्यनाथ के प्रति झुकाव व्यक्त किया। 12 प्रतिशत परिवार ने भारतीय जनता पार्टी के प्रति झुकाव व्यक्त किया और 25 प्रतिशत परिवार इस स्थिति में कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे।

तालिक नं0 5.१२ योगी आदित्यनाथ के मुख्य मंत्री बनने के बाद गोरखपुर के जनमानस में नया रुझान(विकास की दृष्टि से) गोरखपुर के शहर के 100 परिवारों पर नया दृष्टिकोण योगी के मुख्य मंत्री बनने के बाद

नया दृष्टिकोण	आवृति	प्रतिशत
हाँ	70	70
नहीं	22	22
कह नहीं सकते	8	8
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

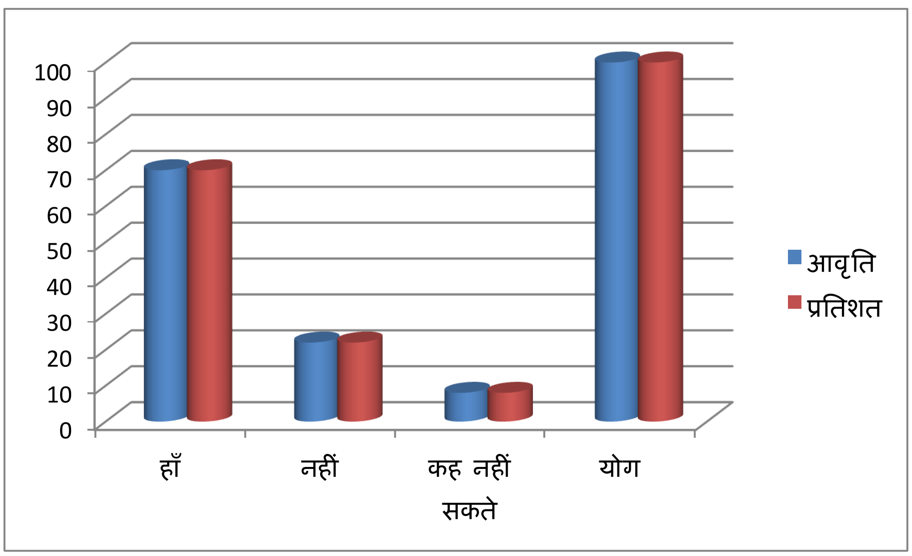

ग्राफ नं0 5.12 योगी आदित्यनाथ के मुख्य मंत्री बनने के बाद गोरखपुर के जनमानस में नयारुझान (विकास की दृष्टि से) गोरखपुर के शहर के 100 परिवारों पर नया दृष्टिकोण योगी के मुख्य मंत्री बनने के बाद

तालिक नं0 5.१२.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र के 100 परिवारों पर योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने के बाद नया दृष्टिकोण

नया दृष्टिकोण	आवृति	प्रतिशत
हाँ	57	57
नहीं	20	20
कह नहीं सकते	23	23
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

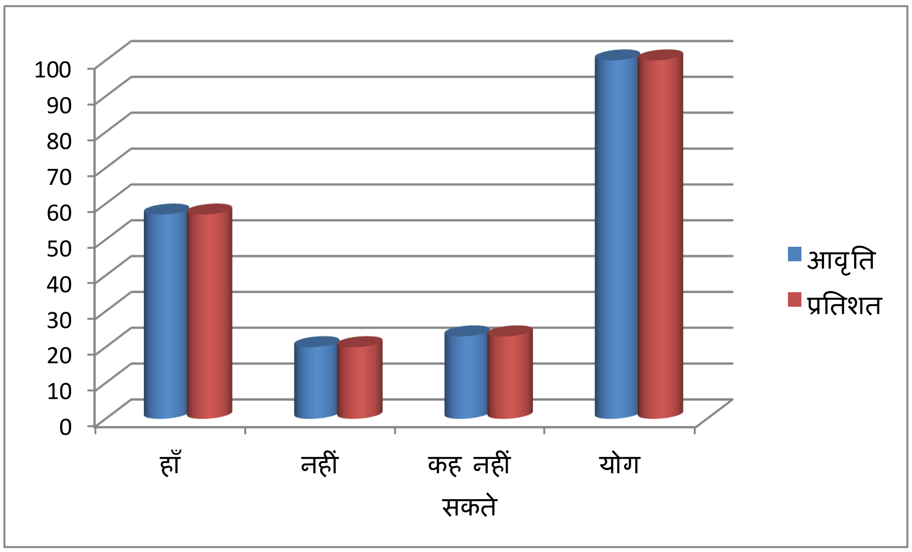

ग्राफ नं0 5.12.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र के 100 परिवारों पर योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने के बाद नया दृष्टिकोण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री पद पर आसीन होने के बाद गोरखपुर के शहरी व ग्रामीण दोनों ही क्षेत्र में उनके प्रति दृष्टिकोण समावेशी हुआ है। गोरखपुर के शहरी क्षेत्र के 70 प्रतिशत परिवार का उनके प्रति दृष्टिकोण में बदलाव आया है। वही गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र के 57 प्रतिशत परिवार में उनके प्रति दृष्टिकोण में बदलाव आया है।शहरी क्षेत्र के 22 प्रतिशत परिवार और ग्रामीण क्षेत्र के 20 प्रतिशत परिवार दृष्टिकोण में परिवर्तन नहीं मानते । शहरी क्षेत्र के 8 प्रतिशत परिवार कुछ कहने की स्थिति में नहीं हैं जबकि ग्रामीण क्षेत्र के 23 प्रतिशत परिवार कुछ कहने की स्थिति में नहीं हैं।

तालिक नं0 5.13 गोरखपुर में मोदी प्रभाव या योगी या अन्य क्षेत्रीय नेता से प्रभावित गोरखपुर के शहरी क्षेत्र में 100 परिवार पर प्रभाव, विभिन्न नेतागण का

प्रभाव	आवृ ति	प्रतिशत
मोदी	19	19
योगी	58	58
अन्य क्षेत्रीय नेता	23	23
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

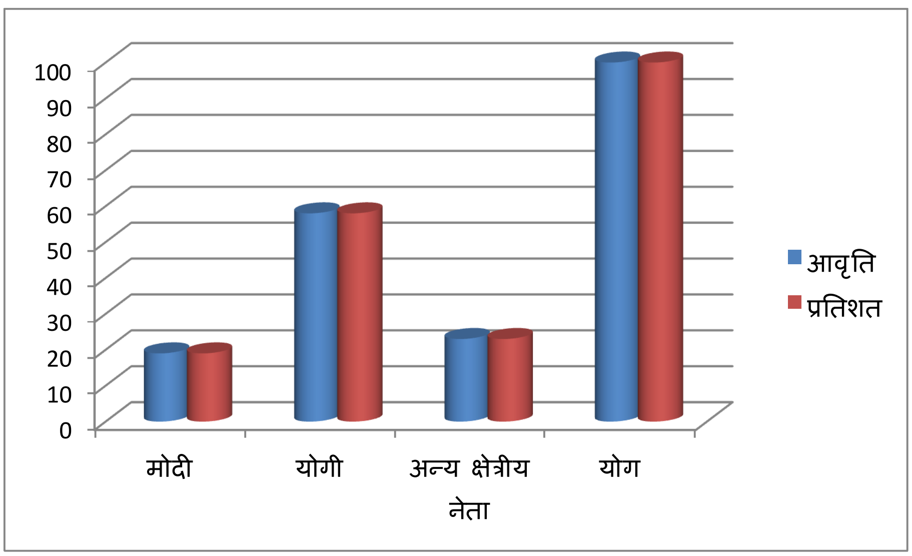

ग्राफ नं0 5.13 गोरखपुर में मोदी प्रभाव या योगी या अन्य क्षेत्रीय नेता से प्रभावित गोरखपुर के शहरी क्षेत्र में 100 परिवार पर प्रभाव, विभिन्न नेतागण का

तालिक नं0 5.13.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र के 100 परिवारों पर प्रभाव, विभिन्न नेतागण का

प्रभाव	आवृति	प्रतिशत
मोदी	34	34
योगी	35	35
अन्य क्षेत्रीय नेता	31	31
योग	100	100

(स्रोत-फ़ील्ड वर्क)

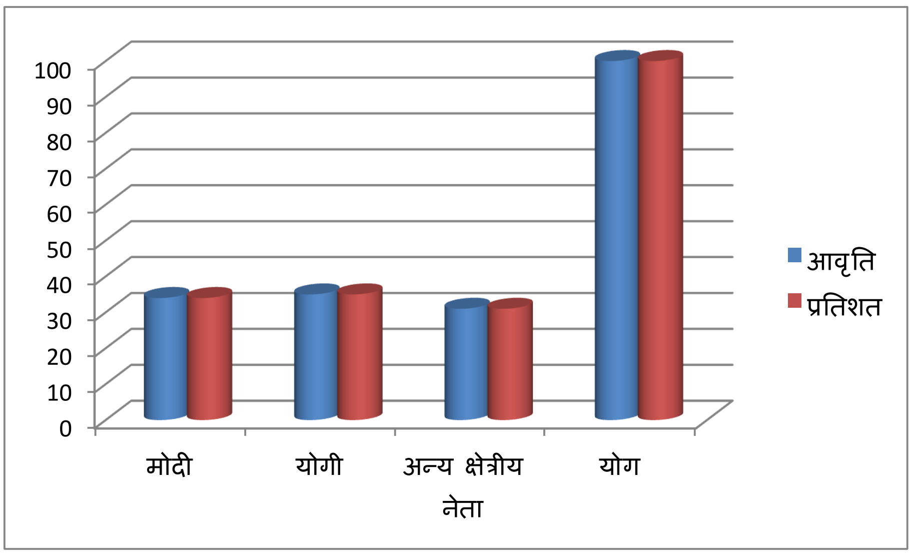

ग्राफ नं0 5.13.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र के 100 परिवारों पर प्रभाव, विभिन्न नेतागण का

उपरोक्त तालिका मे , गोरखपुर के शहरी क्षेत्र के 100 परिवार पर मोदी , योगी व अन्य क्षेत्रीय नेता के प्रभाव को दर्शित करता है कि 19 प्रतिशत परिवार गोरखपुर के शहरी क्षेत्र में मोदी से प्रभावित होता है ,वही योगी से 58 प्रतिशत परिवार प्रभावित होता है जबकि अन्य क्षेत्रीय नेता से 23 प्रतिशत परिवार प्रभावित होता है। गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में 34 प्रतिशत परिवार मोदी से प्रभावित होता है जबकि 35 प्रतिशत परिवार योगी से और 31 प्रतिशत परिवार अन्य क्षेत्रीय नेता से प्रभावित होता है।

तालिक नं0 5.14 हिंदुत्व केमाध्यम से विकास से कहाँ तक संतुष्ट हैं?

गोरखपुर के शहरी क्षेत्र के 100 परिवारों पर हिंदुत्व के माध्यम से विकास पर संतुष्टि

हिंदुत्व के माध्यम से विकास से संतुष्ट	आवृति	प्रतिशत
हाँ	58	58
नहीं	22	22
कह नहीं सकते	20	20
योग	100	100

(स्त्रोत-फ़ील्ड वर्क)

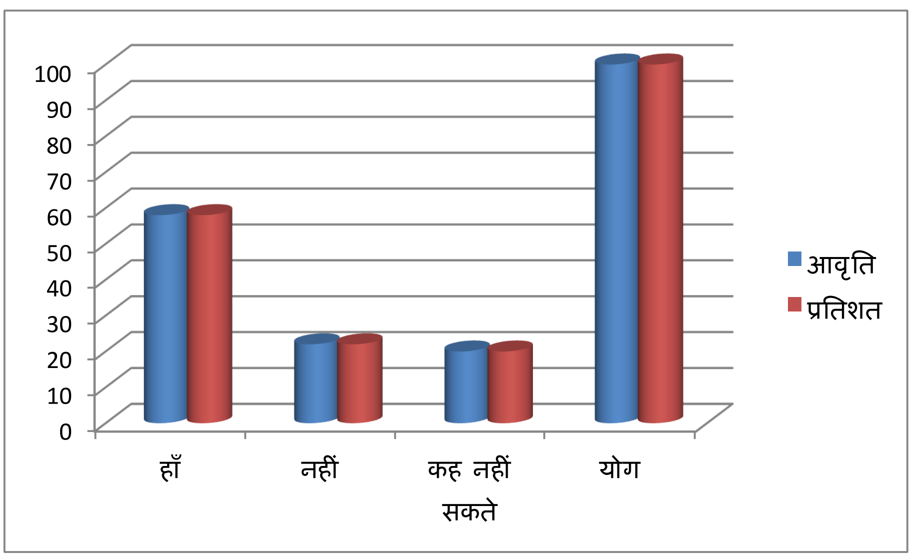

ग्राफ नं0 5.14 गोरखपुर के शहरी क्षेत्र के 100 परिवारों पर हिंदुत्व के माध्यम से विकास पर संतुष्टि

तालिक नं0 5.14.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र के 100 परिवारों पर हिंदुत्व के माध्यम से विकास पर संतुष्टि

हिंदुत्व के माध्यम से विकास से संतुष्ट	आवृति	प्रतिशत
हाँ	49	49
नहीं	27	27
कह नहीं सकते	24	24
योग	100	100

(स्रोत-फ़ील्ड वर्क)

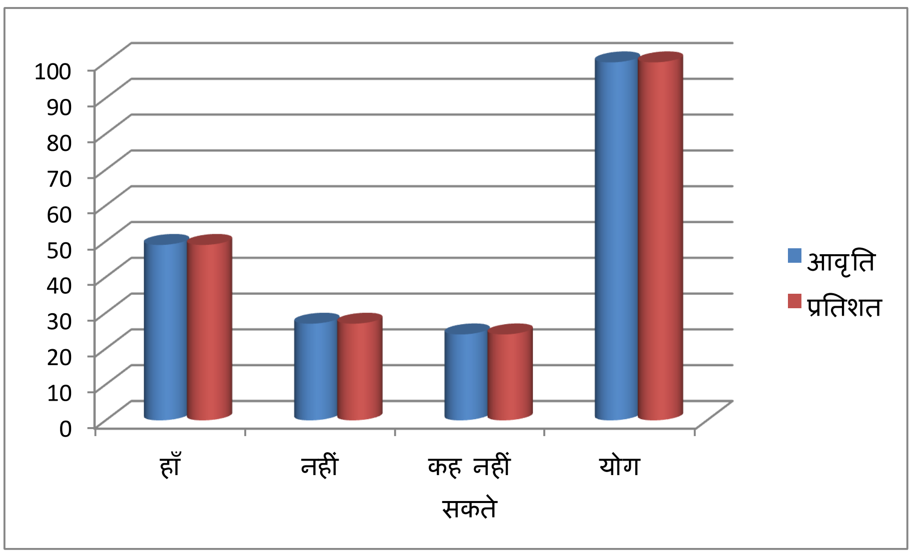

ग्राफ नं0 5.14.1 गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र के 100 परिवारों पर हिंदुत्व के माध्यम से विकास पर संतुष्टि

उपरोक्त तालिका से दर्शित होता है कि हिंदुत्व के माध्यम से विकास से गोरखपुर शहर के 58 प्रतिशत परिवार संतुष्ट नजर आए, 22 प्रतिशत परिवार संतुष्ट नहीं दिखे और 20 प्रतिशत परिवार ने कोई प्रति क्रिया नहीं व्यक्त की। गोरखपुर ग्रामीण के 49 प्रतिशत परिवार ने हिंदुत्व के माध्यम से विकास से संतुष्ट दिखे और 27 प्रतिशत परिवार ने हिंदुत्व के माध्यम से विकास से संतुष्ट नहीं दिखे वहीं 24 प्रतिशत परिवार ने कह नहीं सकते कह कर प्रतिक्रिया व्यक्त की।

गोरखपुर में हिंदुत्व की राजनीति और उसका क्षेत्रीय मतदातावों प प्रभाव के अंतर्गत उत्तरदातावों के राजनीतिक और मूलयात्मक अभिवृति के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के तीन दर्जन से अधिक संस्थाए अपने कार्यो द्वारा गोरखपुर के शहरी क्षेत्रों में व ग्रामीण क्षेत्र के लोग अपने पाल्यों को शिक्षा-दीक्षा दिलाने से प्रभावित होते हैं, जबकि शहरी क्षेत्र में प्रत्यक्ष रूप और ग्रामीण क्षेत्र में आंशिक रूप से ही सही, लेकिन प्रभावित होते हैं। साँस्कृतिक क्रिया कलाप से गोरखपुर शहर क्षेत्र के व गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र में भी प्रभावित होते हैं। विभिन्न राजनीतिक दलों के विकल्प के बीच मठ को शहरी क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा अधिक वरीयता देते हैं।राम मन्दिर आन्दोलन से संबंधित होने के कारण ग्रामीण क्षेत्र मठ को वोट देते हैं। योगी आदित्यनाथ द्वारा 2002 में गठित हिन्दू युवा वाहिनी का गोरखपुर ग्रामीण क्षेत्र के लोगों पर ज़्यादा प्रभाव है। गोरखपुर में निषाद समुदाय एक प्रभावी भूमिका रखता है। गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में मठ के प्रति इस समुदाय ने निष्ठा दिखायी जबकि अपने समुदाय का प्रत्याशी होने पर उसे वरीयता प्रदान किया। गोरखपुर शहर क्षेत्र भारतीय जनता पार्टी को मत प्रदान करने के पक्ष में वहीं गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी को मत देने की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र में योगी को मत देने के पक्ष में सहमत दिखे। आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने के बादयोगी के कारण मत देने वाले शहर क्षेत्र के ज़्यादा लोग सहमत दिखे। गोरखपुर के शहरी क्षेत्र में हिन्दुत्व के माध्यम से किास से संतुष्ठ दिखे। इस तरह से गोरखपुर में उपस्थित यह दृष्टिकोण गोरखपुर को हिन्दुत्व का गण बना देता है।

निष्कर्ष

हम अध्ययन के दौरान उत्पन् मामलों को प्रकाश में लाना चाहते हैं ,हिंदू से संबंधित जुड़ाव की पहचान, हिंदुत्व विचार विमर्श, इसका राजनीतिक मंच और संप्रदायिक उलझाव और हिंदुत्व द्वारा उत्पन्न चुनौतियां जो कि एक वैचारिक रूप में सामने आने वाली चुनौतियां हैं। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से, उपनिवेशवाद के आधुनिकरण के प्रभाव में एक बिखरा हुआ हिंदू संगठन अपने आपको प्रतिबिंबित करने लगा और अन्य तरह की विचारधाराओं और दृष्टिकोण के साथ संबंध का सुझाव दिया। इसकी प्रतिक्रिया कई गुना थी जो आधुनिकता के औपनिवेशिक संस्करण में उनके लिए उपलब्ध परंपराओं में सुधारों के लिए कहती थी और ऐसे भी कुछ लोग थे जो आधुनिकता को को एक सहयोगी के रूप में नई खोज की ओर अग्रसर मानते थे। हिंदू पहचान को एक जटिल और बहुमुखी समझ के परिणाम स्वरूप प्राप्त किया गया था ,हिंदू धर्म में इस तरह के विचार और अवसर एक गहरे जुड़ाव के साथ जुड़े होते हैं जो हिंदू वाद,दार्शनिक और ऐतिहासिक परियोजना के रूप में जाना जाता है और इस तरह की परियोजनाएं अपने जैसी अन्य परियोजनाओं से अपनी तुलना करती है। हिंदू विचार विमर्श ने इस तरह के प्रयासों को एक विशिष्ट मोड़ प्रदान किया। हमेशा एक ऐसे राज्य के शासन की आवश्यकता का स्वपन देखा जो हिंदू राष्ट्र और संस्कृति को आगे बढ़ाएं । इस तरह हम देखते हैं विनायक दामोदर सावरकर और जी .वी . गोलवाँकर के विचारों में कोई गंभीर असहमति नहीं है ।हिंदुत्व, विचार विमर्श की कई मुख्य विषयों को दरकिनार या बाधित करता है जो पहले अस्तित्व में थे। हिंदू वाद की जो एक सूत्रीय विकसित परंपरा रही है उसके एक प्रखर आवाज के रूप में हिंदुत्व उभरा है। हिंदू वाद की अधिकतर प्रवृतियां विभाजन कारी , लेकिन संघ परिवार ने अपने हस्तक्षेप से उनके मूल्यों और विश्वास को अपने अन्य घटकों द्वारा प्राप्त करने में सफल रहा है। राष्ट्र धर्म ,राज्य धर्म व अल्पसंख्यक इत्यादि अन्य मुद्दों के साथ उतना ही अपने को संबंधित किया, जितना उन पर प्रभाव पड़ता है ।एकात्म मानववाद इनकी आर्थिक नीतियों पर मार्गदर्शन देने में असमर्थ रहा है। स्वदेशी मंच संघ परिवार का यह अंतर करने में असफल हो गया, कि क्या शामिल किया जाए और क्या निकाला जाए जिन मुद्दों पर भारतीय जनता पार्टी का कोई स्थाई विचार नहीं है इस पर वैश्वीकरण ने बहुत प्रभावित किया है। संघ परिवार ने अपने आप को इतना विस्तृत कर लिया है, पिछले कुछ वर्षों से इसकी गतिविधियां इतनी व्यापक हो चुकी है कि एक सामान्य नागरिक के जीवन का बड़ा हिस्सा संघ परिवार के किसी न किसी घटक से

प्रभावित होने लगा है संघ परिवार ने ना सिर्फ राष्ट्रीय अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी प्रभावपूर्ण उपस्थिति प्राप्त कर ली है, जिससे वैश्विक पटल पर संघ परिवार एक बड़ी ताकत बनकर उभरा है। नाथ संप्रदाय की सिद्ध पीठ, एकमात्र हिंदू राष्ट्र नेपाल से सीमावर्ती स्थल होने के कारण ,तराई का इलाका बहुसंख्यक हिंदू जनसंख्या,पीठ के महंत की राजनीति में सक्रिय रुचि के कारण गोरखपुर हिंदुत्व की राजनीति के लिए प्राचीन काल से ही उर्वर रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस स्थल के महत्व को देखते हुए 1939 में नानाजी देशमुख जैसे राष्ट्रवादी स्वयंसेवक को गोरखपुर में संघके प्रचार हेतु भेजा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा स्थापित पूरे भारत में प्रथम सरस्वती शिशु मंदिर 1952 में गोरखपुर में ही स्थापित हुआ जिसका उद्घाटन स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेई जी ने किया था। 1932 में स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षण परिषद के अंतर्गत संचालित शैक्षणिक और चिकित्सा संस्थान हिंदुत्व की हमेशा से ही जीवंत रखते हैं। 1949 में बाबरी मस्जिद मुद्दे को तत्कालीन महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज काफी प्रमुखता से उठाया था अयोध्या आंदोलन के बाद तत्कालीन महंत अवैध नाथ जी महाराज ने राम मंदिर निर्माण समिति का अध्यक्ष के रूप में पदभार संभाला। हाल ही में 5 अगस्त 2020 को अयोध्या में श्री राम मंदिर निर्माण स्थल पर भूमि पूजन कार्यक्रम में गोरखपुर स्थित गोरक्ष पीठ की मिट्टी पूरे धार्मिक क्रियाकलाप के साथ अयोध्या जी में ले जाकर राम मंदिर भूमि पूजन कार्यक्रम में श्री राममंदिर निर्माण में समर्पित किया गया। गोरखपुर स्थित पीठ के सक्रिय जुड़ाव व जीवंतता का सिद्ध प्रमाण है। मकर संक्रांति के अवसर पर 1 माह तक चलने वाला मकर संक्रांति मेला किसने पड़ोसी राष्ट्र नेपाल पड़ोसी राज्य बिहार व नाथ संप्रदाय को में आस्था रखने वाली विशाल जनसमूह के लिए किसी भी कुंभ से कम महत्व नहीं रखता। इस वर्ष के प्रारंभ में ही 24 जनवरी 2020 से 27 जनवरी 2020 तक अखिल भारती कुटुंब प्रबोधन समिति अंतर्गत कार्यक्रम गोरखपुर में ही संपन्न हुआ किस मी राष्ट्रीय स्वयंसेवक प्रमुख श्री मोहन भागवत ने भी समारोह को संबोधित किया इस सम्मेलन में कुटुंब प्रबोधन और सामाजिक समरसता पर सबसे अधिक बल दिया गया सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले जी ने कुल 3 दिनों तक विभिन्न कार्यक्रमों का नेतृत्व किया। सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने गोरखपुर में ही 26 जनवरी 2020 को ध्वजारोहण किया राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए गोरखपुर के महत्व को इंगित करने के लिए पर्याप्त प्रमाण हैं। ग्राम विकास पर्यावरण संरक्षण सामाजिक समरसता और कुटुंब प्रबोधन पर गोरक्ष प्रांत और अवध प्रांत और काशी प्रांत तथा कानपुर प्रांत के पदाधिकारियों को गोरखपुर में ही विभिन्न कार्यक्रमों के प्रति जागरूक रहने पर सक्रिय रहने पर बल दिया गया ।

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य

गोरखपुर में उपस्थित हिंदुत्व राजनीति की पृष्ठभूमि की पहचान और हिंदुत्व राजनीति का गढ़ गोरखपुर का बनना , यहा पर उपस्थित संस्थानों की सक्रिय उपस्थिति , जिसका विस्तृत वर्णन अध्याय 4 में किया गया है । 1991 के राम जन्म भूमि आन्दोलन के बाद गोरखपुर में हिंदुत्व राजनीति के तत्व कैसे इसे अजेय बना दिये व हिन्दुत्व राजनीति ने क्षेत्र विशेष की विकास की आवश्यकता से किस प्रकार सामंजस्य बैठाया इस प्रश्न का भी समाधान अध्याय 4 गोरखपुर में हिन्दुत्व की राजनीति का उदय: एक एतिहासिक विश्लेषण व उपस्थित संस्थानों का योगदान में मिलता है ।, हिंदुत्ववादी संगठनो द्वारा चलाया जाने वाला कार्यक्रम वर्ष भर चलाना व हिन्दुत्व की राजनीति जाति को संगठित कर देती यह अध्याय 5हिन्दुत्व की राजनीति व उसका क्षेत्रीय मातदाता पर प्रभाव से इन प्रश्नों का समाधान मिल जाता है ।

शोध परिकल्पना का परीक्षण

- गोरखपुर में हिन्दुत्वकी राजनीति के लिए प्रबल विचारधारा परिलक्षित होती है।
- जनसंख्यिकीय संरचना हिन्दुत्वकी राजनीति के लिए पक्षधर है।
- महिला मतदाता, धार्मिक प्रभाव में जल्दी आ जाती है।

प्राचीन काल से ही नाथ संप्रदाय के सिद्ध पीठ पड़ोसी हिंदू राष्ट्र नेपाल से सीमावर्ती जिला होने के कारण विश्व प्रसिद्ध धार्मिक पुस्तक प्रकाशक गीता प्रेस की उपस्थिति नानाजी देशमुख जैसे राष्ट्रवादी संघ का गोरखपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रचारक बन कर आना इत्यादि गतिविधियां गोरखपुर को हिंदुत्व की राजनीति के लिए हमेशा से ही उर्वर रखती रही हैं ।

विचारधारा की परिकल्पना

गोरखपुर में सतही स्तर पर हिंदुत्ववादी संगठनों की उपस्थिति हिंदुत्व की राजनीति के लिए सहायक है। गोरखपुर में 1932 में स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षण परिषद, विभिन्न शैक्षणिक संस्थान और चिकित्सालय 1939 में राष्ट्र राष्ट्र संघ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में नाना जी देशमुख की का गोरखपुर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा 1952 में सरस्वती शिशु मंदिर की गोरखपुर में स्थापना जो की उस

समय पूरे भारतवर्ष में राष्ट्रीय स्वयंसेवक द्वारा स्थापित प्रथम सरस्वती शिशु मंदिर था संस्थागत रूप से हिंदुत्व की राजनीति के लिए गोरखपुर को कैसे अनुकूल बनाया इसका जीवंत प्रमाण है। 2002 में योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा स्थापित हिंदू नवयुवकों का संघ हिंदू युवा वाहिनी अपने को का ग्राम स्तर तक जाकर नागरिकों से अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियों द्वारा सीधा संपर्क रखता है इन सब संस्थागत हिंदुत्ववादी संगठनों की जीवंत उपस्थिति कारण उपस्थिति के कारण गोरखपुर में हिंदुत्वकी राजनीति हेतु संस्थाएं उपस्थित है।

विचारधारा की परिकल्पनाराष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जन संघ और आगे चलकर भारतीय जनता पार्टी पुनः सरकार बनाते हुये अपनी राजनीतिक वैधानिकता प्राप्त करते हुए, अपनी नीतियों को संरक्षित करने की भूमिका में आ चुकी है।

जनसांख्यिकीय परिकल्पना

गोरखपुर में जनसांख्यिकीय संरचना हिंदुत्व की राजनीति की पक्षधर है,मतदाता, विशेष कर महिला मतदाता धार्मिक प्रभाव में जल्दी आ जाती हैं। जनसांख्यिकी गोरखपुर में हिंदू धर्मावलंबियों की संख्या 90% होने के कारण हिंदू धर्म के मानने वालों की प्रधानता है हिंदू राष्ट्र नेपाल की जनता व राज परिवार में भी इस नगर के प्रति गहरी आस्था है । एक सामान्य हिंदू परिवार में महिलाएं अधिक धार्मिक होती हैं इस तरह महिला मतदाता के रूप में धार्मिक प्रभाव में जल्दी आ जाती हैं ।" महिला, परिवार और राष्ट्र के लिए प्रेरित करने वाली एक महत्वपूर्ण बल है, इसलिए यदि महिला बल जागरूक न हुआ तो समाज प्रगति नहीं कर सकता -लक्ष्मीबाई केलकर(राष्ट्र सेविका समिति संस्थापक) इसी कथन को ध्यान में रखकर गोरक्ष पीठ ने महिलाओं की धार्मिक भावनाओं को समझते हुए क्षेत्र की महिलाओं का एक पृथक संघ बनाया जो पारिवारिक स्तर पर पीठ की धार्मिक सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों से सीधा जुड़ाव रखता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सहायक वाहिनी जैसी दुर्गा वाहिनी सेवा भारती विद्या भारती की तरह महिलाओं का तंत्र अपने परिवार में धार्मिक रूप से भावनात्मक होने के कारण पारिवारिक का स्तर पर पूरे परिवार को हिंदुत्व की तरफ उन्मुख करती हैं। इनकी जीवंत उपस्थिति चुनाव के समय पूरे परिवार को धार्मिक रूप से बाँध देती है। इसका जीवंत प्रमाण गोरखपुर नगर निगम के चुनाव में श्रीमती अंजू चौधरी जो वर्तमान में राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष भी हैं और डॉक्टर सत्या पांडे भारी मत से विजयश्री हासिल कर महापौर का पद को सुशोभित कर

चुकी हैं। इस तरह हम देखते हैं कि मेरी तीनों ही शोध परिकल्पना , गोरखपुर की भूमि में सिद्ध हो रही हैं।इस प्रकार हम देखते हैं कि कुल मिलाकर मतदातावों का दृष्टिकोण यह सुझाव देता है कि हिंदुत्व की विचारधारा और इसकी संस्थाए नगर क्षेत्र में रहने वाले मतदातावों पर महत्वपूर्ण प्रभाव रखते हैं। यद्यपि हिंदुत्ववादी संस्थाए ग्रामीण क्षेत्र के मतदातावों के भी जीवन के अभिन्न अंग बन गए हैं। जो कि अध्ययन से स्पष्ट रूप से देखने में आता है। साँस्कृतिक और धार्मिक संस्थाए मतदातावों का सामाजिकरण और गौरवपूर्ण और महान हिंदुत्ववादी परंपरा की ओर उन्मुखीकरण करती हैं। मुस्लिम धर्म के मतावलम्बी भी विकास के योज़ना से प्रभावित होकर हिंदुत्ववादी विचारधारा की ओर सकारात्मक रूप से देखते हुए विकल्प रूप में अपनाने लगे हैं। इस तरह यह परिकल्पना स्पष्ट रूप से छिब्बर और वर्मा के सिद्धांत की ओर जाती दिख रही है। इनके अनुसार विचारधारा और पहचान की राजनीति पितृत्व राजनीति की तुलना में आम जन समूह की दृष्टि से महत्वपूर्ण राजनीतिक आकार ले लिया है।